कर्मसाहित्ये निष्णाताः प्रेरका मार्गदर्शकाः संशोधकाश्च
सिद्धान्तमहोदधय आचार्यभगवन्तः (ग्रन्थ ४५)

श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वराः

आचार्यविजयवीरशेखरसूरिरचितं

सत्ताविहाणं

तत्र

स्वोपज्ञ-हेमन्तप्रभाचूर्णि-समलङ्कृता

उत्तरपयडिसत्ता

पूर्वार्धः

परिशिष्टत्रिकयुतः

प्रकाशिका :-भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन-समिति, पिंडवाडा

॥ श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री आत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-रामचन्द्र-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः

भारतीय प्राच्य तत्त्व प्रकाशन समिति पिंडवाडा संचालितायां

आचार्यदेव श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरकर्मसाहित्यजैनग्रन्थमालायाः

पञ्चचत्वारिंशो (४५) ग्रन्थः

कर्मसाहित्यनिष्णाताः प्रेरका मार्गदर्शकाः संशोधकाश्च

सिद्धान्तमहोदधय आचार्यभगवन्तः

श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वराः

आचार्यविजयवीरशेखरसूरिरचितं

सत्ताविहाणं

तत्र

स्वोपज्ञ-हेमन्तप्रभाचूर्णिसमलङ्कृता

उत्तरपयडिसत्ता

परिशिष्टत्रिकयुतः

पूर्वार्धः

प्रकाशिका-भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन-समिति, पिण्डवाडा

प्रथम आवृत्तिः-
प्रति ५००

राजसंस्करण- १५) रु०

वीर संवत् २५१७
विक्रम संवत् २०४७

* प्राप्तिस्थान *

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति
C/o रमणलाल लालचंद शाह
१३५/१३७ झवेरी बाजार, बम्बई २

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति
C/o शा. समरथमल रायचंदजी
पिंडवाड़ा (राज०)
स्टे. सिरोही रोड (W. R.)

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति
शा. रमणलाल वजेचन्द,
C/o दिलीपकुमार रमणलाल
मस्कती मार्केट,
अहमदाबाद २.

•

मुद्रक—
ज्ञानोदय प्रिंटिंग प्रेस, पिंडवाडा
स्टे.-सिरोहीरोड (W. R.)

मूलग्रन्थकृत् चूर्णिग्रन्थकृत्सम्पादकश्च

卐

प्रवचनकौशल्याधार-सिद्धान्तमहोदधि-सुविशालगच्छाधिपति-
परमशासनप्रभावक-कर्मसाहित्यनिष्णात-परमपूज्य-स्वर्गता-
चार्यदेवेशश्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरविनीताऽन्तेवासि-
निःस्पृहशिरोमणि-गीतार्थमूर्धन्य-परमपूज्याचार्य-
देव-श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वर-विनेय-
रत्नाचार्यश्रीविजयललितशेखर-
सूरीश्वर-शिष्यरत्नाचार्यश्री
विजयराजशेखरसूरीश्वर-
शिष्यः

आचार्यश्रीविजय-
वीरशेखरसूरिः

First Edition copies 500 | DELUXE EDITION RS. 25 | A.D. 1991

AVAILABLE FROM

1. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti,
C/o. Shah Ramanlal Lalchand,
135/137, Zaveri Bazzar,
BOMBAY - 400 002
(INDIA)

2. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti
C/o. Shah Samarathmal Raychandji,
PINDWARA 307022 (Rajasthan)
St. Sirohi Road, (W.R.)
(INDIA)

3. Bharatiya Prachya Tattva Prakashana Samiti
Shah Ramanlal Vajechand,
C/o Dilipkumar Ramanlal,
Maskati Market,
AHMEDABAD-380002
(INDIA)

Printed by :-
Gyanodaya Printing Press
PINDWARA. 307022 (Raj.)
St. Sirohi Road, (W.R.)
(INDIA)

सकलागम रहस्यवेदि सूरिपुरन्दर
बहुश्रुत गीतार्थ — परज्योतिर्विद् परमगुरूदेव

परम पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद्
विजय दान सूरीश्वरजी महाराजा

Acharyadeva-Shrimad-Vijaya-Premasurishwarji
Karma-Sahitya Granthmala

GRANTH NO. 45

SATTA VIHANAM

UTTARA PAYADI SATTA

Along with **HEMANAT PRABHA** Choorni

WITH THREE APPENDICES

Part I

By

ACHARYA SHRI

VIJAYA VEERSHEKHAR SURI MAHARAJA

Inspired and Guided by

His Holiness Acharya Shrimad Vijaya

PREMASURISHWARJI MAHARAJA

the leading authority of the day
on Karma Philosophy.

Published by

**Bharatiya Prachya Tattva
Prakashana Samiti Pindwara** (INDIA)

❀ प्रकाशकीय निवेदन ❀

हमें यह निवेदन करते हुए अपरिमित हर्ष की अनुभूति हो रही है कि सन् १९६९ में अहमदाबाद में हमारी भारतीय प्राच्य-तत्त्व प्रकाशन समिति द्वारा सर्व प्रथम तत्प्रकाशित कर्म-साहित्य के आद्य दो ग्रन्थरत्नों का विशाल कुंकुमपत्रिका, अनेकविध पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं आदि के द्वारा अत्यन्त विराट्‌काय एवं भव्य समारोह में विमोचन किया गया था। उस अवसर पर दोनों ग्रन्थरत्नों को गजराज पर विराजमान कर, विराट मानव समुदाय के साथ, अनेकानेक साजों से अलंकृत बडा भारी जुलूस निकाला गया था। सिद्धराज जयसिंह ने सिद्धहेम व्याकरण का भव्य जुलूस निकाला था, उसके बाद सम्भवतः यही सर्वप्रथम साहित्य प्रकाशन का ऐसा भव्य जुलूस होना चाहिये। इन प्रकाशनों के उपलक्ष में प्रकाश हाई स्कूल में विशाल पैमाने पर प्राचीन तथा अर्वाचीन जैन साहित्य की विविध सामग्री की पृथक्-पृथक् विषयान्तर्गत एक भव्य एवं विराट् प्रदर्शनिका भी आयोजित की गयी थी एवं प्रबल जनाग्रह के कारण प्रदर्शनिका की अवधि दो तीन दिनों के लिए बढानी पडी थी। जुलूस के उपरान्त प्रकाश हाई स्कूल के विशाल प्रांगण में सुशोभित मंडप में चतुर्विध संघ की प्रचुर उपस्थिति में नानाविध कार्यक्रमों के साथ ग्रन्थरत्नों का विमोचन किया गया, जिससे सामान्य जनता एवं बुद्धिजीवी

लोग प्रचुररूपेण जैन साहित्य की ओर आकृष्ट हुए, जैन-साहित्य के दर्शन से भी लोग प्रभावित हुए तथा उक्त समिति के सदस्यों में भी अपूर्व उत्साह, ओज व उमंग का संचरण हुआ ।

अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप स्वर्गीय परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयप्रेमसूरीश्वर महाराज साहब** से प्रेरित कर्मसाहित्य के कइ ग्रन्थ आज तक तैयार हो गये हैं तथा और भी तैयार हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त अन्य भी अर्वाचीन एवं प्राचीन छोटे बडे लगभग २५ से ३० ग्रन्थ प्रकाशित हुए है। **बन्धविधान** महाशास्त्र के सभी भाग मुद्रित होने से सम्पूर्ण **बन्धविधान** सटीक मुद्रित हो चुका है एवं आज आपके कर कमलों में '**सत्ताविधान**' महाग्रन्थ के "**हेमन्तप्रभाचूर्णिसमलङ्कृता उत्तरपयडिसत्ता**" 'पूर्वार्ध' का मुद्रण समर्पित कर रहे हैं।

इसके साथ ही और भी पांच ग्रन्थ का भी मुद्रण हम आपके करकमलों में प्रस्तुत कर रहे है।

तीन-चार (३/४) वर्ष पूर्व में भी हमारी संस्था द्वारा प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजयवीरशेखरसूरीश्वरजी म. सा. के द्वारा रचित (२२) बाइश पुस्तकों का विमोचन बडे समारोह के साथ उन्ही की निश्रा में पिंडवाडा में करवाया था।

इससे पूर्व भी हमारी संस्था द्वारा **'प्राचीनाः चत्वारः कर्मग्रन्थाः' 'सप्ततिका नामनो छट्ठो कर्मग्रन्थ' '१ थी ५ कर्मग्रन्थ'** आदि छोटे बडे ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं।

आज तक इस समिति द्वारा प्रकाशित किये गये समस्त ग्रन्थरत्नों की आधार शिला दिवंगत परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय **प्रेमसूरीश्वर महाराज साहब** है। जिनकी सतत सत्प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रस्तुत साहित्य का उद्धार करने की अदम्य उत्कंठा और कालोचित अथक परिश्रम से ही प्रस्तुत ग्रन्थरत्नों का जन्म हुआ है तथा इन्हीं महापुरुष के शुभाशीर्वाद से हम ग्रन्थरत्नों के प्रकाशन के महत्कार्य में उत्तरोत्तर साफल्य की ओर पदार्पण कर रहे हैं। इन्हीं महात्मा ने हमारी संस्था को कर्मसाहित्य के इन ग्रन्थरत्नों के प्रकाशन का लाभ देकर अनुगृहीत किया। अतः हम इनके ऋणी हैं और इस ऋण से कभी भी उऋण नहीं हो सकते। अतः ऐसे परमोपकारी महाविभूति आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयप्रेम-सूरीश्वर** महाराज साहब का हम नतमस्तक कोटि-कोटि वन्दन करते हुए, इनके प्रति अवर्ण्य आभार प्रदर्शित कर रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के प्रणेता परम पूज्य आचार्य श्रीमद्विजय **वीरशेखरसूरीश्वर महाराज साहब** का हम सवन्दन आभार मानते हैं। आपके अथक, अविरल, एवं सतत

परिश्रम के फलस्वरूप ही हम इस ग्रन्थरत्न को पाठकों के करकमलों में समर्पित करने में सक्षम रहे हैं।

मुद्रण करने में संस्था के निजी ज्ञानोदय प्रिन्टिंग प्रेस के मेनेजर श्रीयुत शंकरदास एवं उनके अन्य कर्मचारीगण भी धन्यवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त जिस किसी ने भी जिस किसी भी तरह से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ग्रन्थ-प्रकाशन में सहायता की हो, उन सभी महानुभावों के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करते है।

द्रव्यसहायकः-श्रीवलसाड जैन श्वेताम्बर महावीरस्वामी भगवान पेढोने श्रुतभक्तिसे अनुप्रेरित एवं अनुप्राणित होकर इस ग्रन्थरत्न के मुद्रण में अपनी ज्ञान द्रव्य-राशि के सम्यक् सहयोग से यथोचित योगदान किया है, अतः हम इनके प्रति ऋणी एवं आभारी हैं।

नजदीक भविष्य में और प्रकाशन की आशा में

भवदीय—

(i) पिंडवाडा
स्टे. सिरोहीरोड (राजस्थान)
(ii) १३५/१३७ जोहरी बाजार
बम्बई-२

शा. समरथमल रायचन्दजी (मंत्री)
शा. लालचन्द छगनलालजी (मंत्री)

भारतीय-प्राच्य तत्त्व प्रकाशन समिति

—: अर्घ्याञ्जलि :—

जिन्होंने भवरूपी कूपसे संयमरूपी रज्जु द्वारा बाहर निकाला। और प्रव्रज्यादिन से लेकर बारह साल तक निजी निश्रा में रख कर ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा के साथ साथ ही संस्कृत-प्राकृतव्याकरण न्याय दर्शन तर्क काव्य कोश छन्द अलङ्कार प्रकरण आगम छेदादि विविध विषयक शास्त्रों के परिशीलन द्वारा सुधारस पीलाया।

जिन्होंकी सतत सत्प्रेरणा और कृपादृष्टिसे ही महागंभीर और अतिभगीरथ ऐसे कर्मसाहित्य के नव निर्माण में और सम्पादन में तथा प्राचीन कर्मसाहित्य के सम्पादन आदि में आज लगातार ३० साल तक प्रयत्नशील रहा हूं।

उन कर्मसाहित्य के सूत्रधार सिद्धान्तमहोदधि सच्चारित्रचूडामणि परमशासन प्रभावक सुविशालगच्छाधिपति परमाराध्यपाद स्वर्गीय-

आचार्य भगवंत—

श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा

की परम पवित्र स्मृति में

भवदीय कृपेककाङ्क्षी

आचार्यविजयवीरशेखरसूरि

कर्म साहित्य ग्रंथोना प्रेरक, मार्गदर्शक अने संशोधक
सिध्धान्त महोदधि सुविशाल गच्छाधिपति
कर्मशास्त्र रहस्यवेदी शासन शिरछत्र

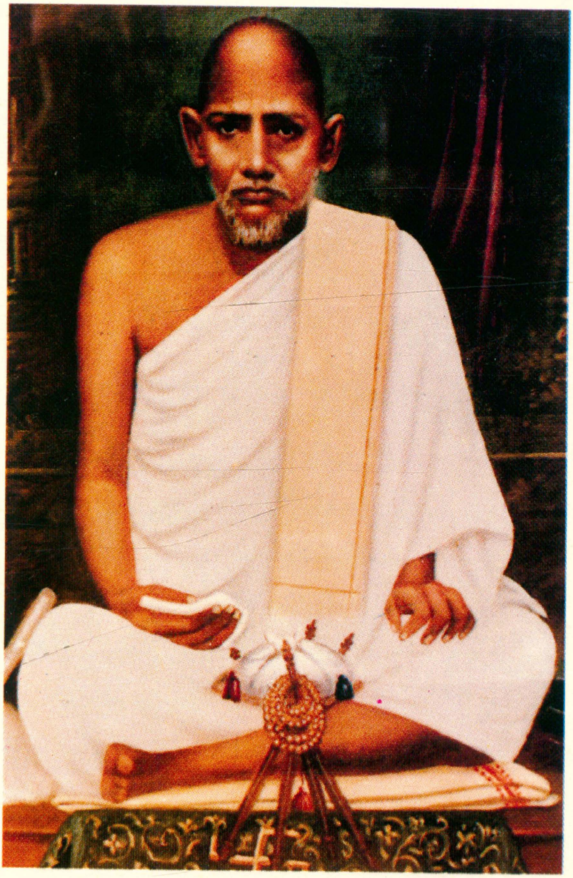

स्व. परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद्
विजय प्रेम सूरीश्वरजी महाराजा

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
१	१२	०चूणिः-	०चूर्णिः-
१	१६	०इ गाहा	०इगाहा
२	१३	०रम०	०रस०
२	१४	०हंमगं	०हेसगं
२	१६	०द्वारम्	०द्वारम्
४	१	०विह ण	०विहाणे
४	८	(गीतिः)	
५	८	दुदसण-	दुदंसण-
५	१०	तिअ उं/(गीतिः)	तिआउं/
५	१७	(गी त)	(गीतिः)
५	२१	सत्त अ/०ग हाहि/संत यं	सत्ताअ/०गाहाहिं/संतपयं
६	३	०य ओ	०याओ
६	५	०इ रि०	०इपरि०
६	७	-विगलि०	-विगलि०
६	११	-वतर-	वंतर-
६	१३	०बधीण	०बंधीण
६	२४	०सभव	०संभवं
६	२५	०बधि०	०बंधि०
६	२८	खोव०/खण०	खव०/खोण०
७	१	०लङ्कु०	०लङ्कृ०
८	१२	-पणिदि०	-पणिदि०
८	१६	०स णा०	०स-णा०
९	३	०गाव०	०गावि०
९	१२	तस्थ	तत्थ
९	१७	-मास-	-मीस-
९	१८	०ठ ण-	ठाण-

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
९	२१	णेया	णेयो
९	२२	०भेदंसु	०भेदेसु
१०	२१	०बघाण	०बंधीण
११	१२	विस०	विसं०
११	१४	०स य०	०सपय०
११	१५	आ=थ	अत्थि
११	१६	ओह गु०	आहागु०
११	१७	०इत्ता	०इत्तं
११	१९	०द्वारम	०द्वारम्
११	२१	गोतिः)	(गोतिः)
११	२४	अण'इ०	अणाइ०
१३	१०	मासस्स	मोसस्स
१४	१७	सेस।ण सगुरुकायठिई	सययोऽण्णअधुवसत्ताणं
१५	८	सेमा०/०ट्ठ'ठई, ०0'	सेमा०/०ट्ठठिई,/०णं
१५	१४	सुर उ०	सुराउ०
१५	१६	कम्म णा०	कम्माणा०
१७	२	०ऽत्थि	०ऽत्थि
१७	७	०त्तात्तो	०त्तांतो
१७	१०	समयो	समयो,
१७	१८	रवणो	खणो
१९	३	पण अ०	पण-अ०
१९	८	ठिई	ठिई,
१९	१५	गुरू०	गुरु०
२०	१	का।ल—	[काल—
२०	२	लहू,	, लहू

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
२०	१६	०णउण	०ण उण
२१	३	०र स०	०र-स०
२१	४	०त्तत्तो	०त्तंतो
२१	२१	(गातिः	(गीतिः)
२२	१५	०यात०	०यति०
२३	१	०मङ्लकु०	०मलङ्कु०
२३	७	०ट्ठिई	०ठिई
२४	६	गीतिः	(गीतिः)
२५	६	०ट्ठठि०	०ट्ठकायठि०
२५	१४	०हाका०	०हा का०
२५	२३	०भग०	०भंग०
२६	१६	०हिय-मि०	०हियमि०
२७	१८	०श्री म०	०श्री-म०
२७	२२	०ल०ारा०	०लपरा०
२८	७	सख-भा०	संखभा०
२८	६	मणय०	मणुय०
२८	१२	०संभव	०संभवं
२८	१८	बध०	बंध०
२८	२६	खाण०	खीण०
२९	५	सिद्ध०	सिद्ध०
२९	१२	०गाआणं	०गोआणं
२९	१९	०उजि०	०उ—जि०
२९	२२०	बांधि०	०बांधि०
२९	२३	०णा -ण/०सत०	०णामाण/०संत०
२९	२६	जहण्णा	जहण्णो
३०	४	लद्ध	लद्धे

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
३०	५	णर उ०	णराउ०
३०	८	ंघाद	ंघादं
३०	११	णवर	णवरं
३०	१४	त/ऽणता०	तं/ऽणंता०
३१	६	मग०	०भंग०
३१	१६	अण ण	अणाण
३१	१७	०ठिंई	०ठिई
३१	१९	०हूत्तं	०हुत्तं
३१	२३	(सकोर्णम्)	(संकीर्णम्)
३३	८	०उग ण	०उगाण
३३	१४	०गे—ल०	०गे ल०
३४	८	उ	उ,
३४	९	ऽण्णसि	ऽण्णेसि
३५	१	०कुत त्त०	०कुतोत्त०
३५	९	४४३॥	॥४४३॥
३५	११	।४४४॥	॥४४४॥
३६	१८	०णदोअसत्ता का०	०णदो असत्ताका०
३६	२०	मवदि	मवदि,
३७	४	०ग भ०	०ग—भ०
३७	६	०वग्र०/-चक्ख०/०छ क-	०वेग्र०/-चक्खु०/०छक्क-
३७	८	-पणि०/०त्त चि०	-पणि०/०त्तपंचि०
३७	९	पचसु/अणतानुब०	पंचसु/अणंतानुबं.
३७	१२	पणि०	पणि.
३७	१३	चक्खु स०	चक्खु-स०
३७	१४	आह रि०	आहारि०

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
३७	१५	०सत्ततरं	०सत्तंतरं
३७	१६	०पणि०	-पणि०
३७	१६/२२	०बधि०	०बंधि०
३७	२१	०पंचि०	०पंचि०
३७	२५	अणतानुबधि-	अणंताणुबंधि-
३७	२६	-मिस्स०	-मिस्स०
३८	३	ससारे	संसारे
३८	१०	सम्मदिट्ठि गु०	सम्मदिट्ठिमणु०
३८	११	०गराव०	०गरोव०
३८	१२	०ऽऽहा ग-	०ऽऽहारग-
३८	१३	प थुयं-	पत्थुयं-
३९	८	०गाणि०	०गणि०
३९	२२	०गादाण०	०गोदाण
४०	४	०पचि०	०पंचि०
४०	८	०बांधि०	०बधि०
४०	९	०सत्ततरं	०सत्तंतरं
४०	१३	०पंचि० -८ त्य०	०पंचि०/-पत्य०
४०	१६	अते	अंते
४०	२१	०पंचि०	०पंचि०
४१	८	अजागि०	अजोगि०
४१	९	०र ग०	०राग०
४१	११	०द म०/ऽऽहारि	०द-म०/ऽऽहारि-
४१	१५	—धिद०	—धिद०
४१	१७	०दा ऽ०/०बधि०	०दा-ऽ०/०बंधि०
४१	२२	०पचगे	०पंचगे

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
४१	२५	असः	असं०
४१	२६	०बधस्स	बंधस्स
४२	१	षण्ठं	षष्ठं
४२	१२	०स ते।दंम.	०संते दंस०
४३	१	०तात्त०	०तोत्त०
४३	२	०गा ऽऽ०	०गा—ऽऽ०
४३	३/१८	सते	संते
४३	५	०भाऽणो	०मा—ऽणो
४३	१३	०ग्दु ाणिदितस ा०	०रदुर्पाणिदितसप०
४३	१५	०स ण्ण०	०सण्णि०
४४	६	सते	संते
४४	८	०तिार०	०तिरि०
४४	१०	०हाग्दु०	०हारदु०
४४	१२	०मंते,	०संते,
४४	१४	मिआ	सिआ
४५	७	॥ ८८॥	॥४८८॥
४५	१३	गाग्रस्स	गोग्रस्स
४५	१४	ग्राघoव	ग्रोघoव
४५	१५	०मीम०	०मीस०
४६	५	सेमिग-	सेसिग-
४६	१६	०मंते	०संते
४७	४	०संतं	०संते
४७	६	णयमा	णियमा
४७	७	०संनम्मि	०संतम्मि

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
४७	८	०ण ण०	०णाण०
४७	१२	-कस य०	-कसाय०
४८	४	०ग सं०	०ग-सं०
४८	११	०ग स०	०ग-स०
४८	१३	०ओ ऽ०	०ओ—ऽ०
५०	११	ऽण्णंसि/।	ऽण्णेसि/॥
५१	६	०मत्ताणं	०सत्ताणं
५१	१५	। ५५० ।	॥५५०॥
५२	८	(गीतिः)	
५३	६	ण म०	णाम०
५३	१२	०णगऊणं	०णराऊणं
५५	१	०चर्णि०	०चूर्णि०
५५	१५	॥५६०॥	॥५६०॥
५७	८	णवरि	णवरि,
५६	२	मे ाण	सेसाणं
६०	८	–०बीअ व०	०बीआव०
६१	७	०यर्गवि०	०यरवि०
६१	१२	वा ऽण्णाण	वा—ऽण्णाण
६२	५	णिद्द ण	णिद्दाण
६२	१७	सिआ	सिआ,
६३	१	०ज्ञ हे०	०ज्ञ—हे०
६३	६	०ण ाणं	०णाणं
६३	१०	०तिगि०	०तिरि०
६३	१५	बिण	विण
६४	७	। ६७६ ।	॥६७६॥

पृष्ठम्	पङ्क्ति:	अशुद्धि:	शुद्धि:
६५	१२	०सते	०संते
६७	१३	०ग ति०	०ग—ति०
६७	१४	०ण्चिं०	०पंचिं०
७२	२१	०च्चा संते,	०च्चासंते,
७३	१	०लङ्क्र०	०लङ्क्र०
७४	१	०हाणं	०हाणे
७४	५	०सते	०संते
७४	७	०उच्च ण	०उच्चाण
७६	७	०दुग ण	०दुगाण
७६	१३	०विजयश्री०	०श्रीविजय०
१	६-२१	०सते	०संते
१	६-१०	०त्तता	०त्तंता
१	१४	०हिय	०हियं
१	२२	०तिरि व	०तिरिव्व
२	६/२५	०सते	०संते
२	७	०उ ं०	०उस०
२	१८	दसणतिगा	दंसणतिगा
२	२२/२३	एव	एवं
४	१	०ष्टे	०ष्टम्
४	७	चउस०	चउसं०
४	१५	०सताम्म	०संतम्मि
५	१	०द्याशा	०द्यांशा:
५	४	०सते	०संते

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
७	८	०ईण,	०ईणं,
७	२७	नपुसं०/०ट्ठाण,	नपुंस०/०ट्ठाणं,
८	१	०ज्ञिष्टम् /०शा	०शिष्टम् /०शाः
८	७	जहण्ण	जहण्णं,
८	१३	०पच०	०पंच०
८	१४।१५	०सखिय०	०संखिय०
८	१६	०साए	०साए,
८	२३	०हुत्त,	०हुत्तं,
८	२४	०लाण,।णयो,	०लाणं,।णेयो,
८	२६	०हुत्त	०हुत्तं
९	१	०थ द्यांशा:	०थाद्यांशा:
९	२	०द्यांशा	०द्यांशा:
९	६।२६	०सते	०संते
१०	१	०द्याँशा:	०द्यांशा:
१०	६	ब	व
१०	२०	०सते	०संते
१०	२७	बिउवे०	विउवे०
११	३	०एसू	०एसु
१२	१	०ष्टम	०ष्टम्
१२	५।१६	०सते	०सते
१२	६	०गाण,	०गाणं,
१२	१७	अत०	अंत०
१२	२६	०वा ऽत्थि	०वा-ऽत्थि
१३	५	पचसु	पंचसु

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
१३	९।११	०त्ततो	०त्तंतो
१३	१६	०सते	०संते
१३	१८	असख०	असंख०
१३	२४	०सतम्मि	संतम्मि
१४	२	शंङ्खे०	शङ्खे०
१४	५	०त्वं	०त्वम्
१४	११	०लंते	०लअंतो
१५	१	द्वितोय	द्वितीयं
१५	८	यतो	यंतो
१५	२०	मोसस०	मीससं०
१७	१	०त्वम]द्वितीय	०त्वम्]द्वितीयं
१७	२	पण णवई	पण-णवई
१७	६	०स ई,	०सीई,
१७	१६	०वेउ णा	वेऊणा
१८	१०	मिच्छ पज्ज०	मिच्छापज्ज०
१९	१३	छ सय०/०इ तग०	छसयं/०इतिग०
२०	३	०र दु०	०र-दु०
२०	७	अण	अणं
२१/२६	१	०ष्टम	०ष्टम्
२४	१५	०यतो	०यंतो
२४	२१	-बधण०	-बंधण०
२५	१	तृतोयं	तृतोयं

विषयानुक्रमणिका

उत्तरपयडिसत्ता हेमन्तप्रभाचूर्णिसमलङ्कृता

गाथाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१९०	मङ्गलाचरणम्	१
१९१-१९२	पञ्चाधिकाराः	२
१९३-१९४	प्रथमाधिकारद्वाराणि	२
१९५-२२८	प्रथमं सत्पदद्वारम्	२-७
२२९-२५२	द्वितीयं स्वामित्वद्वारम्	७-९
२५३-२६०	तृतीयं साद्यादिद्वारम्	९-११
२६१-४०२	चतुर्थं कालद्वारम्	११-३१
४०३-४५५	पञ्चममन्तद्वारम्	३१-४१
४५६ ७९७	षष्ठं सन्निकर्षद्वारम्	४२-७६

परिशिष्टानि	१-२८
प्रथमे परिशिष्टे मूलगाथाद्यांशाः	१-१३
द्वितीये परिशिष्टे उदयस्वामित्वम्	१४-२३
तृतीये परिशिष्टे सत्तास्वामित्वम्	२४-२८

❀समिति का ट्रस्टी मंडल❀

शा. खूबचन्द अचलदासजी	शेठ रमणलाल वजेचन्दजी
शा. समरथमल रायचन्दजी मंत्री	शा. हिम्मतलाल रुगनाथजी
शा. लालचन्द छगनलालजी मंत्री	शा. जयचन्द भबुतमलजी

अर्घ्याञ्जली :-

परमशासनप्रभावक सुविशालगच्छाधिपति
व्याख्यानवाचस्पति पूज्यपाद स्वर्गीय
आचार्य भगवंत श्रीमद्

विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी
महाराजा

की
पवित्र स्मृति में

-:: 卐 ::-

भवदीय गुणगणानुरागी
आचार्यविजयवीरशेखरसूरि

Param Shasan
Prabhavak Tapogachchhadhipati
Vyakhyan-Vachaspati Acharydev

Shreemad Vijay Ramchandra Surishwaraji Maharaja

अथ

आचार्यश्रीविजयवीरशेखरसूरिरचितं

सत्ताविहाणं

(सत्ताविधानं)

तत्र

स्वोपज्ञ - हेमन्तप्रभाचूर्णिसमलङ्कृता

उत्तरपयडिसत्ता

(उत्तरप्रकृतिसत्ता)

परिशिष्टत्रिकयुतः

पूर्वार्धः

अध्याञ्जली :-

गीतार्थमूर्धन्य निःस्पृहशिरोमणि

गच्छहितचिन्तक परमपूज्य

स्वार्गीय

आचार्य भगवंत श्रीमद्

विजयहीरसूरीश्वरजी महाराजा

की

पवित्र स्मृति में

-:: 卐 ::-

भवदीय गुणानुरागी

आचार्यविजयवीरशेखरसूरि

નિ:સ્પૃહ શિરોમણિ ગીતાર્થ મૂર્ધન્ય

ગચ્છહિત ચિંતક

સ્વ: પરમ પૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્

વિજય હીર સૂરીશ્વરજી મહારાજ

।। श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।।

।।श्री आत्म-कमल-वीर-दान-प्रेम-रामचन्द्र-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ।

मुनिश्रीवीरशेखरविजयरचितं

सत्ताविहाणं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

स्वोपज्ञ-

हेमन्तप्रभाचूर्णिसमलङ्कृता

उत्तरपयडिसत्ता

(उत्तरप्रकृतिसत्ता)

पूर्वार्धः

हेमन्तप्रभाचूर्णिः-अह सिरिवीरं णमिउं, चुण्णि हेमन्तपहमुवदिसिस्सं ।
सत्ताविहाणउत्तर-पयडीसत्ताअ सोवण्णं ॥१।

अह सचउरिविभूषण-सिरिवीरजिणेसरं पणमिऊणं ।
भणिमु गुरुकिवाअ सपर-हियत्थमुत्तरपयडिसत्तं ॥१६०॥

(हे.चू.) "अह" इच्चाइ गाहा मंगलाइचउगपडिवादिगा सुगमा, पुरवेण गयत्था ।।१६०।

।। अथ पञ्चाधिकाराः ।।

१ अह अहिगारा वोच्छदि-

णेया इहुत्तरपयडि-सत्ताए पयडि-ठाण-भूगारा ।
पयणिक्खेवो वड्ढी, पण अहिगारा जहाकमसो ॥१८१॥
तेसु पयडिआईसुं, अहिगारेसुं हवन्ति दाराणि ।
पणरस चउदस तेरस, तिण्णि य तेरस जहाकमसो ॥१९२॥

(हे.चू.) "णेया" त्ति गाहाजुगलं कंठमहिगारणाम-तद्दार-संखदरिसगं ॥१८१-१९२॥

॥ अथ प्रथमप्रकृत्यधिकारद्वाराणि ॥

इयाणिं पढमपयडिअहिगारदाराणि भणदि–

अह विण्णेयाणि पयडि-अहिगारम्मि पढमम्मि संतपयं ।
सामित्तसाइआई, कालंतरसण्णियाओ य ॥१८३॥
भंगविचयो उ भागो, परिमाणं खेत्तफोसणा कालो ।
अंतरभावप्पबहू, पणरसदाराणि जहकमसो ॥१८४॥

(हे.चू.) "अह" त्ति गाहादुगं पणरसदारणामणिद्देसगं पाठसिद्धं ॥१८३-१८४॥

॥ अथ प्रथमं सत्पदद्वारम् ।

संपदं संतपयदारं कहिज्जदि—

सत्ता-ऽसत्ता-ऽत्थि पयडि-अडवण्णाहियसयस्स ओघव्व ।
तिणरदुपणिंदितसपण–मणवयकाउरलविउवेसुं ॥१९५॥
कम्मतिवेअकसाय—चउगतिणाणतिअणाणअजएसुं ।
तिदरिसणछलेसाभवि–सम्मुवसमवेअगेसु तहा ॥१९६॥
मिच्छे सण्णिम्मि तहा, आहारियरेसु होइ सत्तेवं । (गीतिः)
संजम-समइअ-छेए-ऽवि परे विंति विण णिरयतिरियाऊ ॥१९७॥
णिरये पढमाइणिरय-तिगे सुराउं विणा जिणसुराऊ ।
तुरिआइतिणिरयेसु दु-आउजिणं विण चरमणिरये ॥१९८॥

तिरिये पणिंदियतिरिय-तिगे य सासाणमीसअमणेसुं ।
मत्ता सगवण्णाहिय-सयपयडीणऽत्थि विण तित्थं ॥१९९॥
अममत्तपणिंदितिरिय–मणुयपणिंदियतसेसु सव्वेसुं ।
एगिंदियविगलिंदिय— पुढवीसलिलवणकायेसुं ॥२००॥
जिणणिरयसुराऊ विण, पणवण्णाहियसयस्स पयडीणं ।
णिरयाउं विण देवे, अडज्जकप्पाइदेवेसुं ॥२०१॥
आणतपहुडीसु विण दु-आऊ एगे अवेअअकसाये ।
सुहमाइक्खायेसु वि, एवं इहरा विणा अणदुआऊ ॥२०२॥ (गीतिः)
भवणतिगम्मि विणा जिण-निरयाऊ सव्वतेउवाऊसुं ।
तित्थतिआऊ विण विण, णिरयसुराऊ उरलमीसे ॥२०३॥
विक्कियमीसे विण णर-तिरियाऊ अत्थि केवलदुगम्मि ।
सायअसायणराउग--णामणवइउच्चणीआणं ॥२०४॥
णिरयतिरिक्खाऊ विण, आहारदुगमणणाणपरिहारे ।
देसे ओघव्व भवे, अणणे बिंति विण णिरयाउं ॥२०५॥
मीसं सम्मं तित्थं, आहारगसत्तगं विणा अभवे ।
आइमकसायदंसण-तिगहीणा-ऽत्थि खइए सत्ता ॥२०६॥
णिरयपढमाइतिणिरय— सुरज्ज अडकप्पविउवमीसेसुं । (गीतिः)
अत्थि असत्ता-ऽऽउगदुग-दंसणआहारसत्तगजिणाणं ॥२०७॥
अणचउगसम्ममीसदु-आउगआहारसत्तगाणऽत्थि । (गीतिः)
तुरिआइणारगभवण-तिगे तमतमाअ उण विण णराउं ॥२०८॥
दंसणविउवाहारग—सत्तगणिरयणरसुरतिगुच्चाणं । (गीतिः)
तिरिये पणिंदियतिरिय-तिगे णवरि जोणिणीअ मिच्छूणा ॥२०९॥

असमत्तपणिंदितिरिय–सण्णिगविगलऽक्खपंचकायेसुं ।(गीतिः)
दंसणिरयसुरदुगणर–तिगविउव्वाहारसत्तगुच्चाणं ॥२१०॥
णवरि विणा सयलागणि-वाऊसु णराउगं अपज्जणरे ।
विगलण्णिगतीमाए, णरतिगउच्चूणमतिरियाऊणं॥२११॥(गीतिः)
णरआउगइपणिंदिय-सुहगादेयजसतसतिगुच्चूणा । (गीतिः)
तिणरविरईसु णिरय-ण्णाणतपहुडीसु विण तिरिक्खाउं ॥२१२॥
दुपणिंदितसभवीसु ति-तमसुभगादेयजसपणिंदूणा । (गीतिः)
असमत्तपणिंदितसे, विगलव्व परं सतिरियाऊ ॥२१३॥
अत्थि तिमणसच्चवयण-सुक्कासुं सयलघाइआऊणं ।
तेरसणामाण तहा, आहारगसत्तगजिणाणं ॥२१४॥
तेत्तीसघाइआउग-चउगजिणाहारसत्तगाण तहा ।
तेरसणामाणऽत्थि उ, दुमणवयतिणाणओहीसुं ॥२१५॥
सगचत्तघाइआउग –चउक्कदेवदुगतेरणामाणं ।
विउव्वाहारगसत्तग-तित्थाण हवेज्ज दुवयेसुं ॥२१६॥
हवए कायउरलदुग–कम्माहारेसु घाइआऊणं ।
जिणतेरणामणरसुर-दुगविउव्वाहारसत्तगुच्चाणं । २१७ । (गीतिः)
चउआउतित्थदंसण–आहारगसत्तगाण वेउव्वे ।
तेउपउमासु देसे, सम्मं विण वेअगे एवं ॥२१८॥
आहारदुगे णेया, दंसणसत्तगसुराउतित्थाणं ।
णपुमदुवेआण कमा, इत्थीपुरिसेसु वेएसुं ॥२१९॥
तीसु वि थीणद्धितिगति-दंसणबारसकसायआऊणं
जिणतेरणामणरसुर-दुगविउव्वाहारसत्तगुच्चाणं ॥२२०॥ (गीतिः)

गयवेए अकसाये, केवलजुगलम्मि सम्मत्ते ।
खइआणाहारेसुं, सप्पाउग्गाण मव्वेसिं ॥२२१॥ (उपगीतिः)
कोहाईसु पुमव्व स-हस्सछगपुमा परं तु माणतिगे ।(गीतिः)
इगदुतिसंजलणाणं, मणणाणम्मि अवहिव्व अतिआऊ ॥२२२।
अण्णाणदुगे मिच्छे, जिणविउव्वाहारसत्तगुच्चाणं । (गीतिः)
दंसणणिरयणरसुरदु-गाऊणोवसमगो अजिणसाऊ ।२२३।
विब्भंगम्मि दुदसण-आउजिणाहारसत्तगाणऽत्थि । (गीतिः)
दुमणव्वऽत्थि समइए, छेए अदुणिद्दलोहमणुयाऊ ॥२२४॥
विउव्वव्व तिअउं विण, परिहारे ममइअव्व विण सुहमे ।(गीतिः)
आउदुगं अहखाये, सप्पाउग्गाण तिणव्व ॥२२५॥
अजयासुहलेमासुं, तिरिव्व णवरि तिरियाउतित्थाणं ।(गीतिः)
अभवे चउआउणिरय-णरसुरदुगविउवसत्तगुच्चाणं ॥२२६॥
तेत्तीसघाइआउग-जिणविउवाहारसत्तगुच्चाणं ।
तेरसणामणरअमर-दुगाण णयणियरसण्णीसुं ॥२२७॥
अणतित्थाण उवसमे, मीसे अणसम्मगाणऽणाणऽण्णो ।
तहि दोसु सासणे य अ-सत्ता आहारसत्तगाऊणं ॥२२८। (गीतिः)

(हे.चू.) "सत्ता" इच्चाइचउतीसगाहा, तत्थ ओहओ देसूण-दुगाहाअ सव्वेसिमुत्तरपयडीण अडवण्णाहियसयपयडीण सत्ताअ असत्ताअ य संतपयं दरिसिदं । तहा मग्गणासु उत्तरपयडीण देसूणगाहाबारसगेण सत्ता अ बावीसग हाहि असत्ताअ संत यं णिरूविअं सामण्णओ मिच्छाइउवसंतंताणमण्णयरजीवाण पवेसे सव्वपयडीण सत्ता पाविज्जइ । केवलं तिरियणिरयाऊण अप्पमत्ताओ

उवरि सत्ता ण लहिज्जदि, तस्सत्ताकाण सेढोआरम्भाभावादु। मयंतरेण पुण तिरियाउस्स देसविरयाओ णिरयाउस्स य अविरयसम्मद्दिट्ठीओ गुणट्ठाणाओ उवरि सत्ता ण सिआ, तस्संतकम्मिगाण सव्वविरयाइ रिणामालाहादो। णिरयेसु सुराउस्स सत्तमणिरये णराउस्स वि, देवेसु णिरयाउस्स, आणयपहुडिसुरेसु तिरियाउस्स वि लद्धिअपज्जत्तभेएसु एगिंदिय-विगलिंदियभेएसु ओरालियमिस्सजोगे य णिरयसुराऊण विउव्वियमिस्सजोगे य णरतिरियाऊण बंधाभावेण तत्तस्संतकम्मिगाभावेण य सत्ताअ अभावो हवदि। बीअ-तइअगुणठाणे चउत्थाइणिरयेसु तिरिक्खेसु लद्धिअपज्जत्तेसु भवणवइ-वंतर-जोइससुरेसु असण्णीसु जिणणामसंतकम्मियाण अपवेसेण जिणणामबंधाभावेण य जिणणामस्स सत्ता ण हुवदि। जे आयरिआ उवसमसेढोआरंभे अणंताणुबंधीण उवसमणामंगीकरंति तेसिमहिपाएण अवेआइमग्गणाचउगे ऽणंताणुबंधिसत्ता लहदे। अण्णहा-ऽवस्सं विसंजोजणाअ सत्ता ण होदि। केवलदुगे सजोगिकेवलिणो आसिज्ज जहुत्तपयडीण सत्ता लहदि। भव्वपाउग्गदहपयडी वज्जिअ सेसपयडीण सत्ता अभवे हवे।

सिद्धाण पवेसे सदि सव्वपयडीणमसत्ता भवदि। मग्गणासु उण मग्गणापाउग्गाण सव्वपयडीण असत्ता बोद्धव्वा। जदो जाण पयडीण सत्ता अत्थि ताण चिअ पयडीण असत्ताअ वियारो कीरइ, जाण सत्ता य्येव ण भोदि ताण 'मूलं णत्थि कुओ साहा' त्ति णायेण वियारणाअ चेव अणवगासो, अदो मग्गणापाउग्गाण त्ति उत्तं णेयं। धुवसत्ताकप्परहिआण अधुवसत्ताकाण पयडीण असत्ता भुवदि, अधुवसत्ताकत्तणा चिय। जहसंभवं खीणसत्तागमत्था खाइअसम्मदिट्ठिमासिज्ज दंसणसत्तगस्सा-ऽणंताणबंधिचउग-दंसणमोहणीयत्तिगलक्खणस्स विसंजोजणावेक्खा वि अणंताणुबंधिचउक्कस्स, सम्मत्तमोहणीय-मिस्समोहणीयाण पुण पुरिमुत्ताऽधुवसत्तागहेउणा वि असत्ता विज्जदि। सेसपयडीण जहजोग्गं खोवगसेढी-खणमोह-

सजोगिकेवलि-अजोगिकेवलिणो पडुच्च असत्ता विज्जदे ॥१६५-२२८॥

॥ अथ द्वितीयं स्वामित्वद्वारम् ॥

अहुणा सामित्तदारं पडिपाडिज्जइ-

विग्घणवावरणाणं, सत्तासामी उ खीणमोहंता ।
णिद्दादुगस्स दुचरम-समयंता खीणमोहस्स ॥२२९॥
थीणद्धितिगसुराउग-मोहणिरयतिरियआयवदुगाणं ।
जाइचउगथावरदुग-साहारण उवसंतंता ॥२३०॥
अपमत्तंता-ऽणाण व, खवगं तु पडुच्च दंसणसगस्स । (गीतिः)
अणिअट्टिसंखभागा, जा सोलसथीणगिद्धिपमुहाणं ॥२३१॥
ताउ कमा-ऽहियऽहियपर-भागंता अत्थि अडकसायाणं ।
णपुमित्थिहस्सछगपुम-अंतिमकोहमयमायाणं ॥२३२॥
सुहमंता विण्णेया, अंतिमलोहस्स अडकसायाओ ।
पच्छा भणन्ति अण्णे, सोलसथीणद्धिआईणं ॥२३३॥
णेया अजोगिअंता, दुवे अणी अमणुयाउगगईणं ।
तह पंचिंदियतसतिग सुहगादेयजसउच्चाणं ॥२३४॥
अपमत्तंता तिरिणिरयाऊण कमाऽत्थि देससम्मंता । (गीतिः)
अण्णे बिंति जिणस्स उ, अजोगिअंता अमीससासाणा ॥२३५॥
णेया बासीईए, सेसाण अजोगिदुचरमखणंता ।
केइ चरमसमयंता, भणन्ति मणुयाणुपुव्वीए ॥२३६॥

तित्थाहारगसत्तग-णिरयतिरिसुराउगाण सव्वे वि ।
अत्थि असत्तासामी, सम्माई हुन्ति मिच्छस्स ॥२३७॥
मिच्छा तह सम्माई, मीसस्स हवेज्ज मिच्छमीसाई ।
सम्मस्स मीसपमुहा, पढमकसायाण बोद्धव्वा ॥२३८॥

देसंता तह सिद्धा णराउगस्स इयराण अवसेसा । (गीतिः)
णवरं मिच्छा वि णिरय-णरसुरदुगविउवसत्तगुच्चाणं ॥२३९॥

सत्तासामी तिमणुय-दुपणिंदितसभवियेसु ओघव्व ।
आसिज्ज जीवभेआ, सप्पाउग्गाण ओघव्व ॥२४०॥
पणमणवयकायउरल — चउवेअकसायणाणपणगेसु । (गीतिः)
संजमममइअछेअग-अहखायदरिसणचउगसुक्कासु ॥२४१॥
सम्मखइअसण्णीसुं, आहारियरेसु होइ ओघव्व ।
अणचउगदुआऊणुव-समे-ऽत्थि सव्वे वि सेसाणं ॥२४२॥
सव्वे वि अत्थि अण्णह, सप्पाउग्गाण णवरि तित्थस्स ।(गीतिः)
णिरयऽज्ञतिणिरयविउव-अजयकुलेसासु सामणदुगूणा॥२४३॥
सव्वणिरयेसु तिरियति-पणिदितिरियेसु भवणतिगे ।
सासणहीणा णेया, आहारगसत्तगस्स खलु ॥२४४॥ (उपगीतिः)
तिरिचउगे देसजई, ण व णिरयाउस्स हुन्ति सम्माच्च ।
देवे सोहम्माइग-गेविज्जंतेसु तित्थस्स ॥२४५॥
घाइतिरियाउतेरस णामाण सजोगिणो णुरलमीसे ।
कम्मे तित्थस्स उरल-मीसे सासाणमिच्छूणा ॥२४६॥
सासणसजोगिरहिआ, कम्मे णिरयाउगस्स विण्णेया ।
देवाउस्स सजोगी, विण तित्थस्स उ असासाणा ॥२४७॥
विक्कियमीसे सासण-रहिआ णिरयाउतित्थणामाणं ।
तित्थस्स अणाणतिगे,सासणवज्जा मुणेयव्वा ॥२४८॥
णारयतिरियाऊणं, ओघव्व हवेज्ज तेउपम्हासुं ।
परिवज्जिअ सासायण-मीसा तित्थस्स विण्णेया ॥२४९॥

णिरयतिरिक्खाऊणं, ओघव्व उवसमवेअगेसु खलु । (गीतिः)
मिच्छाईतिगविरहिआ, अणस्स ण व उवसमे अपुव्वाई ॥२५०॥
सव्वह असंतसामी, सजोगिजीवा पडुच्च ओघव्व । (गीतिः)
समजोग्गाण परं जहि, खइआ ण तहि ण दुगस्स सम्माई॥२५१॥
तिदसिणाण तिरितिगे,देसा ण णराउगस्स उण खइए ।(गीतिः)
णिरयदुगस्स ण मिच्छा, णवसु सुराउस्स ण दुइआ मीसे॥२५२॥

(है०चू०) "विग्घ०" इच्चाइगाहा चउवीसा सामित्तदारसक्का णिगदसिद्धा । तत्थ ओहदो गाहादुगेण सत्तासामी गाहातिगेण असत्तासामी य त्ति एकादसगाहाहिं भणिदं । आएसत्तो मग्गणासु गाहेगादसगेण सत्तासामो गाहादुगेण असत्तासामी य त्ति गाहातेरसगेण कहिदं । तत्थ ओहदो कम्मत्थवणामदुइअकम्मगंथेण संतपदेण य गयत्थं । तहाहि-खवगसेढि-उवसमसेढि-खाइगसम्मदिट्ठिआई पडुच्च तहा धुवाऽधुवसत्ताकत्तेण य समतान्तरं जहुत्तसामित्तलाहो संतपददरिसिदमयंतरेण तिरियणिरयाऊण सामित्तविसेसो । तहेव ससजीवभेआ पडुच्च मग्गणासु वि सत्ताऽसत्तासामिणो सयं णेया, सुगमपायत्ता । मिच्छत्त-मीस-सम्मत्ता ऽणंताणुबन्धिचउगाण कमेण पढमादिगुणठाणत्तिग-बीआइगुणठाणदुग-दुइअगुणठ ण-पढमादिगुणठाणदुगेसु धुवसत्ताकत्तणेण सेसुवसंततेसु गुणठाणेसु अधुवसत्ताकत्तेण य तह णराउस्स पमत्तसंजदपहुदिअजोगिकेवलिपज्जंतेसु धुवसत्ताकत्तेण सामित्तविसेसो णेया दुइअ-तइअगुणठाणदुगे जिणणामस्स सत्ता ण भोदि, देवभेदेसु ओरालियमिस्से य पढमगुणठाणे वि । विउव्वमीसे कम्मे बिदीयगुणठाणे णिरयाउस्स सत्ता णत्थि दुदीयगुणठाणेण सह णिरये अणुप्पादादो । इच्चाइविसेसो सयमुज्झो ॥२२९-२५२॥

॥ अथ तृतीयं साद्यादिद्वारम् ॥

संपदि सादिआदिदारं पठदि-

साइअणाइधुवियरा, अणाण सत्ता अणाइधुवअधुवा ।
धुवसंताणऽणणेसिं, सेसाणं साइअधुवाऽत्थि ॥२५३॥
साइधुवा-ऽत्थि असत्ता, धुवसत्ताण अणचउगवज्जाणं ।
णेया बत्तीसाए, अणाणं साइधुवअधुवा ॥२५४॥
सत्ता ओघव्व भवे, अचक्खुभवियेसु णवरि णत्थि धुवा। (गीतिः)
भविये धुवसत्ताणं, चउहा दुअणाणअजयमिच्छेसु ॥२५५॥
अभवम्मि अणाइधुवा, हवेज्ज पंचसु वि अधुवसत्ताणं ।
सप्पाउग्गाण दुहा, सव्वेसिं अत्थि सेसासु ॥२५६॥
निदरिसणमोहचउअण-सुराउआहारसत्तगजिणाणं । (गीतिः)
णयरेए अकमाए, तिहा असत्ता-ऽत्थि साइधुवअधुवा ॥२५७॥
सम्मे होइ तिहा चउ-अणाउआहारसत्तगजिणाणं । (गीतिः)
आउदुगाहारगसग-जिणाण खइए तिहा अणाहारे ॥२५८॥
धाइणिरयतिरिणरसुर-तिगविउवाहारसत्तगाण तहा ।
चउ नाइजिणायवथावरदुगसाहारणुच्चाणं ॥२५९॥
सेसाण पंचसु वि साइधुवा केवलदुगेऽत्थि सव्वेसिं ।
सप्पाउग्गाणं खलु, सेसासु साइअधुवाऽत्थि ॥२६०॥

(हे.चू.) "साइ०" इच्चाइगाहाट्ठगं सुगमं । तत्थ ओहदो एगाअ गाहाअ सत्ताअ अण्णाअ असत्ताअ त्ति गाहादुगेण णिरूविदं । आएसत्तो गाहादुगेण सत्ताअ गाहाचउक्केण असत्ताअ त्ति गाहा-छक्केण परूविदं । विसंजोजिआणंताणुबंधीण पुणो पादसंभवेण अणंताणुबंधिचउक्कस्स सत्ताअ साइत्तं संभवदि । ण पुण सेसधुव-सत्ताकाण छव्वीसोत्तरसयपयडीण तेसिं सत्तुच्छेदे पादअभवणेण पुण

सत्ताअ अभवणादु साइत्तणं णत्थि । सव्वाण तीसुत्तरसदपयडीण धुवसत्ताकाण अणाइकालदो संततिभावेण वत्तणादु सत्ताअ अणादित्तणमत्थि । अभव्वमासिज्ज कया वि अणुच्छेदेण धुवा । भवियमहिकिच्च विच्छेदसंभवा अधुवा । सेसपयडीण अट्ठावीसाअ अधुवसत्ताकत्तेण च्येव अणादिदा धुवदा य ण संभवदि, सादिदा अधुवदा य संभवदि ।

सत्तुच्छेदेण च्येव असत्ताअ लाहादु असत्ताअ अणादितणं णत्थि, सादित्ता य अत्थि । अधुवसत्ताकाण पुण अधुवसत्ताकत्तेण वि अणाइत्ता ण होदि, सादित्तं य भवदि । धुवसत्ताकाण अणंताणुबंधिवज्जाण छव्वीसुत्तरसदपयडीण उण पातअभावादो असत्ताअ अधुवदा ण हुवदि । अणंताणुबंधीण उण विसजोजिअणंताणुबंधीण पदणस्स संभवादु सेसाण अट्ठावीसाअ अधुवसत्ताकत्ताणेण य असत्ताअ वत्तोस पडीण अधुवदा अत्थि सिद्धा पडुच्च पावंस अभावादु सव्वेसिमट्ठावण्णाहियसदपयडीण असत्ताअ धुवदा अत्थि ।

एवं मग्गणासु वि ओहाणुसारेण सप्पाउग्गाणं सव्वपयडीण सत्ताअ असत्ताअ अ साइआइत्त सयं बुज्झं । केवलं छउमत्थ-भवत्थ-सिद्धाइजीवा पडुच्च मग्गणाण तहत्तादु तहात्तणं विण्णेयं ।२५३ २६०॥

॥ अथ चतुर्थं कालद्वारम् ॥

अहुणा कालदारं निगवदि—

कालो अणाइणंतो, अणाइसंतो य साइसंतो य । (गीतिः)
तिविहो सत्ताए चउ-अणाण तइओ लहू मुहुत्तंतो ॥२६१॥
देसूणद्धुपरट्टो, जेट्ठो सेसधुवसंतकम्माणं ।
दुविहो अणाइणंतो, अणाइसंतो मुणेयव्वो ॥२६२॥
णिरय-सुराऊण लहू, हवेज्ज दस साहिया सहस्ससमा ।
जेट्ठो-ऽत्थि पुव्वकोडिति-भागहिया जलहितेत्तीसा ॥२६३॥

अहिया समा अड णिरय-णरसुरदुगविउव्वसत्तगुच्चाणं ।
हस्सो जिणस्स साहिय-सहस्सचुलसीइवासाणि ॥२६४॥
सेसाण मुहुत्तंतो, लहू गुरू सम्ममीसमोहाणं । (गीतिः)
अहियदुतीसुदहिसयं, अहियणरगुरुट्ठिई णराउस्स ॥२६५॥
जेट्ठो तिरियाउमणुय-दुगउच्चाणं असंखपरिअट्टा ।
पल्लासंखियभागो, आहारगसत्तगस्स भवे ॥२६६॥
विउवेगारसगस्स य, हवेज्ज अहियतसजेट्ठकायठिई ।
तित्थस्स ऊणपुव्वदु कोडिजुआ जलहितेत्तीसा ॥२६७॥
अप्पमत्ताअ अणाणं, साइअणंतो य साइसंतो य ।
दुइअस्स मुहुत्तंतो, लहू गुरूदहिदुतीससयं ॥२६८॥
साइअणंतो-ऽणेसिं, धुवसत्ताणऽत्थि साइसंतो वि ।
चउआउणिरयणरसुर--दुगविक्कियसत्तगुच्चाणं ॥२६९॥
अंतमुहुत्तमणू पण-रसण्ह उ खणो उ णरदुगुच्चाणं ।
जेट्ठो असंखलोगा, तिरियाउस्स जलही सयपुहुत्तं ॥२७०॥(गीतिः)
होइ असंखपरट्टा, चउदसण्हं दसण्ह सेसाणं । (गीतिः)
अभविअपाउग्गाणं, अणाइणंतो अणाइसंतो य ॥२७१॥
साइअणंतो तह जिण-वज्जाण णवण्ह साइसंतो वि ।
तुरिअस्स खणो व लहू, जेट्ठो ऊणद्धपरिअट्टो ॥२७२॥
तिरिमणुयाऊण सयल-णिरयसुरेसु लहू मुहुत्तंतो ।(गीतिः)
सत्ताअ गुरू मासा, छोघव्वा-ऽऽहारसत्तगस्स गुरू ॥२७३॥

पल्लासंखियभागो, लहू वि पणऽणुत्तरेसु समयो वा ।
णवगेविज्जेसु भवे, समयो सेससुरणिरयेसु ॥२७४॥
णिरयपढमणिरयेसुं, तित्थस्स सहस्सवासचुलसीई ।
हस्सो अहियलहुठिई, णिरयदुगे-ऽण्णासु अलहुटिई ॥२७५॥
णिरयतइअणिरयेसुं. गुरू अहियतिअयरा ऽत्थि णिरयदुगे ।
ऊणा गुरुकायठिई, देवेसुं जेट्ठकायठिई ॥२७६॥
भिन्नमुहुत्तमणाणं, चरमणिरयपणअणुत्तरेसु लहू । (गीतिः)
बत्तीसाए समयो, अडतीसाए वि सम्ममीसाणं ॥२७७॥
णवरि पणऽणुत्तरेसुं, मीसस्स भवे जहण्णकायटिई ।
सव्वह सेसाण लहू, लहुट्ठिई गुरुठिई जेट्ठो ।२७८।
सियराउतिगस्स लहू, होइ तिरिपणिंदितिरिणरतिगेसुं ।
भिन्नमुहुत्तं जेट्ठो, कोडितिभागोऽत्थि पुव्वाणं ॥२७९॥
साउअणरहिअधुवसत्ताण लहू लहुठिई खणो-ऽण्णेसिं ।
णवरि णिरयणरसुरदुग-वेउव्वियसत्तगुच्चाणं ॥२८०।
तिरिये लहुकायठिई, तिणरेसु हवेज्ज णरदुगुच्चाणं ।
तित्थस्स मुहुत्तंतो, तहि जेट्ठो पुव्वकोडी से ॥२८१॥
सत्तसु वि मग्गणासुं, ओघव्वाहारसत्तगस्स गुरू ।
सेसाणं पयडीणं, हवेज्ज ससजेट्ठकायठिई ॥२८२॥
णवरि तिरिये तिपल्ला, अब्भहिया होइ सम्ममीसाणं ।
विउवेगारसगस्स य, ओघव्व णरदुगउच्चाणं ॥२८३॥
अपज्जत्तपणिंदिय-तिरियपणिंदियतसेसु सव्वेसुं ।
एगिंदियविगलिंदिय-पणकायेसुं असण्णिम्मि ॥२८४॥

लहुजेट्ठो धुवसत्ता-तिरियाऊण लहुजेट्ठकायठिई । (गीतिः)
णवरि पणिंदितसेसुं, तिरियाउस्स उ लहू मुहुत्तंतो ॥२८५॥
सेसाऊण जहण्णो, भिन्नमुहुत्तं पणिंदियतसेसुं ।
जेट्ठो वि भवे अण्णह, होइ सगुरुभवठिइतिभागो ॥२८६॥
सेसाण लहू समयो, गुरुकायठिई गुरू भवे णवरं ।
लहुकायठिई णरदुग-उच्चाणेगिंदियम्मि लहू ॥२८७॥
विउवेगारसगस्स व, अमणे सिं चउदसण्ह वि लहुठिई ।
एगिंदिये णिगोए, पणकायछबायरोहेसुं ॥२८८॥
छोहसुहमभेएसुं, पत्तेअवणे तहा अमणिम्मि ।
पल्लासंखियभागो, गुरू णरदुगुच्चवज्जवीसाए ॥२८९॥ (गीतिः)
तेउअणिलेसु तेसिं, सुहमोहेसु तह बायरोहेसुं ।
पल्लासंखंसो णर-दुगउच्चाणं पि होइ गुरू ॥२९०॥
असमत्तपणिंदितिरिक्व अपज्जणरे परं दुआऊणं ।
वच्चासो होइ लहू, लहुट्ठिई णरदुगुच्चाणं ॥२९१॥
ओघव्वाउजिणाण दु-पणिंदितसचक्खुसण्णिगेसु लहू। (गीतिः)
आहारेऽन्तमुहुत्तं, सत्तसु सेसाण सगुरुकायठिई ॥२९२॥
सेसाण लहुठिई पर-माहारेऽणचउगस्स समयोऽत्थि । (गीतिः)
छसु वोघव्व दुदंसण-तिआउआहारसगजिणाण गुरू ॥२९३॥
विउवेगारसगस्स वि, ओघव्वाहारगे-ऽहियतिपल्ला । (गीतिः)
तिरियाउस्स छसु भवे, सत्तसु सेसाण सगुरुकायठिई ॥२९४॥
घाइचउआउजाइणिरयतिरिसुरथावरायवदुगाणं । (गीतिः)
विउवाहारगसगजिण-साहाराण समयो लहू काये ॥२९५॥

सेसाण मुहुत्तंतो, गुरू उण णिरयसुराउतित्थाणं ।
अब्भहिया सत्त भवे, सहस्सवासा णराउस्स ॥२९६॥

विउवाहारगसत्तग—णारगदेवदुगसम्ममीसाणं ।
पल्लासंखियभागो, सेसाणं जेट्ठकायठिई ॥२९७॥

उरले सव्वाण लहू, समयो जेट्ठो दुआउतित्थाणं ।
भिन्नमुहुत्तं गुरुभू-भवठिइतंसो णराउस्स ॥२९८॥

सेसाणं जेट्ठठिई, घाईणं सम्ममीसवज्जाण ।
तिरियतिगथावरायव-दुगसाहारचउजाईणं ॥२९९॥

भिन्नमुहुत्तं दुविहो, उरालमीसम्मि सत्तवण्णाए ।
सेसाण लहू समयो, भिन्नमुहुत्तं गुरू णेयो ॥३००॥

सम्मम्मीसाहारग-सत्तगपयडीण विउवमीसम्मि ।
समयो लहू गुरू उण, भिन्नमुहुत्तं दुहा-ऽण्णेसिं ॥३०१॥

आहारमीसजोगे, समयोऽत्थि लहू सुरउतित्थाणं ।
जेट्ठो भिन्नमुहुत्तं, दुविहो वि हवेज्ज सेसाणं ॥३०२॥

कम्माणाहारेसुं, समयो सव्वाण होअइ जहण्णो ।
णिरयसुराऊण गुरू, दो समया तिण्णि सेसाण ॥३०३॥

णवरं भिन्नमुहुत्तं, सिमणाहारे गुरू मुणेयव्वो ।
पणणवइअघाईणं, जेसिं सामी अजोगी वि ॥३०४॥

तिरिणिरयाऊण लहू, भिन्नमुहुत्तं हवेज्ज इत्थीए ।
समयो सेसाण गुरू, देवाउगसम्ममीसाणं ॥३०५॥

अहियपणवण्णपलिया, तिरियणराऊण साहियतिपल्ला ।
णिरयाउगआहारग-सगतित्थाणऽत्थि मणुसिव्व ॥३०६॥
चउआलीसाहियसय-सेसाण हवेज्ज जेट्ठकायठिई । (गीतिः)
पुरिसे भिन्नमुहुत्तं, लहू णिरयतिरिसुराउतित्थाणं ॥३०७॥
समयो अणसेसअधुव-सत्ताणऽण्णाण हस्सकायठिई । (गीतिः)
ओघव्व दुदंसणजिण-सुराउआहारसत्तगाण गुरू ॥३०८॥
णिरयतिरिणराऊणं, इत्थिव्वऽण्णाण जेट्ठकायठिई ।
णिरयाउस्स णपुंसे, लहू दस सहस्सवासाणि ॥३०९॥
भिन्नमुहुत्तं णेयो, तिरियाउस्स समयो भवेऽण्णेसिं ।
साहियतेत्तीसुदही, उक्कोसो सम्ममीसाणं ॥३१०॥
मणुयाउस्स पुहुत्तं, विण्णेयो पुव्वकोडीणं । (उद्गीतिः)
पुव्वाण कोडितंसो देवाउस्स णिरयव्व तित्थस्स ॥३११॥
सेसअधुवसत्ताणं, ओघव्वऽण्णाण सगुरुकायठिई ।
गयवेए अकसाए, अहखाए य छउमत्थदुविहठिई ॥३१२॥(गीति
घाइसुराउगतेरस-णामाण दुहा-ऽत्थि एसु सेसाणं ।
सव्वाण केवलदुगे, दुविहो दुविहा भवत्थठिई ॥३१३॥
आहारसत्तगस्स खणो मइसुअसम्मवेअगेसु लहू ।
सेसाण मुहुत्तंतो, गुरू तिपल्ला दुआऊणं ॥३१४॥
देवाउजिणाहारग-सत्तगपयडीण होइ ओघव्व । (गीतिः)
णिरयाउस्सूणजलहि-तेत्तीसा-ऽण्णाण अयरछासट्ठी ॥३१५॥
सव्वाण लहू समयो, ओहिदुगे उअ मइव्व जेट्ठो वि । (गीतिः
णवरि तिरिणराऊणं, कमूणअहिया-ऽत्थि पुव्वकोडी वा ॥३१६

धुवसत्ताणोघअण-व्वऽत्थि उ दुअणाणअजयमिच्छेसुं ।
सेसाण मुहुत्तंतो, लहू गुरू होइ ओघव्व ॥३१७॥
णवरि लहू तीसु खणो, आहारसगस्सहियिगतीसुदही ।
होइ सुराउस्स गुरू, अजए उण जलहितेत्तीसा ॥३१८॥
अजए जेट्ठो साहिय-तेत्तीसुदही व सम्ममीसाणं ।
पल्लासंखियभागो, तीसु जिणस्स य मुहुत्तंतो ॥३१९॥
तित्थस्स मुहुत्तंतो, समयो व लहू जहागमं होइ ।
सयमुज्झो विब्भंगे, भिन्नमुहुत्तं गुरू होइ ॥३२०॥
सेसाण लहू समयो भवे गुरू होइ सम्ममीसाणं ।
आहारसत्तगस्स य, असंखिययमो पलियभागो ॥३२१॥
णिरयाउगस्स अयरा, तेत्तीसा होइ तिरिणराऊणं ।
पुव्वाणेगा कोडी, देवाउस्सेगतीसुदही ॥३२२॥
सेसाणं जेट्ठठिई, ओघव्व भवे अचक्खुभवियेसुं ।
सव्वाण णवरि भविये-ऽणाइअणंतो ण चेव भवे ॥३२३॥
लेसासु लहू समयो, दुदंसणाहारसत्तगाण तहा ।
वेउव्वेगारसणर-दुगउच्चाणं पि असुहासुं ॥३२४॥
तित्थस्स सुहासु खणो,हवेज्ज सेसाण छसु मुहुत्तंतो ।
पल्लासंखियभागो, आहारगसत्तगस्स गुरू ॥३२५॥
णिरयाउस्स सुहासुं,देवाउस्स असुहासु सुकाए । (गीतिः)
तिरियाउस्स वि जेट्ठो, भिन्नमुहुत्तं अणाण समयो वा ॥३२६।

सुहअसुहासुं कमसो, सुरणिरयाऊण ऊणजेट्ठठिई । (गीतिः)
सेसाऊण छमासा, जिणस्स काऊअ तिअयराऽब्भहिया ॥३२७॥
भिन्नमुहुत्तं दोसु अ-सुहासु सेसाण छसु वि जेट्ठठिई ।
धुवसत्ताण अभविये, अणाइणंतो मुणेयव्वो ॥३२८॥
दुअणाणव्व हवेज्जा, दुविहो आउचउगस्स सेसाणं ।
पल्लासंखियभागो, लहू गुरू होइ ओघव्व ।३२९॥
णिरयाउजिणाण लहू, वासाऽब्भहिया सहस्सचुलसीई ।
खइए हवेज्ज पल्लं, अब्भहियं तिरिसुराऊणं ॥३३०॥
आहारसत्तगस्स उ, समयो अंतोमुहुत्तमण्णेसिं ।
पल्लासंखियभागो, आहारगसत्तगस्स गुरू ॥३३१॥
णिरयाउस्स तिअयरा-ऽहिया तिपल्लाऽत्थि तिरिणराऊणं ।
सेसाणं पयडीणं, तेत्तीसा सागराऽब्भहिया ॥३३२॥
सव्वाणऽण्णाह लहुगुरु-कायठिई लहुगुरू कमा णेयो ।
णवरि कसायतिगे उण, अंतमुहुत्तलहुठिइगमए ॥३३३॥
होइ जहण्णो समयो, चउअणमिच्छत्तअधुवसत्ताणं ।
संजमसमइअछेअग-देसेसुं पुव्वकोडितंसंतो ॥३३४॥(गीतिः)
णिरयतिरिक्खाऊणं, होइ गुरू आसु चउसु तहा । (उद्गीतिः)
मणणाणे परिहारे, सुराउणो पुव्वकोडितंसोऽत्थि ॥३३५॥
इह तहुवसमे मीसे, समयो आहारसत्तगस्स लहू ।
समइअछेएसु लहू, वांतमुहुत्तमणचउगस्स ॥३३६॥

सव्वणिरयदेवेसु अ-सत्ताकालो-ऽत्थि सम्ममीसाणं ।
समयो लहू णवरि पण अणुत्तरेसु लहुकायठिई ॥३३७॥
मिच्छस्स सहस्सपमा, चुलसीई णिरयपढमणिरयेसुं ।
खाइअ-लहुठिइमाणो, अण्णहऽणाण मुहुत्तंतो ॥३३८॥
ऊणा लहुकायठिई, आउगआहारसत्तगाण परं । (गीतिः)
आहारसगस्स खणो, णिरयज्जणिरयसुरेसु भवणदुगे ॥३३९॥
तित्थस्स लहुभवठिई सव्वाणऽत्थि गुरुभवठिई जेट्ठो । (गीतिः)
णरमहियजलहितिगं, णिरये तइअणिरये य मिच्छस्स ॥३४०॥
णिरयदुगे तस्स अडसु, तिसु य अणाण णिरयंतणिरयेसुं ।(गीतिः)
तिरियाउस्स सुराणय-पहुडीसु णराउगस्स सा ऊणा ॥३४१॥
तिरिये मिच्छस्स अहिय-पल्लं व भवे लहू मुहुत्तंतो ।
अणचउगतिआऊणं, समयो तेवीससेसाणं ॥३४२॥
अणमिच्छतिपल्ला-ऽण्णो, असंखलोगा ऽत्थि णरदुगुच्चाणं ।
विउवेगारस्सूणा, गुरूकायठिई समा-ऽण्णेसिं ॥३४३॥
विउवेगारस्स दुहा, अंतमुहुत्तं पणिंदितिरियतिगे ।
तिरियव्वऽण्णाण लहू, गुरू तिपल्ला-ऽणमिच्छाणं ॥३४४॥
ऊणा गुरुकायठिई, देवाउस्सऽत्थि णरदुगुच्चाणं ।
अंतमुहुत्तं णेयो, सेसाणं जेट्ठकायठिई ॥३४५॥
वीसापज्जत्तेसु स-जोग्गाऊण दुविहो मुहुत्तंतो ।
सेसाण लहू समयो, अंतमुहुत्तं भवे जेट्ठो ॥३४६॥

तिणरेसु मुहुत्तंतो लहू, उ धुवघाइतेरणामाणं । (गीतिः)
देसूणपुव्वकोडी, गुरू परमणाण तिपल्लिऊणहिया ॥३४७॥
मिच्छस्सऽणव्व दोसुं, आउजिणाणं लहू मुहुत्तंतो ।
सेसाण खणो सुरदुग-विउवसगाणं गुरू मुहुत्तंतो ॥३४८॥ (गीतिः)
दंसणआउगदुगजिण-आहारसगाण जेट्ठकायठिई ।
देवाउस्सूणा सा, सेसाण गुरू वि समयोऽत्थि ॥३४९॥
तिरियव्व सजोग्गाणं, एगक्खे ऊणहस्सकायठिई ।
मणुयाउस्स जहण्णो, सेसेगक्खऽग्गिवाऊसुं ॥३५०॥
सेसाण लहू समयो, गुरू गुरुठिई समाण एमेव ।
विगलतिकायण्णेसु णरदुगुच्चगुरू परं मुहुत्तंतो ॥३५१॥ (गीतिः)
दुपणिंदितसेसु णर-व्वऽखिलाण दुहा पणिंदितिरियव्व ।
णरदुगउच्चाण लहू, अंतमुहुत्तं णराउस्स ॥३५२॥
परमाउतिगस्स गुरू, अयरसयपुहुत्तमत्थि जेट्ठठिई ।
सम्मगमीसणराउग— आहारगसत्तगजिणाणं ॥३५३॥
तेत्तीसा मिच्छस्स अयराऽहिया-ऽणाणउण दुतीससयं ।
सुरदुगविउवसगाण दु—तसेसु संखियसहस्ससमा ॥३५४॥
सव्वाण लहू पणमण-वयविउवाहारचउकसाएसुं ।
समयो अंतमुहुत्तं, गुरू कहिंचि काणचि विसेसो ॥३५५॥
कायुरलेसु जहण्णो, समयो सव्वाण णरदुगुच्चाणं ।
जेट्ठो असंखलोगति-सहस्सवासा कमा णेयो ॥३५६॥

दोसु वि गुरुकायठिई, तिरियाउगवज्जअधुवाणं ।
चउवीसाएऽत्थि इयर सगवण्णाए मुहुत्तंतो ॥३५७॥ (उपगीतिः)
ओरालमीसजोगे, मणुयाउस्स दुविहो मुहुत्तंतो ।
समयो होइ जहण्णो, एगासीईअ सेसाणं ॥३५८॥
थाइदुरिसणसगरहिअ– चत्ताएगारतिरियपयडीणं ।
होइ दुसमया जेट्ठो, सेसाण भवे मुहुत्तंतो ॥३५९॥
मिच्छाणाउजिणाणं, विउव्वमीसे दुहा मुहुत्तंतो ।
सेसाण णवण्ह लहू, समयो जेट्ठो मुहुत्तंतो ॥३६०॥
आहारमीसजोगे, समयोऽत्थि लहू सुराउगजिणाणं ।
जेट्ठो अंतमुहुत्तं, सेसाण दुहा मुहुत्तंतो ॥३६१॥
अडवीसअधुवसत्ता-मिच्छाणाण समयो लहू कम्मे ।
जेट्ठोऽत्थि तिण्णि समया, दुहा वि सेसेगवण्णाए ॥३६२॥
थीअ जहण्णो सोलस-थीणद्धितिगाइअडकसायाणं ।
णपुमणरसुराऊणं, देवदुगविउव्वियसगाणं ॥३६३॥
अंतमुहुत्तं समयो-ऽण्णेसिं मिच्छस्स पुव्वकोडंतो ।
जेट्ठो गुरुकायठिई,दुदंसणाहारसगजिणाऊणं ॥३६४॥ (गीतिः)
ऊणपणवण्णपलिया, अणाणऽहियतिपलिया सुराउस्स ।
णेयो अंतमुहुत्तं, सेसाणं सत्ततीसाए ॥३६५॥
हस्सछगस्स दुहा खलु, पुरिसे समयोऽत्थि बारसण्ह लहू ।
सेसाण मुहुत्तंतो, मिच्छाणाणं पणिंदियव्व गुरू ॥३६६॥ (गीतिः

णेयो गुरुकायठिई, दुदंसणाहारसगजिणाऊणं ।
देवाउस्स तिपल्ला, अहियाऽण्णेसिं मुहुत्तंतो ॥३६७॥
णपुमे थीए दुविहो, समयो सेसाण होइ थिव्व लहू ।
मिच्छस्स भवे जेट्ठो, अब्भहिया सागरा तिण्णि ॥३६८॥
णेयो गुरुकायठिई, चउवीसाए उ अधुवसत्ताणं । (गीतिः)
सागरतेत्तीसूणा-ऽणाणं तिरियव्व णरदुगुच्चाणं ॥३६९॥
तिरियाउस्स अयरसय-पुहुत्तमंतोमुहुत्तमण्णेसिं ।
गयवेए अकसाए, साइअणंतो-ऽत्थि सव्वेसिं ॥३७०॥
दंसणआहारगसग-सुराउतित्थाण साइसंतो वि ।
स लहू समयो जेट्ठो, अंतमुहुत्तं दुहा सुराउस्स ॥३७१॥(गीतिः)
णाणतिगोहीसु दुहा, णिद्दुगस्स समयो सगस्स लहू।
सेसाण मुहुत्तंतो, तेत्तसुदही तिदंसणाण गुरू ॥३७२॥ (गीतिः)
अणचउगाउदुगाणं, आहारसगस्स तित्थणामस्स ।
साहियछसट्ठिजलही, अहियातपल्ला सुराउस्स ॥३७३॥
विण्णेयो देसूणा, तेत्तीसा सागरा णराउस्स ।
भिन्नमुहुत्तं हवए, सेसाण सत्ततीसाए ॥३७४॥
थीणद्धितिगस्स तहा, बारकसायणवणोकसायाणं ।
तेरसणामाणं मण-णाणे दुविहो मुहुत्तंतो ॥३७५॥
णिद्दादुगस्स दुविहो, समयो आहारसत्तगस्स लहू ।
अंतमुहुत्तं णेयो, सेसाण गुरू य पुव्वकोडंतो ॥३७६॥(गीतिः)

सव्वाण केवलदुगे, साइअणंतोऽत्थि साइणंतविणा । (गीतिः)
ओघव्व सजोग्गाणं, दुअणाणाजयअभवियमिच्छेसुं ॥३७७॥

परमत्थि साइसंतो, वि चउसु तित्थस्स कायठिइमाणो ।
अजए अणमिच्छाणं, गुरू य अहियुदहितेत्तीसा ॥३७८॥

समयो लहू विभंगे, चउद्दसण्हाहियेगतीसुदही ।
णिरयाउस्सुक्कोसो, सेसाणं जेट्ठकायट्ठिई ॥३७९॥

संजमअहखाएसुं, घाइतिआउइगवीसणामाणं । (गीतिः)
अंतमुहुत्तं तु लहू, गुरू गुरुठिई खणो दुहा-ऽणोसिं ॥३८०॥

समइअछेएसु दुहा, दुविहठिई सगदुगाउतित्थाणं ।
णवरि सुराउस्स लहू, अंतमुहुत्तं दुहा-ऽणोसिं ॥३८१॥

सुहमे अंतमुहुत्तं, सव्वाण दुहा परं लहू समयो ।
णेयो दंसणसत्तग-आहारगसत्तगजिणाणं ॥३८२॥

होइ दुहा परिहारे, देसे सव्वाण दुविहकायठिई ।
णवरि गुरू देसूणा, गुरुकायठिई सुराउस्स ॥३८३॥

णयणे सण्णिम्मि दुहा, दुतसव्व परं खणो दुणिद्दाणं । (गीतिः)
दुविहो तु मुहुत्तंतो, विउवेगारसगखवगपयडीणं ॥३८४॥

दुविहो पणणिद्दाणं, बारकसायणवणोकसायाणं ।
तिरियेगारसगस्स य, चक्खुव्व भवे अचक्खुम्मि ॥३८५॥

मिच्छस्स मुहुत्तंतो, लहू गुरू अहियजलहितेत्तीसा ।
सेसाण साइणंतं, विण बत्तीसाअ ओघव्व ॥३८६॥

अणमिच्छाउजिणाण अ-सुहलेसासु लहू मुहुत्तंतो । (गीतिः)
मिच्छणिरयाउणरदुग-विउवेगारसगउच्चगाण गुरू ।। ३८७।।

णवरं मिच्छस्स गुरू, काऊअ तिसागराऽब्भहिया ।
सेसाण लहू समयो, गुरुकायठिई गुरू णेयो ।।३८८।।(उपगीतिः)

णवरि अणाणं ऊणा, तिरियाउस्स उण किण्हाए । (उद्गीतिः)
समयो लहू दुदंसण-आहारसगाण तिसुहलेसासु ।।३८९।।

सेसाण मुहुत्तंतो, गुरू सुराउस्स वि दुसु जेट्ठठिई ।
अट्ठारसण्ह पुव्वा, चउवण्णाअ सुहलाअ कोडूणा ।।३९०।। गीतिः)

भविये अंतमुहुत्तं, दंसणसगरहिअघाइचत्ताए ।
तिरियेगारसगस्स य, लहू गुरू ऊणपुव्वकोडी उ ।।३९१।।(गीतिः)

दुविहो समयो णेयो, धुवसत्ताणं अघाइसेसाणं ।
सगसट्ठीए-ऽण्णाण अ-चक्खुव्व अणाइणंतविणा ।।३९२।।

सम्मत्तखाइएसु, साइअणंतो हवेज्ज सव्वेसिं ।
साइअधुवो वि कमसो,सोल-दसण्हं लहू मुहुत्तंतो ।।३९३।।(गीतिः)

णूणा तेत्तीसुदही, गुरू णराउस्स तह सुराउस्स । (गीतिः)
सम्मे अहियतिपल्ला , खइए-ऽण्णेसिं भवत्थजेट्ठठिई ।।३९४।।

परमाहारसगजिणाण खणो-ऽण्णु उ खइए णराउस्स ।
चुलसीइसहस्ससमा, तित्थगुरू पुव्वकोडितंसंतो ।।३९५।।(गीतिः)

सव्वाण वेअगेऽणु , मइव्व जेट्ठो उ मिच्छमीसाणं ।
अंतमुहुत्तं ऊणा, तेत्तीसुदहो णराउस्स ।।३९६।।

देवाउगस्स ऊणति-पल्ला सेसाण जेट्ठकायठिई ।
सव्वाण मुहुत्तंतो, उवसममीसेसु होइ दुहा ॥३९७॥
णवरि जहण्णो समयो, आहारसगस्स सासणे णेयो ।
सव्वाण लहू जेट्ठो, कमसो लहुजेट्ठकायठिई ॥३९८॥
अमणे आऊण लहू, अंतमुहुत्तं भवे खणोऽण्णेसिं ।
जेट्ठो तिरियव्व भवे, छव्वीसाए वि सव्वेसिं ॥३९९॥
पंचक्खव्वाहारे, सव्वाण परं लहू दुगस्स खणो ।
णरदुगविउव्वतेरस-उच्चाण गुरू य जेट्ठठिई ॥४००॥ (गीतिः)
सव्वाण अणाहारे, अडवण्णाहियसयस्स पयडीणं ।
साइअणंतो णेयो, चुलसीए साइसंतो वि ॥४०१॥
समयो अणमिच्छअधुव-सत्ताण लहू गुरू तिसमयाऽत्थि ।
दुविहो वि घाइचत्ता-तिरियेगारमगणामाणं ॥४०२॥

(हे.चू.) "कालो" इच्चाइ चायालीसुत्तरसयगाहाकाउदारसक्का पयडत्था। तत्थ ओहदो गाहासत्तगेण सत्ताकालो गाहापंचगेण असत्ताकालो तह आएसत्तो चउसट्ठिगाहाहिं सत्ताकालो छसट्ठि-गाहाहिमसत्ताकालो दरिसिदो ।

तत्थ सामण्णओ ओहाएसेहिं धुवसत्तागाण धुवसत्ताकप्पगाण य घाईण छउमत्थकायट्ठिवितुल्लो अघाईण भवत्थकायठिइसमो सत्ताकालो भवदि, सामण्णेण छउमत्थाण भवत्थाण कमसो घाइ-अघाइसत्तासंभवादो ।

विसेसदो पुण अणंताणुबंधिचउगस्स ओहे तह आएसत्तो जहिं कायट्ठिदी साविसंता णत्थि तहिं सादिसंतभंगगदो सत्ताकालो उक्कोसो देसूणद्धपरिअट्टो, जहण्णो अंतमुहुत्तं, सत्ताऽन्तरालकालस्स

तहत्तणादो, मग्गणापरावत्तिआदित्तो पुण णिरयोहादिमग्गणासु समयमाणो वि जहण्णो सत्ताकालो होदि ।

धुवसत्ताकप्परहिदाण अधुवसत्तागाण पुण जहसंभवमट्ठावीसाअ अधुवसत्तागत्तणेण चेव सादिसंतभंगगदो चिअ सत्ताकालो लब्भदे ।

तह उव्वलणाजोग्गाण तेवीसाअ पयडीण उव्वलणाकालस्स पल्लोवमासंखभागमत्तत्तेण तदो णूणकायट्ठिदिगमग्गणासु मग्गणागुरुकायट्ठिदिमाणो गुरुसत्ताकालो जहसंभवं ताण संभवदि ।

तहा ओहे पल्लोवमासंखभागदो अहिगट्ठिदिगासु मग्गणासु वि य जहि जाण केवला उव्वलणा अत्थि बंधादी य णत्थि, थोवकाला वा-ऽत्थि तहि ताण सत्ताकालो पल्लोवमासंखभागो हुवदि, उव्वलणाकालस्स तहत्तणा । जहा ओहे णिरयगइओघादिमग्गणासु आहारगसत्तगस्स, एगिंदियोहादिमग्गणासु सम्ममीसाण वेउव्वेगारसगस्स य, तेउक्कायोघ-वायुकायोहादिमग्गणासु मणुयदुगउच्चगोआण ।

सम्मत्त-मीसमोहाण पुण ओघ-पणिदियोह-पज्जत्तपणिदिय-तसकायोघ-पज्जत्ततसकाय-पुंवेद-चक्खु-अचक्खु-भविय-सण्णि-आहारगमग्गणासु साहिय-मिस्संतरियखओवसमसम्मत्तजिट्ठकायट्ठिदिदुगपमाणो साहियबत्तीसुत्तरसागरोवमसयपमिदो गुरुसत्ताकालो होदि, अट्ठावीससंतठाणकालस्स तहत्तणादु । मिस्समोहणीयस्स पुण अट्ठावीस-सत्तावीससत्ताट्ठाणदुगगुरुसत्ताकालपमिदो सत्ताकालोऽत्थि ।

एवं मग्गणागदसम्मत्तकालमाणो मइ-सुआ-ऽवधिणाणतिग-ओहिदरिसण-सम्मत्त-खओवसमसम्मत्तमग्गणासु सगजिट्ठकायट्ठिदिमिदो, साहियमग्गणागदसम्मत्तकालपमाणो तिरियगइमग्गणाअ साहियपल्लोवमत्तिगपमिदो, थीमग्गणाअ साहियपणवण्णपलिओवममाणो, णपुंसगवेआ-ऽसंजममग्गणादुगे साहियतेत्तीससागरोवममिदो, लेसामग्गणछक्के सुक्कोसकायट्ठिदिपमाणो भोदि ।

णणु कायजोगमग्गणाअ कायट्ठिदीअ बहुत्तणादु कधमोहव्व गुरुसत्ताकालो णुत्तो ?, सच्चं, किंतु सम्मत्तकाले मग्गणाअ परावत्तमाणादु अंतोमुहुत्तकालादो अहिगो कालो ण लब्भदे, मग्गणाबहुकायट्ठिदिकाले य सम्मत्तस्स अभावेण उव्वलणाविक्खाअ एयेव पल्लोवमासंखभागमाणो गुरुसत्ताकालो पाविज्जदि, अट्ठावीससत्ताट्ठाणकालस्स अट्ठावीस-सत्तावीससत्ताट्ठाणदुगसमुदिदकालस्स य तहुत्तणादो।

वेउव्वेगारसगस्स पुण जत्थ णारगाण देवाण व वि पवेसो अत्थि, तत्थ जदा तसगुरुकायट्ठिदित्तो अहिआ गुरुकायट्ठिदी विज्जदे तदा साहियगुरुतसकायट्ठिदिमाणो गुरुसत्ताकालो भवदि । जधा ओहे णपुंसगवेदा-ऽणाणदुगा-ऽसंजमा-ऽचक्खुदरिसण-भविया-ऽभविय-मिच्छत्ता-ऽऽहारिमग्गणासु । कायजोगमग्गणाअ पुण णारग-देवाण पवेसे वि तेसां अन्तमुहुत्तो अन्तमुहुत्ते जोगपरावत्तमाणत्तणादु ण तदविक्खाअ गुरुसत्ताकालो लब्भदे, किंतु एगिंदियाविक्खाअ पल्लोवमासंखभागपमिदो हुवदि । जत्थ पुण जुगलिआण पवेसो अत्थि तत्थ साहियपल्लोवमत्तिगमाणो हवदि । जहा तिरियोह-पणिंदियतिरियोह-पय्यत्तपणिंदियतिरिक्ख-तिरश्चो मणुयोह-पय्यत्त-मणुय-माणुसीमग्गणासु ।

मणुयदुगउच्चाण पुण जत्थ तेउक्काय-वाउकायाण पवेसो अत्थि कायट्ठिदी य असंखपुग्गलपरिवत्ता तदो अहिया वा-ऽत्थि तत्थ मणुयदुगोच्चगोआण गुरुसत्ताकालो असंखपुग्गलपरावत्तमाणो भवदि । जधा ओहे तिरियोघ-एगिंदियोह-कायजोग-णपुंसगवेदा-ऽणाणदुगा—ऽसंजमा--ऽचक्खुदरिसण--भविया -ऽभविय-मिच्छत्ता-ऽसण्णिमग्गणासु ।

उव्वलणाजोग्गाण जहण्णसत्ताकालो पुण समयमत्तलहुकायट्ठिदीअ समयमत्तावसेसमग्गणापवेसे मग्गणाचरमसमयणूतणबंधादि-

णूतणसत्तालाहे य मग्गणासु चेव समयमाणो होदि, ण पुण ओहे। ओहे अचक्खु-भवियमग्गणादुगे य वेउव्वेगारसग-मणुयदुग-उच्चगोआण साहियदुवासो उव्वलणाओ कारगाण जहण्णभवट्ठिदि-कालस्स तहत्तणादु। जत्थ उण लहुकायट्ठिदी वि पल्लोवमा-संखभागदो अहिगा अत्थि उव्वलणापारम्भो वि तत्थ य्येव अत्थि तत्थ ताण लहुसत्ताकालो पल्लोवमासंख-भागमाणो अत्थि। जहा पणाणुत्तरसुरमग्गणासु आहारगसत्तगस्स, अभविए वेउव्वेगारसग-मणयदुगउच्चाण, अण्णेसिं जहसंभवं अंतमुहुत्तं लहुकायट्ठिदी वा।

जत्थ जाणाऊण जावइअं कालं वेइज्जमाणदा णत्थि तत्थ तावइओ कालो गइमग्गणासव्वभेदादीसु अबाहिगो वा अबाहाजुत्तत्तणादु ओघादीसु सत्ताकालो जहसंभव भवदि। जहि मग्गणासु जाणाऊण वेइज्जमाणदा णत्थि तहि णिरयोघादिमग्गणासु ताण तिरिय-मणुयाउआदीण अबाहाकालसमो सत्ताकालो लब्भदे जत्थ कायठिई अप्पा तत्थ कायठिदिमाणो भवदि, जहा पञ्चमनोजोगा-दिमग्गणासु एवं कायजोगसामण्णमग्गणाअ णिरय-सुराऊण वि, जदि वि कायजोगस्स कायट्ठिदो बिहत्तमा अत्थि तह वि णिरय-सुराउगाण वेदगाण बधगाण वा कायट्ठिदी अप्पा अत्थि परावत्त-माणत्तणादु। णराउस्स पुहवीकायस्स अबाहाकालाविक्खाअ पाविज्जदि। एवं ओरालियकायजोगमग्गणाअ वि णेयं। एवमेव लेसामग्गणाछक्के वि जहसंभवं णायव्वं।

जिणणामस्स ओघादीसु सत्ताकालो साधिकबंधकालसमो भवदि, 'वेइज्जमाणकालस्स अधिगत्तणादो, णिरयगदिओघादिमग्गणासु बंधकालसमो सत्ताकालो होदि, तुल्लपायत्तणा, णिरयगदिओहादि-मग्गणासु कदिवयासु मिच्छत्तंतमुहुत्तेण अहिगो य, अकसाय-अहक्खाय-मग्गणाजुगले साहियवेइज्जमाणकालतुल्लो भवदि, खीणकसाय-कालस्स अहिगत्तणेण लाहादो, केवलणाण-केवलदरिसणमग्गणादुगे वेइज्जमाणकालतुल्लो सत्ताकालो भोदि, तुल्लत्तणादो।

जत्थ सिद्धाण पवेसो अत्थि तत्थ ओहे अवेअ-ऽकसाय-केवलणाण-केवलदरिसण-सम्मत्त-खइअसम्मत्ताऽणाहारिमग्गणासत्तगे य सप्पाउग्गाण पयडीण असत्ताकालो सादिअणंतभंगगदो भोवि, सिद्धजीवकालस्स तहत्तणादो ।

विसेसदो पुण ओहे विसंजोजिदाणंताणुबंधिचदुगपडणेण अणंताणुबंधिचदुगस्स, अधुवसत्तत्तणेण अधुवसत्ताण जिणवज्जाण सत्तावीसाअ य त्ति एगतीसाअ सादिसंतभंगगदो वि असत्ताकालो लब्भदे। जिणणामस्स अधुवसत्तात्तणे वि सकयं य्येव सक्कम्मदाअ लाहादु असत्ताकालो सादिसंतभंगगदो ण हवदि तत्थ चदुवीससंतकम्मिगाविक्खाअ अणंताणुबंधिचउगस्स अबंधकालमासिज्ज, आऊण अवेइज्जमाणे सदि वेउव्वेगारसगस्स मणुयदुगउच्चगाआणं आहारगसत्तगस्स य उव्वलिदे सदि असत्ताकालो पाविज्जदि ।

सम्मत्त-मीसमोहाणं पुण उव्वलिदे सदि पुण सम्मत्तप्पत्तिविरहकालस्स अविक्खाअ असत्ताकालो लब्भदे।

सम्मत्त-मीसा-ऽऽहारगसत्तग-जिणणामाण इण अभव्वं पडुच्च अणादिअणंतभंगगदो, भव्वं समासिज्ज अणादिसंतभंगगदो वि असत्ताकालो लब्भदे ।

अवेदा-ऽकसायमग्गणादुगे दरिसणसत्तग-सुराउ-जिणणाम-आहारगसत्तगाण सादि-संतभंगगदो वि असत्ताकालो जहण्णो समयो, उक्कोसो अंतमुहुत्तं भवदि, उवसमसेढिकालस्स तहत्तणादो ।

सम्मत्तमग्गणाअ अणंताणुबंधिचउगा-ऽऽउचउगा-ऽऽहारगसत्तग-जिणणामाण सोलसपयडीणं असत्ताकालस्स सादिसतभङ्गगदो वि जहुत्तमाणो होदि, णराउस्स अणुत्तरसुरासयेण उक्कोसो, सुराउगस्स उक्कोसो णरभवयुतयुगलिकभवाविक्खाअ, दोण्ह वि जहण्णा तह सेसचउदसगस्स दुविहो असत्ताकालो मग्गणाकालस्स सादिसंतभंगगदस्स तहत्तणादु ।

खइअसम्मत्तमग्गणाअ णराउग-सुराउगा-ऽऽहारगसत्तग-जिणणामाणं दसण्ह पयडीण उत्तपमाणो सादिसंतभंगो वि असत्ताकालस्स हवदि, णराउवज्जाण णवण्ह खइअसम्मत्ते लद्धे सदि जहण्णुक्कोसओ जहुत्तकाले गए सत्ताकाललाहादु, णराउसत्तान्तरस्स तहुत्तणादु ।

अणाहारमग्गणाअ चुलसीदिपयडीण जहुत्तमिस्सो सादिसंतमङ्गगदो वि असत्ताकालो जहसंभवं केवलिसमुग्घाद विग्गहगइं य पडुच्च भवदि ।

ओहव्व मइअणाण-सुअऽण्णाण-ऽसंजमा-ऽचक्खु-भविया-ऽभविय-मिच्छत्तमग्गणासु सप्पाउग्गाण असत्ताकालो भुवदि, णवर सिद्धाणमपवेसेण सादिअणंतभंगगदो असत्ताकालो ण लब्भदे । तेण धुवसत्तागाण पयडीण सादिसंतभंगगदो य्येव असत्ताकालो लब्भदे, त जहा-असंजममग्गणाअ मिच्छत्ताऽणताणुबंधिचउगाण असत्ताकालो उक्कोसो साहियतेत्तीससागरोवमाणि, जहण्णो अंतमुहुत्तं, एगवीससत्ताठाणस्स खइअसम्मद्दिट्ठिस्स वा कालस्स तहुत्तणादो, अणंताणुबंधिचउगस्स उण चउवीससत्ताठाणकालस्स वि तहुत्तणादु ।

अचक्खुदरिसणमग्गणाअ णिद्दुगस्स दुविहो वि असत्ताकालो समयो हवदि, खीणकसायदुचरमसमये तस्स विच्छेदादु खीणकसायचरमसमये मग्गणाअ उच्छेदादो य । सेससप्पाउग्गघादिधुवसत्ताण दुविहो वि असत्ताकालो अंतमुहुत्तं, आसां खवगसेढीअ विच्छेदे जाए मग्गणावट्ठाणकालस्स तहुत्तणादो ।

भविअमग्गणाअ मिच्छत्तस्सुक्कोसो असत्ताकालो साहियत्तेतीससागरोवमाणि, जहण्णो अंतमुहुत्तं, एगवीससत्ताठाणस्स खइअसम्मद्दिट्ठिस्स वा कालस्स तहुत्तणादु धुवसत्ताण अणंताणबंधिचउगवज्जसेसघादिपयडीण तिरियेगारसगस्स य त्ति एगवण्णाअ असत्ताकालो उक्कोसो देसूणपुव्वकोडी, जहण्णो अंतमुहुत्तं, आसां विच्छेदे जाए

पाहुण्णेण सजोगिकेवलिं पडुच्च मग्गणावट्ठाणकालस्स तहत्तणादो।

सेसअघादिधुवसत्तागपयडीण सइसट्ठीअ दुविहो वि असत्ता-कालो समयो भवदि, मग्गणाचरमसमये अजोगिकेवलिचरमसमये य्येव तल्लाहादो।

सेसमग्गणाण चेव सादिसंतत्तणादु सादिसंतभगगदो चेव असत्ताकालो होदि। स य जहुत्तमाणो सामित्तादिविसेसादो विण्णेयो ॥२६१-४०२॥

॥ अथ पञ्चममन्तरद्वारम् ।

इदाणिमंतरदारमेगजीवासिदं णिरूविज्जदि—

सत्ताअ अणरहिअधुव-सत्तातित्थाण अंतरं णत्थि ।(गीतिः)
इगतीसाअ लहुगुरुअ सत्ताकालोऽत्थि लहुगुरुं कमसो ॥४०३॥
णत्थि चउअणणाणं, धुवसत्ताणंतरं असत्ताए ।
लहुगुरुसत्ताकालो, कमा लहुगुरुं दुतीसाए ॥४०४।
सव्वणिरयअणुत्तर-सुरेसु सत्ताअ सम्ममीसाणं ।
ओघव्व अंतरं लहु-मंतमुहुत्तं अणाण भवे ॥४०५॥
सेसाण अंतरं णो, छण्ह वि गुरुमूणजेट्ठकायठिई ।
णवरं देवे हवए, देसूणा एगतीसुदही ॥४०६॥
तिरिये अंतमुहूत्तं, लहुं अणाण गुरुमूणपल्लतिगं ।
ओघव्व सोलसण्हं, दुहा भवे णत्थि सेसाणं ॥४०७॥
तिपणिंदियतिरियेसुं तिरिव्व सव्वाण णवरि जेट्ठठिई ।
सम्मदुगस्सूणा गुरु-मंतमुहुत्तं चउदसण्हं ॥४०८॥
समयो लहुं णरतिगे, आहारसगस्स पुव्वकोडिपुहुत्तं ।(सकीर्णम्)
जेट्ठं सत्तरसण्हं, दुहा पणिंदितिरियव्व णऽण्णेसिं ॥४०९॥

ओघव्विगतीसाए, लहु दुपणिंदितसचक्खुसण्णीसुं ।
णऽण्णाण अणाणोघव्व गुरुमयरसयपुहुत्तमाऊणं ।४१०॥(गीतिः)

सम्मत्तमीसमोहग – नराउआहारसत्तगाण भवे ।
ऊणा गुरुकायठिई, अंतमुहुत्तं चउदसण्हं ॥४११॥

णवरि दुतसचक्खूसुं, सत्ताए अंतरं जेट्ठं ।
विउवेगारसगस्स य, संखेज्जसहस्सवासाणि ॥४१२॥ (उपगीतिः)

पणमणवयकायउरल-विउवकसाएसु सम्ममीसाणं ।
समयो लहुं ण व गुरुं, अंतमुहुत्तं ण सेसाणं ॥४१३॥

णवरि णरदुगुच्चाणं, काये ओघव्व विउववज्जासुं । (गीतिः)
आहारसगस्स लहुं, समयो सोलसु गुरुं मुहुत्तंतो ॥४१४॥

तीसोघव्व लहुं विण, णिरयाउं थीपुमेसु णऽण्णेसिं ।
सम्माउदुगाहारग-सगाण गुरुमूणजेट्ठकायठिई ॥४१५॥ (गीतिः)

ऊणपणवण्णपलिआ, थीअ अणाण पुरिसेऽत्थि ओघव्व ।
देवाउस्स तिपल्ला, अहियांतमुहुत्तमण्णेसिं ॥४१६॥

सव्वाणोघव्व णपुम-अजएसु भवे परं अणाण गुरुं ।
तेत्तीसुदही व ण, सुराउआहारसत्तगाण कमा ॥४१७॥ (गीतिः)

मणुयाउस्स तिणाणोहिसम्मखइएसु सहससरचुलसी । (गीतिः)
लहु वेअगे-ऽहियपलिय-मासु य गुरुमूणजलहितेत्तीसा ॥४१८॥

दुविहं देवाउस्स कमा-ऽपुहुत्तूणपुव्वकोडिसमा । (गीतिः)
आहारसगस्स खणूणछउमठिअगुरुठिई ण सेसाणं ॥४१९॥

ओघव्व अणाणदुगे, अभवे मिच्छे य आउगाणासु ।
अमणे य विउविगारम-णरदुगउच्चाण णऽण्णेसिं ॥४२०॥
सव्वाणोघव्व भवे, अचक्खुभविएसु मम्ममीसाणं । (गीतिः)
तहऽणाण छलेसासुं, लहुमोघव्व गुरुमूणजेट्ठठिई ॥४२१॥
परमूणिगतीसुदही, सुक्काअ लहु तिसु णरदुगुच्चाणं । (गीतिः)
आहारसगस्स य तिसु,समयो-ऽन्तमुहुत्त गुरु ण सेसाणं ॥४२२॥
मव्वाणाहारे लहु- मोघव्व अणतिरियाउग ण गुरुं ।
ऊणा गुरुकायठिई, छव्वीसाए ण सेसाणं ॥४२३॥
सव्वाण णत्थि अणगह, णवरि हवेज्ज दुविहं मुहुत्तंतो । (गीतिः)
तिरियमणुआउगाणम-पज्जपणिंदितमउरलमीसेसु ॥४२४॥
अप्पज्जपणिंदितिरिय-पणिंदितससमविगलतिकायेसु ।
तहुरलमीसे समयो, मणुयदुगुच्चाण होइ लहुं ॥४२५॥
जेट्ठं अंतमुहुत्तं, सिं एगिंदियसगे-लहुं समयो ।
गुरुमोघव्वेगक्खे, छसु ऊणा जेट्ठकायठिई ॥४२६॥
सव्वणिरयअणणुत्तर-देवछलेसासु सम्ममीसाणं ।
पल्लासंखियभागो, जहण्णमंतरमसत्ताए ॥४२७॥
अंतमुहुत्तमणाणं, छण्ह वि गुरुमूणजेट्ठकायठिई । (गीतिः)
णवरि सुरे सुक्काए, ऊणिगतीसजलही ण सेसाणं ॥४२८॥
मिच्छाउतिगाहारग- सगाण तिरिये ण चउअणाण दुहा ।
ओघव्व लहुं पल्ला-संखंसो सोलसेसाणं ॥४२९॥

विउव्वेगारसगस्स उ, गुरुमवि सो होइ सम्ममीसाणं ।
अहियतिपल्ला णरदुग-उच्चाणोघव्व विण्णेयं ॥४३०॥
तिपणिंदियतिरियेसुं, तिरियव्व लहुमणसम्ममीसाणं ।
ऊणा गुरुकायठिई, गुरुं ण सेसपणवीसाए ॥४३१॥
लहुमोघव्व णरतिगे, चउवीसाउ अणसम्ममीसाणं ।
छण्ह भवे उक्कोसं, देसूणा जेट्ठकायठिई ॥४३२॥
विउव्वेगारसगस्स उ कोडिपुहुत्तं हवेज्ज पुव्वाणं ।
पल्लासंखियभागो, आहारसगस्स णऽण्णेसि ॥४३३॥
दुहिगक्खे काये लहु-मेगक्खसुहुमियरेसु तिरियव्व ।
णरदुगउच्चाण गुरुं, ऊणगुरुठिई ण सेसाणं ॥४३४॥
दुपणिंदितसेसु दुहा, सम्मदुगाहारसगतिआऊणं । (गीतिः)
अणतिरियाउविउविगाणणराणुपुव्वीण य लहुमोघव्व ॥४३५॥
णऽण्णाणऽहियतिपल्ला, तिरियाउस्स गुरुमूणजेट्ठठिई ।(गीतिः)
सेसाणेवं णयणे, ण सुरदुगविउव्वसगाणुपुव्वीणं ॥४३६॥
पल्लासंखियभागो, हवेज्ज आहारसत्तगस्स लहुं ।
एवं चक्खुव्व अहव, पणिंदियव्वऽत्थि सण्णिम्मि ॥४३७॥
लहुमणसम्मणिरयदुग-तिआऊणोघव्व थीपुमेसु दुहा ।
पल्लासंखियभागो, आहारसगस्स णऽण्णेसिं ॥४३८॥
गुरुमूणगुरुठिई अण-णिरयदुगाणऽहियतिपलियाऊणं ।
दोण्हऽहियगुरुभवठिई, सेसाण पुमे सिमोघव्व ॥४३९॥

लहुमोघव्व णपुंसे, अणमस्समणिरयदुगाउगतिगाणं ।
सुरदुगविउव्वसगमणुय-दुगुच्चगोआण तिरियव्व ॥४४०॥
आहारसगस्स दुहा इत्थिव्व ण सेसपंचवीसाए ।
गुरुमब्भहिया अयरा, तेत्तीसा सम्ममीसाणं ॥४४१॥
अब्भहियं पुव्वाणं, कोडिपुहुत्तं भवे णराउस्स ।
सेसाण सजोगाणं वीसाए होइ ओघव्व ॥४४२॥
मणुयाउस्स तिणाणोहिसम्मखइएसु वेअगे य लहुं ।
वासपुहुत्तं जेट्ठं, छमासहियपुव्वकोडी उ ॥४४३॥
देवाउस्स जहण्णं साहियपलिओवमं मुणेयव्वं ।
गुरुमत्थि पुव्वकोडिति-भागहिया जलहितेत्तीसा ॥४४४॥
पल्लासंखियभागो, पंचसु आहारसत्तगस्स दुहा ।
सम्मखइएसु दुविहं, णरव्व सत्तसु वि णऽण्णेसिं ॥४४५॥
णवरि जिणस्स जहण्णं, अब्भहियसहस्सवासचुलसीई ।
सम्मखइएसु जेट्ठं, तेत्तीसा सागराऽब्भहिया ॥४४६॥
ओघव्व अणाणदुगे, अभवे मिच्छे तिआउगाण दुहा ।
विउवेगारसगमणुय-दुगुच्चगोआण गुरु तिरिव्व लहुं ॥४४७॥
लहुमोघव्व सुराउ-स्सिगतीसयराऽहिया-ऽण्णमजए वि ।
होइ सिमेवं छण्ह तु, णपुमव्वऽण्णाण चउसु वि णो ॥४४८॥
आहारसगस्स लहुं, विण्णेयं संजमे मुहुत्तंतो ।
ऊणा गुरुकायठिई, गुरुमण्णाणंतरं णत्थि ॥४४९॥

सप्पाउग्गाणंतर-मचक्खुमग्गयेसु होइ ओघव्व ।
णवरं जिणस्स ण पलिय-असंखभागो अचक्खुम्मि ॥४५०॥
होइ लहुं णरसुरदुग-विउव्वाहारमणुउच्चगोआणं ।
अमणे ण सम्ममीसमति-आउगआहारगमणाणं ॥४५१॥
पल्लासंखंसो सुर-णिरयदुगविउवमणाण होइ दुहा ।
तिरियव्व भवे दुविहं, मणुस्सदुगउच्चगोआणं ॥४५२॥
लहुमोघव्वाहारे, सम्मणिरयजुगलचउअणाऊणं ।
णपुमव्व उ णरसुरदुग—विउव्वाहारमणुउच्चाणं ॥४५३॥
णऽण्णाण भवे जेट्ठं, चउअणतिरियाउणरदुगुच्चाणं ।
ऊणा गुरुकायठिई, तेत्तीसाएऽत्थि ओघव्व ॥४५४॥
सप्पाउग्गाणंतर-मण्णह सव्वाण णत्थि णवरि दुहा ।
आऊण मुहुत्तंतो,असमत्तपणिंदियतसेसु ॥४५५॥

(हे.चू.) "सत्ताअ"इच्चाइ, तेवण्णगाहा अंतरदारसंबंधिणी। तत्थ ओघत्तो एगाअ गाहाअ सत्ताअ, अण्णाअ असत्ताअ आएसत्तो बावीसाअ सत्ताअ एगूणतीसाअ गाहाहिमसत्ताअ अंतरं णिरूविदं ।

ओहा-ऽऽएसेहिं जाण सत्ता असत्ता य सकयं लब्भवे ताण कमसो सत्ताअ असत्ताअ य अंतरं णत्थि। सामाणदाअसत्ता कालसमं सत्ताअ अंतरं दुविहं होदि, सत्ताकालतुल्लं य असत्ताअ अंतरं दुविहं भवदि णामंतरेण अविसेसादु । केवलमिह सादिसंतभंगगदो च्चेव कालो अदिदिट्ठो बोहव्वो, अंतरस्स तहत्तणादु। कत्थ वि समाणत्तणे वि किञ्चिविसेसो, कत्थ वि उण विसेसो वि ।

तह जत्थ कालो गुरुकायट्ठिदिआदी उत्तो तत्थ अंतरं जहसंभवं गुरुकायट्ठिदिआदि देसूणं भणिदव्वं पारंभताण अंतरे अलाहादु। तं जहा-सव्वणिरयअपज्जत्तवज्जपणिंदियतिरियतिग-णरतिग भवण-वदि-वंदर-जोदिस-दुवालसकप्प-णवगेविज्जगसुर-अपज्जत्तवज्ज-पंचिंदियदुग-तसदुग-थीपुमवेअदुग-चक्खदरिसण-लेसाछक्क-सण्णि-आहारिमग्गणासु तेवण्णाअ सम्मत्त-मिस्समोहाण देसूणगुरुकाय-ट्ठिदी, तिरियोह-पणिंदियतिरिय-पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्ख-मणु-स्सोह-पज्जत्तमणुस्समग्गणासु पचसु अणंताणुबंधिचदुगस्स देसूण-पल्लतिगं, दुवालसकप्पसुर-णवगेविज्जगसुर-तेउलेसा-पउमलेसा-मग्गणासु तेवीसाअ अणंताणुबंधिचउक्कस्स देसूणजेट्ठकायट्ठिदी, पणिंदियोह-पज्जत्तपणिंदिय-तसकायोह--पज्जत्ततसकाय-थी--पुम चक्खु-सण्णि-आहारिमग्गणासु नवसु णराउ-आहारसत्तगाण देसू-णुक्कोसकायट्ठिदी आहारिमग्गणाअ णिरयाउ-सुराउ-वेउव्वेगारसग-णरदुग-उच्चगोदाण वि देसूणजेट्ठकायट्ठिदी गुरुसत्तंतरं होदि।

एवं सव्वणिरय-पणिंदियतिरियोह पज्जत्तपणिंदियतिरिय-तिरश्ची-मणुस्सोह-पज्जत्तमणुस्स-माणुसी भवणवइआदिगेविज्जग-पज्जंतसुर-सुक्कवज्जलेसापंचगलक्खणासु तिचत्तालीसाअ मग्गणासु सम्मत्तमोहणीय-सम्मामिच्छत्तमोहणीया-ऽणंताणुबंधिचदुगाण छण्ह, एगिंदियोह-सुहुमेगिंदियोह-बायरेगिंदियोह-कायजोगमग्गणाचदुगे मणुयदुगुच्चगोदाण पंचिंदियोह-पज्जत्तपंचिंदिय-तसकायोघ-पज्जत्त-तसकायमग्गणाचदुगे अणंताणबंधिचदुग-वेउव्वेगारसग-मणुआणु-पुव्वीण, थीवेद-पुंवेद-चक्खु-सण्णिमग्गणाचदुगे अणंताणुबंधि-चदुगस्स संजममग्गणाअ आहारगसत्तगस्स देसूणुक्कोसकायट्ठिदी उक्कोससत्तंतरं भवदि।

विसेसदो पुण तिरियोहमग्गणाअ सम्मत्तमोह-मिस्समोहाण णपुंसगवेदमग्गणाअ सम्मत्त-मीसमोहणीया-ऽऽहारगसत्तगाण असंजम-

मग्गणाअ आहारसत्तगस्स गुरुसत्तंतरं देसूणाद्धपुग्गलपरावत्तमाणं भवदि, एयस्संतकम्माण अदो अहिगकालस्स संसारे अणवट्ठाणादो, सत्ताकालस्स पुण अप्पत्तसम्मत्तं पडुच्च गुरुकायट्ठिदिमत्ततणादो य।

णरमग्गणातिगे आहारगसत्तगस्स गुरुसत्तंतरं पुव्वकोडिपुहुत्तमाणं भवदि, जुगलिगभवे बंधाभावेण णूतणसत्ताअ अलाहादो, असत्ताकालस्स उ जुगलधम्मिगभवे वि लाहादो।

देवोह-सुक्कलेसामग्गणादुगे सम्मत्त-मीसा-ऽणंताणुबंधिचदुगाण गुरुसत्तंतरं देसूणेगतीससागरोवमाइं, णवमगेविज्जगसुरं पडुच्च य्येव सत्तंतरलाहादु, असत्ताकालस्स उण लद्धअसम्मदिट्ठि णुत्तरसुरमासिज्ज तेत्तीससागरोवमाण भावादु।

कायजोग-ओरालियकायजोगमग्गणादुगे सम्मत्त-मीसाऽऽहारगसत्तगाण गुरुसत्तंतरं अंतमुहुत्तं भवदि, सण्णीण य्येव पत्थुयंतरलाहे सदि जोगपरावत्तित्तणेणाहियंतरकालस्स असंभवादु, असत्ताकालस्स पुण तदसंतकम्मिगेगिंदियजीवं समासिज्ज गुरुकायट्ठिदिलाहादो।

थीवेदमग्गणाअ तिरियाउस्स णपुंसगवेअमग्गणाअ णिरयाउतिरियाऊण जहण्णसत्तंतरमंतमुहुत्तं भोदि, तदो णूणस्स असंभवादो. असत्ताकालस्स उण मग्गणाजहण्णकायट्ठिदित्तो समयमत्तस्स लाहादु। एवमेव पत्थुयमग्गणादुगे वि अणंताणुबंधिचदुगस्स जहण्णसत्तंतरं पि अन्तमुहुत्तं भवदि।

वेदमग्गणातिगे वि णराउस्स जहण्णसत्तंतरस्स जहण्णासत्ताकालस्स य अंतमुहुत्तमिदे वि ण तुल्लदा, णपुंसगे खुड्डगभवदुतिभागरूवत्तणादो, दोसु य जहण्णाउपज्जत्तभवदुतिभागत्तणादो। एवं थीवेदपुंवेदमग्गणादुगे सुराउस्स पुंवेदमग्गणाअ तिरियाउस्स वि। एवमण्णत्थ वि। एवमेव अपज्जत्तपंचिंदिया-ऽपज्जत्ततसकाय-

मग्गणादुगे दुविहमसत्तंतरं पि बुज्झं, सद्दसम्मे वि अत्थदो विसेसो विज्जदे। एवमण्णत्थ वि।

मदिणाण-सुदणाणा-ऽवधिणाणा-ऽवधिदरिसण-सम्मत्तसामण्ण-खाइअसम्मत्तमग्गणाछक्के णराउस्स चुलसीदिसहस्सवासाणि खओव-समसम्मत्तमग्गणाअ साधिगपल्लोवमं सत्तसु वि सुराउस्स वासपुहुत्तं जहण्णसत्तंतरं भोदि मग्गणाछक्के पुव्वबद्धणिरयाउगस्स पच्छाऽवत्त-खइअसम्मत्तस्स जहुत्तजहण्णठिइगणिरये उप्पादादो वेअगसम्मत्तो पुण जहुत्तजहण्णट्ठिदिगसुरे उप्पत्तिदो, खइअसम्मत्तमग्गणाअ सुराउस्स सत्तंतरं दुप्पहसूरिआइव्व पंचभवकरणाविक्खाअ, अण्णहा णत्थि। पंचभवकरणाविक्खाअ वि गुरुसत्तंतरं सयं णेयं। असंजम-मग्गणाअ अणंताणुबंधिचदुगस्स गुरुसत्तंतरं देसूणतेत्तीससागरोव-माणि हवदि, सत्तमणिरयाविक्खाअ तहालाहादो असत्ताकालस्स उण अणुत्तरसुर-तदुत्तरभवत्तिखइअसम्मद्दिट्ठिमहिकिच्च साहिग-तेत्तीससागरोवममाणत्तादु।

सुहलेसामग्गणात्तिगे आहारसत्तगस्स जेट्ठसत्तंतरमंतमुहुत्तं होदि, मणुआणमेव तल्लाहादो, असत्ताकालस्स उ देवा पडुच्च जिट्ठकायट्ठिदिलाहादो सव्वणिरय-सुरोह-भवणवदिपहुदिगेविज्जय-पज्जंतसुर-- तिरियोह--पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्तपणिंदियतिरिक्ख-तिरच्छी-लेसाछक्कलक्खणासु तिचत्तमग्गणासु सम्मत्तमीसमोहाण, तिरियोह-णपुंसगवेद-मइअणाण-सुअणाणा-ऽसंजम-मिच्छत्ताऽसण्णि-रूवासु सत्तसु मग्गणासु वेउव्वेगारसग-मणुयदुग-उच्चगोदाण, एगिं-दियोह-सुहुमेगिंदिय-बायरेगिंदिय-कायजोगलक्खणासु चदुसु मग्गणासु मणुयदुग-उच्चगोदाण वेदत्तिग-चक्खु-सण्णिरूवासु पंचसु मग्गणासु आहारगसत्तगस्स, अचक्खुदरिसणा-ऽऽहारिमग्गणादुगे णरदुग-सुरदुग--वेउव्वियसत्तगा--ऽऽहारगसत्तग--उच्चगोदाणमेगूणवीसाअ जहण्णासत्तंतरं पलिओवमासंखभागमिदं भवदि, उव्वलणाकालस्स

तहुत्तणादु, जहण्णसत्ताकालस्स पुण जहण्णेणं समयादिसत्तावसेसे पगदमग्गणापवेसेण समयादिमित्तस्स लाहादो इत्थाववयणं।

सत्तमवज्जसव्वणिरय—पंचिंदियतिरिक्ख—पज्जत्तपंचिंदिय-तिरिक्ख-तिरिक्खी-मणुयोह-पज्जत्तमणुय-माणुसी-सुरोह-भवणवदि-आदिणवमगेविज्जयंतसुर पंचिंदियोघ -पज्जत्तपंचिंदिय- तसकायोह-पज्जत्ततसकाय-थीवेद- पुंवेद णपुंसगवेद-चक्खुदंसण-- लेसाछक्क-सण्णि-आहारिलक्खणासु पणवण्णाए मग्गणासु अणंताणुबंधिचदुगस्स जहण्णमसत्तंतरं अंतमुहुत्तं, चदुवीसाए सत्ताठाणंतरस्स तहुत्तणादो, जहण्णसत्ताकालस्स उण सासणगुणठाणं समासिज्ज समयमत्तादि-लाहादो।

मणुयोह-पज्जत्तमणुय-मणुयजोणिणीमग्गणातिगे वेउव्वेगा-रसगस्स पंचिंदियोह-पज्जत्तपंचिंदिय-तसकाय पज्जत्ततसकायमग्गणा-चदुगे वेउव्वेगारसग-मणुयाणुपुव्वीण, वेअतिग-चक्खुदरिसण-सण्णि-आहारिरूवासु छसु मग्गणासु णिरयदुगस्सोघव्व सादिरेग-अट्ठवासाणि भोदि, उव्वलिआण मग्गणापारम्भे अंते जहसंभवं खवगसेढीअ अजोगिचरमसमये य असत्तालाहेणुत्तपयडीणमोघव्व असत्तंतरस्स पमाणादो, जहण्णसत्ताकालस्स पुण समयादिसत्तासेसे मग्गणंतरागमणेण मग्गणंतरभवणेण य समयादिमाणस्स कालस्स लाहादो।

मणुयोह-पज्जत्तमणुय-मणुयजोणिणी- पंचिंदियोघ पज्जत्तपंचिं-दिय- तसकायोह- पज्जत्ततसकाय -वेअतिग-चक्खुदरिसण--सण्णि--आहारिमग्गणासु तेरससु सम्मत्तमोहणीयाणं जहण्णमसत्तंतरमंत-मुहुत्तं होदि सम्मत्तपत्तीअ जाअसंतकम्माण जहसिग्घमंतमुहुत्तेण खइअसम्मत्तपत्तीअ पुणो वि असंतकम्मत्तणादु, जहण्णसत्ताकालस्स तु मग्गणंतरागआविक्खाअ समयमत्तस्स लाहादो।

देवोघ-सुक्कलेसामग्गणादुगे सम्मत्तमोहणीय-मिस्समोहणीया-ऽणंताणुबंधिचदुगाण छण्ह जेट्ठमसत्तंतरं देसूणेगतीससागरोवमाणि, णवमगेविज्जयसुरास्सयेण इह जहुत्तंतरस्स संभवादो सत्ताअ पुण कालस्स अणुत्तरसुराविक्खाअ तेत्तीससागरोवमलाहादो ।

पंचिदियोघ--पज्जत्तपंचिदिय-तसकायोह-पज्जत्ततसकाय-संजमोघ-खइअसम्मत्तमग्गणाछक्के आहारगसत्तगस्स जहण्णमसत्तंतरं अंतमुहुत्तं भोदि, सत्तालाहे सदि अंतमुहुत्तेण पुण अजोगिदुचरमसमये विच्छेदादो, जहण्णसत्ताकालस्स तु मग्गणंतरगमणेण समयमत्तस्स वि संभवादो ।

थीवेद-पुंवेद मदिअणाण-सुअणाणा-ऽसंजम-मिच्छत्ता-ऽऽहारिमग्गणासत्तगे सुराउस्स, णपुंसगवेद-मदिअणाण-सुदअणाणा-ऽसंजम-मिच्छत्ता-ऽऽहारिमग्गणाछक्के णिरयाउस्स य साहियदससहस्सवासाणि, वेदमग्गणातिगे णराउस्संतमुहुत्तं, मदिणाण-सुदणाणोहिणाणो-धिदसण-खओवसमसम्मत्तमग्गणापंचगे णराउस्स वासपुहुत्तं जहण्णमसत्तंतरं भवदि. साबाधाउजहण्णट्ठिदीअ तहत्तणादो ।

णपुंसगवेदा ऽसंजममग्गणादुगे अणंताणुबंधिचदुगस्स जेट्ठमसत्तंतरमोघव्व देसूणद्धपुग्गलपरावत्तो हुवदि, ओहत्तो विसेसस्स अभावादो, गुरुसत्ताकालस्स पुण धुवसत्तारागेण गुरुकायट्ठिदिमाणादो विसेसभणणं ।

मदि-सुदा-ऽवधिणाणतिगा-ऽवधिदरिसण--खओवसमसम्मत्तमग्गणापचगे णराउस्स गुरुअसत्तंतर सादिरेगपुव्वकोडिवासाणि, गुरुठिदिबंधपमाणस्स तहत्तणादु, गुरुसत्ताकालस्स उण जुगलिअं पडुच्च साहियपल्लोवमत्तिगमाणत्तणादु ।

असंजममग्गणाअ सुराउस्स जेट्ठमसत्तंतरं एगतीससागरोवमाणि, उक्कोसठिदिबंधस्स तत्तिअमेत्तादो, गुरुसत्ताकालस्स उ अणुत्तरसुराविक्खाअ तेत्तीससागरोवमप्पमितादो ॥४०३-४५५॥

॥ अथ षष्ठं सन्निकर्षद्वारम् ॥

संपदं छट्ठं सण्णिकरिसदुवारं कहिज्जइ—

पणणाणावरणाओ, संते एगस्स णियमओऽण्णेसिं ।
सत्ता विग्घाणेवं, बीआवरणचउगेगस्स ॥४५६॥
संतेऽण्णतिण्ह णियमा, पणणिद्दाणं व णिद्दुगसंते ।
थीणद्धितिगस्स सिआ, सत्ता पंचण्ह णियमाऽत्थि ॥४५७॥
संते एगस्स भवे, थीणद्धितिगाउ णियमओऽट्ठण्हं । (गीतिः)
संते वेआणेगस्सऽण्णस्स सिआ तहेव गोआणं ॥४५८॥
एगस्स दंसणतिगा, मोहे संते व दंसणछगस्स ।
णियमाऽण्णाण सिआ अण-संते सम्मत्तमीसाणं ॥४५९॥
णियमा-ऽण्णेसिं मज्झिम-कसायसंते व दंसणमगस्स ।
णियमाऽणाण सिआ चरमलोहसंतम्मि सव्वेसिं ॥४६०॥
अंतिममायाईणं, एवं णवरि णियमेगदुतिगाणं ।
संजलणाणंमिं पुम-संते णियमा सिआऽण्णेसिं ॥४६१॥
हस्सछगदुवेआणं, एवं णवरि पुमहस्सछक्काणं ।
णियमा थीअ उण णपुम-संते णियमा भवे सत्ता ॥४६२॥
णारगदेवाऊओ, संते एगाउगस्स ण व भवे ।
इयराउगस्स सत्ता, तिरिक्खमणुयाउगाण सिआ ॥४६३॥
तिरियणराउगसंते, सिआ तिआऊण णिरयदुगसंते ।
वाऽऽहारगसत्तगसुर-दुगतित्थाण णियमाऽण्णेसिं ॥४६४॥
सत्ता व णिरयणरसुर—दुगविउवाहारसत्तगजिणाणं ।
सेढिखयंतेगारस-संते सेसाण णियमा-ऽत्थि ॥४६५॥

णरदुगपणिंदितसतिग-सुहगा ऽऽदेय-जस-तित्थणामाओ। (गीतिः)
संते एगस्स भवे, जिणवज्जाण णियमा सिआ-ऽण्णेसिं ॥४६६॥
णवरि णरदुगस्स सिआ, णरदुगजिणरहिअसेससगसंते।
णरगइजिणसंतम्मि व, णराणुपुव्वीअ णियमा ऽण्णे ॥४६७॥
सुरदुगसंते तेरस—णामजिणाहारसत्तगाण सिआ। (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाणं वं सग-विउव्वाणं णवरि सुरदुगस्स सिआ॥४६८॥
आहारसत्तगस्स उ, संते वा तेरणामतित्थाणं।
णियमाऽण्णेसिं संते; एगाए सेसणामाणं ॥४६९॥
तेरसणामसणुयसुर—दुगविउव्वाहारसत्तगजिणाणं।
अत्थि सिआ सेसाणं, सत्तगिणामाण णियमाऽत्थि ॥४७०॥
ओघव्व मणिजयासो, हवेज्ज सव्वासु पढमचरमाणं।
तिणरदुगणिंदितसतण-मणवयकायउरलेसु तहा ॥४७१॥
सयवेए अकसाये, णाणचउगसंजमेसु अहखाए।
दरिसणतिगसुक्कभविअ-सम्मखइअसण्णआहारे ॥४७२॥
णवबीआवरणाणं, ओघव्व तिवेअचउकसायेसु।
समइअछेएसु तहा, सुहुमे थीणद्धियतिगस्स ॥४७३॥
बीआवरणऽण्णछगा, संते एगाअ णियमओ सत्ता।
सेसाणं पंचण्हं सिआ उ थीणद्धियतिगस्स ॥४७४॥
सेसासु मग्गणासुं, बीआवरणणवगाउ एगाए।
संते णियमा सत्ता, हवेज्ज सेसाण अट्ठण्हं ॥४७५॥

तिमणुयदुपणिंदियतस-अवेअअकसायकेवलदुगेसु ।
संजमअहखाएसु, भविसम्मेसु खइए अणाहारे ॥४७६॥ (गीतिः)
सत्तरसु सण्णियासो, ओघव्व हवेज्ज वेअणीअस्स ।
संते एगस्सऽण्णह, पडिवक्खस्स णियमा सत्ता ॥४७७॥
संते साउस्स चरम-वज्जणिरयअट्ठसंतदेवेसु ।
दोण्ह सिआ सि संते, णियमा साउस्स णऽण्णस्स ॥४७८॥
चरमणिरयअसमत्तपणिंदितिरिणराणयाइदेवेसु ।
सव्वेसु एगिंदिय-विगलिंदियभूदगवणेसु ॥४७९॥
आहारदुगे सुहमे, अवेअअकसायतुरिअणाणेसु ।
परिहारे अहखाए, साउगसंते सिआऽण्णस्स ॥४८०॥
नियमाऽत्थि इयरसंते, साउस्स तिरितिपणिंदितिरियेसु ।
तिमणुयसंजमसमइअ-छेएसु तहा असण्णिम्मि ॥४८१॥
सत्ताऽत्थि साउसंते, सेसाणं तिण्ह आउगाण सिआ ।
सेसाउगस्स संते, णियमा साउस्स ण-ऽण्णेसिं ॥४८२॥
संते एगाउस्स अ-पज्जपणिंदितसउरलमीसेसु । (गीतिः)
सेसाउस्स सिआ ण उ, सव्वागणिवाउकेवलदुगेसु ॥४८३॥
णिरयसुराऊण सिआ, विउवे एगस्स तिरिणराऊओ ।
संते णियरस्स भवे, णिरयसुराऊण ओघव्व ॥४८४॥
एगस्सा-ऽऽउस्स विउव-मीसे कम्मे तहा अणाहारे ।
संतम्मि णत्थि सत्ता, सप्पाउग्गाण सेसाणं ॥४८५॥

ओघव्वाऽण्णासु णवरि, खइए णिरयतिरियाउगाहिन्तो ।
एगाउगस्स संते, सत्ता णेव इयराउस्स ॥४८६॥

सत्ता सव्वेसु तिरिय-एगिंदियविगलपंचकायेसुं ।
असमत्तपणिंदियतस–कायोरालदुगकम्मेसुं ॥४८७॥
वेअतिगकमायचउग-दुअणाणाजयअचक्खुचक्खूसुं ।
मिच्छकुलेसाअभविय-सण्णिअसण्णीसु आहारे ॥ ८८॥
णीअस्स उच्चसंते, णियमा णीअस्स अत्थि ओघव्व ।
णोआण य दुपणिंदिय-तसेसु भविये अणाहारे ॥४८९॥
उच्चस्सोघव्व तिणर-अवेअअकसायकेवलदुगेसुं ।
संजमअहखाएसुं, सम्मत्ते खाइए णेयो ॥४९०॥
उच्चस्स णीअसंते, णियमा सत्ता हवेज्ज सेसासुं ।
अण्णयरगोअसंते, णियमा सेसस्स गोअस्स ॥४९१॥

आघव्व णिरयपढमति-णिरयतिरिक्खदुपणिंदितिरियेसुं ।
सुरबारसकप्पगणव-गेविज्जदुमीसजोगेसुं ॥४९२॥
कम्मअजयकाऊसुं, तेओपम्हासु तह अणाहारे ।
दंसणसगस्स णवरं, अजयपउमतेउवज्जासुं ॥४९३॥
मिच्छस्स मिस्ससंते, णियमा वीसाअ सेसइगसंते । (गीतिः)
दंसणसगस्स उ सिआ,सेसणिरयभवणतिगतिरिच्छीसुं ॥४९४॥
णिरयव्व णवरि णियमा-ऽत्थि सम्मसंतम्मि मिच्छमीसाणं ।
बारसकसायणवणो-कसायसंते उ मिच्छस्स ॥४९५॥

सत्ता-ऽत्थि अपज्जत्तग-पणिंदितिगिणरपणिंदियतसेसु ।
सव्वेगिंदियविगलपणकायतिअणाणमिच्छअमणेसु ॥४९६॥(गीतिः)
सेसाण सम्मसंते, णियमा सम्मस्स मिस्ससंते वा ।
णियमा-ऽण्णाण व सेमिग-संते दोण्ह णियमाऽण्णंमि ॥४९७॥
मोहस्सोघव्व भवे, दुणरपणिंदितसदणमणवयेसु । (गीतिः)
कायउरलत्लोहणयण-अणयणसुक्कभविसण्णिआहारे ॥४९८॥
ओघव्व माणुसीए, णवरं णियमा हवेज्ज पुमसंते ।
हस्सछगस्स अणुत्तर-सुरेसु एगअणगंतम्मि ॥४९९॥
सगवीसाए णियमा, णिरयव्वऽण्णाण णवरि णियमाऽत्थि ।
दंसणमोहदुगस्स उ, सत्ताए मिच्छमीसाणं ॥५००॥
एवं आहारदुगे, णिरयव्व विउव्वकिण्हणीलासु ।
णवरं पंचसु वि भवे, चउत्थणिरयव्व सम्मस्स ॥५०१॥
थीअ णपुंसगसंते, णियमा संजलणणोकसायाणं ।
सेसाण सिआ अडणो-कसायसंजलणचउगाओ ॥५०२॥
इगसंते एगारस-तस्सेसाण णियमा सिआ-ऽण्णेसिं ।
सेसाणोघव्वेवं, णपुमे णवरि णपुमस्स धुवा ॥५०३॥
पुरिसे अडवीसाए, मोहाणोघव्व णवरि हस्सव्व ।
चउसंजलणपुमाणं, हवेज्ज पुरिसव्व अण्णमए ॥५०४॥
गयवेए अकसाये, अहखाए होइ दंसणसगस्स ।
आहारदुगव्व णवरि, सयंतरेण अणवज्जाणं ॥५०५॥

इगवीसाअ अवेए, ओघव्व हवेज्ज दोसु णिरयव्व ।
परमेगमए तीसु वि, सत्ता णत्थि अणचउगस्स ॥५०६॥
इत्थीणपुंससंते मज्झकसायट्ठगस्स गयवेए ।
णियमा सत्ता णेया, इत्थीसंते णपुंसस्स ॥५०७॥
मोहाणोघव्व भवे, कोहाइतिगे परं कमा णयमा ।
तिदुइगसंजलणाणं, चउतिदुसंजलणसंतम्मि ॥५०८॥
दंसणमगस्स चउणाणसंजमसमइअच्छेअओहीसुं । (गीतिः)
सम्मं अणुत्तरव्व उ, णवरं मिच्छस्स मिस्ससंते वा ॥५०९॥
सेसाणोघव्व भवे, परिहारे देसवेअगेसुं च ।
ओहिव्व भवे दंसण-सगस्स णिरयव्व सेसाणं ॥५१०॥
णवरं णेया बारस-कसायणवणोकसायसंतम्मि ।
वेअगसम्मे णियमा, सत्ता सम्मत्तमोहस्स ॥५११॥
सुहमे दंसणसंते, णियमाऽणाणंतलोहसंते वा ।
सेसिगसंते सत्ता, व दंसणाण णियमा-ऽणंसिं ॥५१२॥
अभवियमासाणेसुं, णियमा सेसाण एगसंतम्मि ।
खइए णियमिगमज्झिम-कसायसंते-ऽणवीसाए ॥५१३॥
सेसाणोघव्व भवे, अणुत्तरव्वुवसमे अणाण भवे ।
सेसिगसंते सत्ता, सिआ अणाण णियमा-ऽण्णेसिं ॥५१४॥
मीसे सव्वाण भवे, उवसमसम्मव्व णवरि सव्वत्थ ।
सम्मस्स सिआ एगे, बिंति उवसमव्व णियमा से ॥५१५॥

जिणसंते णिरयज्जति-णिरयविभंगेसु णत्थि सत्तण्हं ।
णियमा-ऽण्णाणा-ऽऽहारग-सत्तगसंते ण तित्थस्स ॥५१६॥

णियमाऽण्णेसिं सेसिग संते वा-ऽऽहारसत्तगजिणाणं । (गीतिः)
णियमा सेसाणेवं, जिणं विणा-ऽण्णणिरयेसु भवणतिगे ॥५१७॥

सव्वतिरियएगिंदिय- विगलिंदियपंचकायअमणेसुं ।
असमत्तपणिंदितसेसु सुरदुगाहारसत्तगाण सिआ ॥५१८॥ (गीतिः)

णारगदुगसंते खलु, णियमा सेसाण देवदुगसंते । (गीतिः)
णियमाऽत्थि दुणवईए, णिरयदुगाहारसत्तगाण सिआ ॥५१९॥

विक्कियसगसंते सुर-णिरयदुगाहारसत्तगाण सिआ । (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाणा-ऽऽहारग सत्तगसंतम्मि णियमओऽण्णेसिं॥५२०॥

विउवाहारगसत्तग-णिरयसुरदुगाण व णरदुगसंते । (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाण व सेसिग-संते वीसाअ णियमओ ऽण्णेसिं ॥५२१॥

ओघव्व तिमणुएसुं,णामाण अपज्जतिरिपणिंदिव्व । (गीतिः)
असमत्तणरे णवरं, चउसु वि सव्वत्थ णरदुगं णियमा ॥५२२॥

सेससुरेसु विउवदुग-परिहारगदेसतेउपम्हासुं । (गीतिः)
वेअगुवसमेसु सिआ, आहारगसत्तगस्स जिणसंते ॥५२३॥

णियमा-ऽण्णाणाहारग-सत्तगसंते जिणस्स वा-ऽण्णेसिं ।
णियमा सेसिगसंते, वा अट्ठण्ह णियमा-ऽण्णेसिं ॥५२४॥

णामाणं दुपणिंदिय-तसभव-ऽणाहारगेसु ओघव्व । (गीतिः)
ओघव्व पणमणतिवय-चउणाणेसु तह समइए छेए ॥५२५॥

सुहमावहिसुक्कासु, आहारसगस्स तित्थसंते वा ।
तेरसणामा-ऽऽहारग-सगाण णियमा-ऽत्थि सेसाण ॥५२६॥

तेरसणामिगसंते, सिआ जिणाहारसत्तगाण भवे ।
णियमा-ऽण्णाण सेसिग-संते वि सिएगवीसाए ॥५२७॥
ओघव्व कायुरालिय-दुगकम्मतिवेअचउकसायेसु ।
णयणेयरसण्णीसु, आहारे सुरदुगस्स तहा ॥५२८॥

विउवाहारगसत्तग-तेरसणामाण व णरदुगसंते ।
सुरदुगविउवाहारग---सत्तगजिणतेरणामाणं ॥५२९॥
णियमाऽण्णेसिं तेरस-णामाणाहारसत्तगस्स सिआ ।
जिणसंते सेसाणं, णियमा सेसेगसंतम्मि ॥५३०॥

जिणतेरणामणरसुर- दुगविउवाहारसत्तगाण सिआ । (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाणेमेव दु-वयेसु णवरि णियमा णरदुगस्स ॥५३१॥

आहारदुगे णेया, णियमा सेसाण तित्थयरसंते ।
सत्ता सेसिगसंते, सिआ जिणस्स णियमाऽण्णेसिं ॥५३२॥

गयवेए अकसाये, संजमअहखायसम्मखइएसु । (गीतिः)
मणुयव्व अजोगिचरम-खणणामाण मणव्व सेसाण ॥५३३॥
मणुयव्व केवलदुगे, अजोगिचरमसमयाण व जिणस्स ।
आहारगसगसंते, णियमाऽण्णाणण्णइगसंते ॥५३४॥

व जिणाहारसगाणं, सेसाणं णियमओ तिरिव्व भवे ।
दुअणाणअजयतिअसुह—लेसामिच्छेसु णामाणं ॥५३५॥

णवरि व जिणस्स सव्वह,वा-ऽऽहारगसत्तगस्स जिणसंते। (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाणा-ऽऽहारग-सत्तगतित्थाण तीसु णो जुगवं॥५३६॥

णिरयदुगस्स अभविये, सुरदुगसंते व णियमओऽण्णेसिं ।
एवं णिरयदुगस्स उ, हवेज्ज मणुयदुगसंतम्मि ॥५३७॥

सत्ता णिरयामरदुग—वेउव्वियसत्तगाण होइ सिआ ।
णियमाऽण्णाण विउव्विय-सत्तगसंतम्मि होइ सिआ ॥५३८॥

णारगदेवदुगाणं, णियमा-ऽण्णाण इयरेगसंते वा ।
णिरयणरसुरदुगविउव्व-सगाण होइ णियमाऽण्णेसिं ॥५३९॥

मीसे तह सासाणे, आहारगसत्तगाउ इगसंते । (गीतिः)
णियमा-ऽण्णाण उ सेसिग संते आहारसत्तगस्स सिआ ॥५४०॥

विग्घणवावरणाओ, संते एगस्स अधुवसत्ताणं ।
पणणिद्दमोहतिरिदुग-जाइचउगथावरायवदुगाणं ॥५४१॥ (गीतिः)

साहारणस्स य सिआ, णियमा सडमीइसेसपयडीणं ।
एमेव दुणिद्दाणं, णवरं णियमाऽण्णएगाए ॥५४२॥

थीणद्धितिगतिरियदुग—जाइचउगथावरायवदुगाओ ।
साहारणा य संते, अण्णयराअ इगपयडीए ॥५४३॥

सत्ता सिआ हवेज्जा मिच्छअणचउक्कअधुवसत्ताणं ।
णियमा-ऽण्णाणऽण्णमए, सिआऽत्थि मज्झिमकसायाणं ॥५४४॥

इगवेअणीअसंते, णियमा-ऽत्थि पणिंदितसतिगाण तहा ।
सुहगा-ऽऽएज्जजसाणं, सिआ-ऽण्णवण्णाहियसयस्स ॥५४५॥

दुदरिमणमोहचउअण-आउगआहारसत्तगजिणाणं ।
सम्मत्तमीससंते, सिआ हवेज्ज णियमा-ऽण्णेसिं ॥५४६॥

सेसेगमोहसंते, मोहसठाणव्व होइ सेसाणं । (गीतिः)
धुवसत्ताणं णियमा, सिआ छवीसाअ अधुवसत्ताणं ॥५४७॥

थीणद्धितिगतिरियदुग-जाइचउगथावरायवदुगाणं । (गीतिः)
साहारणस्स वि सिआ, संजलणतिवेअहस्सछगसंते ॥५४८॥

मज्झिमकसायअट्ठग-संते वि य केइ सिं चउदसण्हं ।
णिरयसुराउगसंते, व दंसणाहारसत्तगजिणाणं ॥५४९॥ (गीतिः)
सट्ठाणव्वाऊणं, णियमाऽण्णाण तिरियाउसंते उ । (गीतिः)
ण जिणस्स सिआ अद्धुव-संतऽणमिच्छाण णियमओऽण्णेसिं ।५५०।

णरगइपणिंदितसतिग-सुहगादेयजसउच्चगोआणं । (गीतिः)
णियमा णराउसंते-ऽण्णे अणुपुव्वीअ वि य सिआऽण्णे सिं ॥५५१॥

णरगइपणिंदितसतिग-सुहगादेयजसतित्थउच्चाणं । (गीतिः)
एवं णवरि णराउस्स सिआ उच्चस्स उ णरगइसंते ॥५५२॥

णरगइउच्चाण उ सग-पणिंदिसंते सिआ ण जिणसंते ।
तिरियाउस्स णरगइव्व केइ उ णराणुपुव्वीए ॥५५३॥

व दंसणाहारसगजिणाउसुरदुगाण णिरयदुगसंते ।
अट्ठकसायाण वि इग-मए सिआऽत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥५५४॥

सुरदुगविउवाहारग--सत्तगसंते भवे सठाणव्व ।
णामाण सिआ आउग-घाईणऽत्थि णियमा-ऽण्णेसिं । ५५५॥

घाइअधुवसत्ताणं,तिरियेगारसगणामपयडीण ।
सेसिगसंतम्मि सिआ, सत्ता अत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥५५६॥

मोहाण मोहसंते, सट्ठाणव्वऽखिलणिरयदेवेसु । (गीतिः)
सियराउजिणाहारग-सगाण वा-ऽत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥५५७।
सेसाण पुमव्व णवरि, तिरियाउजिणाण ण जुगवं सत्ता (गीतिः)
सव्वह सियराऊण वि, मिच्छम्मऽत्थि तिरियाउसइ णियमा॥५५८॥

सियराउगआहारग--सगाण बियणिरयजोइसाईसु ।
ण जुगवमाहारगसग-जिणाण णिरयेऽज्जणिरयतिगे ॥५५९॥

णियमा-ऽऽहारगसगसइ, सम्मदुगस्स चउणिरयभवणतिगे ।
दुइआइदुगे वि परे, तिरितिपणिंदितिरिअमणेसु ।५६०।
सम्मत्तमीससंते, मोहाण सठाणगव्व होइ सिआ ।
आहारसत्तगाऽऽउग-तिगाण इयराण णियमाऽत्थि ॥५६१॥

मोहाण सठाणव्व--ऽण्णमोहसंते-ऽण्णअधुवसत्ताण ।
तिरियाउजिणूणाण, सिआ हवेज्ज णियमा ऽण्णेसिं ॥५६२।
णा-ऽऽउदुगस्सा-ऽऽउगतिग-संते आहारसत्तगस्स सिआ ।
अमणे दुदंसणाण, दंसणछक्कस्स चउसु सिआ ।५६३॥

मिच्छस्स त्ति तीसु सिआ, सुराउसंते नराउसंते वा ।
णिरयसुरदुगविउव्वियसगाण तीसु णियमाऽण्णेसिं ॥५६४॥
सेसाण पुमव्व णवरि, मणुयदुगस्स णियमुच्चसंते उ ।
णियमुच्चस्स णिरयसुर –दुगविउवाहारसगसंते ॥५६५॥
ण मसठाणव्व धुवा, तिरिच्छिअमणेसु मस्समीसाणं ।
आहारगसगसंते, पणिंदितिरिये अपज्जत्ते ॥५६६॥
सव्वेसु एगिंदिय-विगलिंदियपुहविदगवणेसु च ।
सत्ताऽत्थि सम्मसंते, णराउआहारसत्तगाण सिआ ॥५६७॥(गीतिः)
णियमाऽण्णेसिं एवं,मीसस्स णवरि सिआऽत्थि सम्मस्स । (गीतिः)
वीसअधुवसत्ताणं, णराउसंते व णियमओऽण्णेसिं ॥५६८॥
णामसठाणव्व अधुव-णामसइ व सम्मदुगणराऊणं । (गीतिः)
णियमाऽणाण णवरि सइ, आहारसगे दुदरिसणाण धुवा ॥५६९॥
णरदुगसइ वुच्चस्स उ, दुगव्व से णवरि णरदुगस्स धुवा ।
सेसिगसइ चउवीसअ-धुवाण वाऽण्णाण णियमा-ऽत्थि ॥५७०॥
सव्वाणोघव्वऽत्थि ति-णरेसु परमत्थि णरतिगुच्चाणं ।
णियमा सव्वह तेरस-संते व णराणुपुव्वीए ॥५७१॥
आउसठाणव्व विउवि-गारसगस्स तिरियाउसइ णियमा ।(गीतिः)
दुणरेसु माणुसीए, हस्सछगस्स णियमाऽत्थि पुंसंते॥५७२॥
असमत्तपणिंदितिरिव्व अपज्जणरे-ऽखिलाण णवरि सिआ ।
तिरियाउगस्स सव्वह, मणुयतिगुच्चाण णियमा-ऽत्थि ॥५७३॥

ओघव्व सण्णियासो, दुपणिंदितसभवियेसु सव्वेसिं ।
असमत्तपणिंदितिरिव्व अपज्जपणिंदियतसेसुं ॥५७४॥
सव्वेसिं णवरि सिआ, हवेज्ज तिरियाउगस्स सव्वत्थ ।
सव्वाणणिवाऊसुं, णराउवज्जाण पुहविव्व ॥५७५॥
घाइतिरियाउतेरस-णामाणोघव्व होइ तिमणेसुं ।
सच्चवयणसुक्कासुं, परं तिरिव्व णिरयदुगस्स ॥५७६॥
सपरपहाणे सव्वह, णरसुरदुगविउवसत्तगुच्चाणं । (गीतिः)
णियमा-ऽऽउदुगा-ऽऽहारग-सगाण ओघव्व जिणणराऊओ॥५७७॥
इगसंतेऽण्णस्स तहा, घाईण तिआउतेरणामाणं । (गीतिः)
आहारसगस्स व जिण-सइ तिरियाउस्स ण णियमाऽण्णेसिं ॥५७८॥
सेसछसीईओ इग-संते णियमा-ऽत्थि पणअसीईए । (गीतिः)
घाइचउआउतेरस-णामजिणाहारसत्तगाण सिआ ॥५७९॥
एवं दुमणवयेसुं, णवरि धुवा-ऽऽवरणणवगविग्घाणं । (गीतिः)
एमेव णवरि मोहस-ठाणव्वऽत्थि चउणाणओहीसुं ॥५८०॥
मणुयाउस्स धुवा मण-णाणे कायउरलेसु आहारे ।
घाइतिआउगतेरस-णामाण हवेज्ज ओघव्व ॥५८१॥
वा-ऽऽउगघाईण अधुव-णामसइ णरदुगसइ व उच्चस्स । (गीतिः)
जिणसइ तिरियाउस्स ण, णामसठाणव्व णियमओऽण्णेसिं ॥५८२॥
घाइचउआउसुरदुग-वेउव्वाहारसत्तगजिणाणं । (गीतिः)
तेरसणामाण सिआ-ऽत्थि उच्चसंतम्मि णियमओऽण्णेसिं ॥५८३॥

सेसाणेमेव परम-नराउसंते व णरदुगुच्चाणं ।
कायव्व वयदुगे पर-मिह णियमा णरदुगुच्चाणं ॥५८४॥
मोहाण उरलमीसे, सट्ठाणव्वेगमोहसंतेऽत्थि ।
सम्मत्तमीससंते, आउजिणाहारसत्तगाण सिआ ॥५८५॥ (गीतिः)
वा-ऽऽउणिरयणरसुरदुग-जिणविउवाहारसत्तगुच्चाणं ।
सेसेगमोहसंते, णियमा सेसाण बोद्धव्वा ॥५८६॥
तिरियाउतेरणाम-ऽण्णघाइसंतंमि अधुवसत्ताणं ।
अणमिच्छाण व णियमा-ऽण्णाण परं णिरयदुगसंते ॥५८७॥
धुवियरणरदुगविउवस-गुच्चाण जिणस्स आउसंते णो ।
घाइणरदुगुच्चूणअ-धुवसत्तातेरणामाणं ॥५८८॥
मणुयाउगसंते वा, णियमाऽण्णाणं सिआऽऽउघाईणं ।
विउवाहारगसत्तग-णरसुरदुगतित्थसंतम्मि ॥५८९॥
णामाण सठाणव्व उ, णियमाऽण्णाण परमत्थि जिणसंते ।
तिरियाउस्स असत्ता, णियमा सत्ता णराउस्स ॥५९०॥
णरदुगसंतम्मि सिआ, उच्चस्स मणुयदुगव्व उच्चस्स ।
णवरं णियमा सत्ता, मणुयदुगस्स उण बोद्धव्वा ॥५९१॥
सेसिगसंतम्मि सिआ, बासीईअ णियमा तिसयरीए ।
एवं कम्मे णवरं, णिरयसुराऊण, ओघव्व ॥५९२॥
णिरयसुराऊण वि वा, सव्वह व णराउगस्स जिणसंते ।
सेसाऊणं तिण्हं, सत्ता णेगाउसंतम्मि ॥५९३॥

मोहाणं विउव्वदुगे, भवे सठाणव्व मोहइगसंते ।
होइ सिआ-ऽऽउ-जिणा-ऽऽहारसत्तगाण णियमाऽण्णेसिं ॥५९४॥

सेसाण पुमव्व णवरि, तिरियाउजिणाण ण जुगवं सत्ता ।(गीतिः)
आउसठाणव्वा-ऽऽउग-सइ मिच्छस्स तिरियाउसइ णियमा॥५९५॥

दंसणसत्तगसंते, आहारदुगे भवे सठाणव्व ।
मोहाण वा सुराउग-जिणाण होइ णियमा-ऽण्णेसिं ॥५९६॥

दंसणसगतित्थाण व, सुराउसंतम्मि णियमओऽण्णेसिं ।
जिणसंते दंसणसग-देवाऊणं व णियमओऽण्णेसिं ॥५९७॥(गीतिः)

सेसिगसंतम्मि सिआ, दंसणसत्तगसुराउतित्थाणं ।
सत्ता णेया णियमा, सेसछचत्ताहियसयस्स ॥५९८॥

मोहाण सठाणव्व उ, संजलणतिवेअहस्सछगसंते ।
वेअकसायेसु सिआ, सोलसथीणद्धिअधुवसत्ताणं ॥५९९॥ (गीतिः)

णियमा-ऽण्णेसिं सोलस-थीणद्धितिगाइसेसमोहाणं । (गीतिः)
णिरयतिरिसुराऊण वि, ओघव्वऽण्णाण चरमलोहव्व ॥६००॥

णवरि ण जिणसंते तिरियाउस्स सठाणगव्व णामाणं । (गीतिः)
णामिगसंते णियमा, णराउसंतम्मि णरदुगुच्चाणं ॥६०१॥

णियमुच्चस्स उ सुरदुग-विउवाहारसगसंतकम्मेऽत्थि ।
णियमुच्चगोअसंते, मणुयदुगस्स हवए सत्ता ॥६०२॥

पणविग्घणवावरणिग-संतेऽवेअअकसायअहखाए ।
मोहदुणिद्दासोलस-थीणद्धितिगाइतित्थाणं ॥६०३॥

तह आहारगसत्तग-देवाऊणं व णियमओऽण्णेसिं ।
एमेव दुणिद्दाणं, णवरं णियमाऽण्णएगाए ॥६०४॥

मोहिगसंतम्मि सिआ, सुराउआहारसत्तगजिणाणं ।
मोहाण सठाणव्व उ, णियमाऽण्णाण णवरमवेए ॥६०५॥

थीणद्धितिगाईणं, पुमचउसंजलणहस्सछगसंते ।
सोलसपयडीण सिआ, सिं उण मज्झिमकसायव्व ॥६०६॥

सेसाणोघव्व णवरि सव्वत्थ विणाऽत्थि णिरयतिरियाऊ ।
सव्वह णियमा सत्ता, अत्थि णरतिगुच्चगोआणं ॥६०७॥

सुरदुगविउवसगाणं, णियमाऽत्थि अचरमखयपयडिसंते ।
एगे चरमखयपयडि-संते व णराणुपुव्वीए ॥६०८॥

णामाण केवलदुगे, सट्ठाणव्वेगणामसंतम्मि ।
णियमा-ऽण्णेसिं णवरं, सिआऽत्थि मायियरणीआणं ॥६०९॥

णरगइपणिंदितसतिग-सुहगादेयजसतित्थयरसंते ।
मणुयाणुपुव्विसंते-ऽण्णे णीअण्णाण सुरगइजिणव्व ॥६१०॥ (गीतिः)

णत्थि णिरयाउसंते, देवाउस्स दुअणाणमिच्छेसु ।
सत्ता सिआ दुदंसण-दुआउआहारसत्तगजिणाणं ॥६११॥(गीतिः)

णियमा-ऽण्णाण सुराउ-स्सेवं ण जिणस्स वा णराउस्स । (गीतः)
जिणसइ णाऽऽहारगसग-तिरियसुराऊण णियमओऽण्णेसिं ॥६१२॥

सेसाण अपज्जतसव्व णवरि णिरयामराउगाण सिआ ।
सव्वह-ऽणाहारगसग-तिरियाउगसइ जिणस्स सिआ ॥६१३॥

[library stamp]

सट्ठाणव्व विभंगे, मोहाणं एगमोहसंतेऽत्थि ।
चउआउजिणाहारग-सगाण वाऽत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥६१४॥
अण्णाणदुगव्व णिरय-सुराउआहारसत्तगजिणाणं ।
सेसाण अणव्व णवरि, जिणस्स तिरियाउसंते णो ॥६१५॥
पज्जणरव्वऽखिलाणं संजमसम्मेसु णवरि णियमाऽत्थि ।
सुरदुगविउव्वसगाणं, अचरमखयपयडिसंतम्मि ॥६१६॥
सपरपहाणे सव्वह णिरयदुगस्सऽत्थि थीणगिद्धिव्व ।
अणमिच्छमीससंते, होइ सठाणव्व मोहाणं ॥६१७॥
सम्मे व णराउस्सा-ऽऽउसठाणव्वा-ऽऽउसंते उ । (उद्गीतिः)
सामाइअछेएसु, थीणद्धितिगअडवीसमोहाणं ॥६१८॥
आउतिग-णिरयदुग-तिरि-एगारसगाण संजमव्व भवे । (गीतिः)
सेसाण चरमलोहव्व णवरि तिरियाउगस्स ण जिणसइ ॥६१९॥
परिहारे व सुराउजिणाऽऽहारसगाण मोहइगसंते । (गीतिः)
मोहाण सठाणव्व उ, णियमा-ऽण्णेसिं पुमव्व सेसाणं ॥६२०॥
मोहिगसंते देसे, तेउपउमवेअगेसु मोहाणं । (गीतिः)
सट्ठाणव्वाउग-जिण-आहारसगाण व णियमाऽण्णेसिं ॥६२१॥
संजलणव्वऽण्णेसिं, परमण्णयराउपयडिसंतम्मि ।
आऊण सठाणव्व ण, जुगवं तिरियाउतित्थाणं ॥६२२॥
सुहमे मोहिगसंते, सुराउआहारसत्तगजिणाणं ।
वा मोहसठाणव्व उ, णियमा सेसाण होइ परं ॥६२३॥

सोलसथीणद्धियतिग पमुहाण वि चरमलोहसंते वा । (गीतिः)
सत्ताथीणद्धितिग-प्पमुहऽण्णाण पुमचरमलोहव्व ॥६२४॥

अजयासुहलेसासु जिणस्स हवए विउव्वजोगव्व ।
सेमाण तिरिव्व णवरि, मोहसठाणव्व मोहसइ ॥६२५॥

आउसठाणव्वा-ऽऽउग-सइ मिच्छस्स उ सिआ-ऽऽउदुगसंते ।
तिरियाउस्स व सव्वह, तिरियाउं विण जिणस्स सिआ । ६२६॥

सव्वप्पयडीण णयण-अणयणसण्णीसु कायजोगव्व ।
णवरं णियमा सव्वह, णवावरणपंचविग्घाणं ॥६२७॥

सठ्ठाणव्व अभविये, णामाणं अधुवणामसत्ताए । (गीतिः)
आऊण सिआ णरदुग-संते उच्चस्स वि णियमाऽण्णेसिं ॥६२८॥

सेमाण णरदुगव्व उ, णवरं णारगसुराउसत्ताए । (गीतिः)
आउसठाणव्व धुवा, विउवेगारसगणरदुगुच्चाणं ॥६२९॥

णियमा णराउसंते, मणुयदुगुच्चाण उच्चसंते उ ।
णियमा मणुयदुगस्स य, सिआऽत्थि सेसेगसंते से ॥६३०॥

सपरप्पहाणदंसण-सत्तगहीणो हवेज्ज सम्मव्व ।
खइए णवरि ण जुगवं, सत्ता णिरयतिरियाऊणं ॥६३१॥

सठ्ठाणव्व उवसमे, मोहिगसंतम्मि होइ मोहाणं ।
चउआउजिणाहारग-सगाण वा-ऽत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥६३२॥

मिच्छव्वऽण्णाण णवरि, जिणतिरियाऊण ण जुगवं सत्ता।
तह णिरयसुराऊण वि, एवं तित्थरहिओ मीसे ॥६३३॥

सासाणे इगसंते, सिआऽऽउआहारसत्तगाण धुवा । (गीतिः)
अण्णाण सठाणव्व वि, दुआउआहारसत्तगविरोहो ॥६३४॥
ओघव्व अणाहारे, अजोगिचरमखणखीअमाणाणं ।
तेरसपयडीणुअ चउ-दसण्ह कम्मव्व सेसाणं ॥६३५॥

एगस्स असंते पण-णाणावरणाउ होअए णियमा ।
सेसचउण्ह असत्ता, पणंतरायाण एमेव ॥६३६॥
एगस्स असंते चउ-बीआवरणाउ होअए णियमा ।
सेसट्ठण्ह असत्ता एगअसत्ताअ णिद्दुगा ॥६३७॥
चउबीआवरणाण व, चउण्ह णियमा इगअसंते । (उपगीतिः)
थीणद्धितिगाउ धुवा, दोण्ह असत्ताऽत्थि छण्ह सिआ ॥६३८॥
तइअस्सेगअसंते, व असत्ताऽण्णस्स सत्तमस्सेवं ।
आऊणेगअसंते, तिण्ह असत्ता सिआऽण्णेसिं ॥६३९॥
सम्मस्स असत्ताए, सिआ असत्ताऽण्णसत्तवीसाए ।
मिस्सस्सेवं मिच्छअ-संते णियमा अणाण भवे ॥६४०॥
तेवीसा-ऽण्णाण सिआ, एवमणाण णवरं व मिच्छस्स । (गीतिः)
वा मज्झिमिगकसायअ-संते सजलणणोकसायाणं ॥६४१॥
णियमाऽण्णचउदसण्ह-ऽण्णाण धुवंतिमकसायिगअसंते ।
णवरि कमा मायाइअ-संते बंतेगदुतिकसायाणं ॥६४२॥(गीतिः)
बारकसायतिदंसिण-णपुमाण धुवा-ऽत्थि थीअसंते वा ।
सेसाण णपुंसस्स वि, एवं णवरि उ सिआ थीए ॥६४३॥

चउसंजलणाण सिआ, पुरिसअसंते ऽण्णतिजुअवीसाए। (गीतिः)
णियमा मोहाणेवं, हस्सछगस्स णवरं पुमस्स सिआ ॥६४४॥
णिरयदुगेगअसंते, णिअमा-ऽसत्तेयरस्स वा ऽण्णेसिं। (गीतिः)
तिरिएगादसगाओ, एगअसंते धुवा-ऽण्णदसगस्स ॥६४५॥
तह णिरयदुगस्स सिआ ऽण्णाण णरदुगा इगअसंते। (उद्गीतिः)
णियमियरविउविगारस-गाहारगसगजिणाण वाऽण्णेसिं ॥६४६॥
सुरदुगिगअसंते णियमाऽण्णाहारगसगाण वाऽण्णेसिं। (गीतिः)
णियमाऽण्णाण पणिंदिय-तसतिगसुहगाइतिगइगअसंते ॥६४७॥
विउवमगिगामइ धुवा-ऽऽहारसगविउवदसाण वाऽण्णेसिं।
णियमा छण्हाहारग-सगिगअसंते सिआऽण्णेसिं ॥६४८॥
वा-ऽण्णाण जिण असंते, व णरदुगपणिंदिजिणतसतिगाणं। (गीतिः)
सुहगाएज्जजसाण-ऽण्णगासंतेऽत्थि णियमओऽण्णेसिं ॥६४९॥
ओघव्व असत्ताए, सव्वह मणिणक्किसोऽज्जचरमाणं।
गयवेए अकसाए, केवलजुगले तहा सम्मे ॥६५०॥
खइआणाहारेसुं, ओघव्व दुवे अणीअणीआणं।
तम्हा एगअसंते, पडिवक्खस्सऽण्णह दसमु णो ॥६५१॥
ओघव्व अणाहारे, उच्चस्स छसु गयवेअपमुहासुं।
णियमा णीअस्सुच्चअ-संते अण्णह ण णीअस्स ॥६५२॥
दरिसणआवरणाणं, णवण्ह तिणरदुपणिंदियतसेसुं।
तिमणवयणकायेसुं, उरलाविआकसाएसुं ॥६५३॥

संजमअहखायसुइल-भविसम्मत्तखइएसु आहारे ।
सट्ठाणसण्णियामो, ओघव्व भवे असत्ताए ॥६५४॥

दुअणवयणचउणाणति-दरिसणमण्णीसु होइ णिद्दुगा ।
एगअसंते णियमा, चउण्ह णिद्दा ण उ असत्ता ॥६५५॥

एगस्स असत्ताए, थीणद्धितिगाउ दोण्ह इयरेमिं ।
णियमा होइ असत्ता, णिद्दापयलाण होइ सिआ ॥६५६॥

णवदरिसणावरणओ, एगअसंते असत्तुरलमीसे ।
कम्माणाहारेसुं, णियमा सेसाण अट्ठण्हं ॥६५७॥

वेअतिगकसायचउग—समइअछेअसुहमेसु इयरेमिं ।
दोण्ह असत्ता णियमा, थीणद्धितिगा इगअसंते ॥६५८॥

अंतिमवज्जणिरयमग-सुराइमाऽवहिसुरेसु वाऽण्णस्स ।
एगाउअसंते ण अ-पज्जपणिंदितम-उरलमीसेसुं ॥६५९॥ (गीतिः)

तिरितिपणिंदितिरियणर-संजमसामइअछेअअमणेसुं ।
दोण्ह विगाउअसंते, उरालदेसेसु तिरिणराऊओ ॥६६०॥ (गीतिः)

णिरयसुराऊहिन्तो, विउवदुगे ण इयरस्सिगअसंते । (गीतिः)
दोण्हऽण्णाऊण सिआ तीसु य तिण्हऽण्णिगाउगअसंते ॥६६१॥

व अवेए अकसाए, सुराउअसइ इयरस्स णियमिहरा ।
ओघव्विगवण्णाए, चउआऊणऽण्णहिं णत्थि ॥६६२॥

णिरयऽज्जतिणिरयतिरिय- पणिंदितिरितस्समत्तदेवेसुं ।
इगवीसाइमकप्पप—–मुहगेविज्जंतदेवेसुं ॥६६३॥

विक्कियमीसे अजए, काऊए तेउपम्हासु। (उद्गीतिः)
सम्मदुगेगअसंते, सेसदरिसणदुगचउअणाण सिआ ॥६६४।
मिच्छअसंतम्मि सिआ, सम्मत्तस्स णियमा-ऽणमिस्साणं ।
णवरि सिआ मिस्सस्स अ-सत्ताऽजयतेउपम्हासुं ॥६६५॥
अणिगअसंते सेसति-अणाण णियमा तिदंसणाण सिआ ।
सम्मअसंते ऽणाणिरय–तिरिच्छि— भवणतिगदेवेसुं ॥६६६॥
मिस्सस्स सिआ-ऽणाण ण, मिस्सस्सेवं धुवा उ सम्मस्स ।
दुदरिसणाण ण अणिगअ-संते णियमा-ऽणतिअणाणं ॥६६७॥
अप्पज्जत्तसु चउसु, पणिंदितिगिणरपणिंदियतसेसुं। (गीतिः)
सव्वेगक्खविगलपण-कायतिअणाणमिच्छअमणेसुं ॥६६८॥
मिस्सस्स सिआ सम्मअ-संते सम्मस्स मीसअसइ धुवा। (गीतिः)
मोहाणोघव्व तिणर-दुपणिंदितसपणमणवयेसु तहा ॥६६९॥
कायुरललोहणयणियरसुक्कभविसण्णिगेसु आहारे। (गीतिः)
णवरि णरीहस्सछगे, धुवा पुमस्संतलोहविण लोहे ॥६७०॥
पणऽणुत्तरेसु सम्मअ-संते दंसणछगस्स नियमाऽत्थि ।
सम्मस्स सिआ मिस्सअ-संते णियमा-ऽणमिच्छाणं ॥६७१॥
सम्मस्स सिआ मिच्छअ-संते णियमा-ऽणचउगमिस्साणं ।
अणिगअसंते दंसण-तिगस्स व धुवाऽणतिअणाणं ॥६७२॥
ओघव्व उरलमीसे, कम्मेऽणाहारगे दरिसणाणं । (गीतिः)
मिच्छअसइ मिस्सस्स उ, णियमा सेसाण सेसिगासंते ॥६७३॥

छण्णदरिसणाण सिआ, सम्मासइ विउवकिण्हणीलासु ।
मिस्सासइ सम्मस्स उ,णियमा-ऽत्थि सिआ-ऽणमिच्छाणं ॥६७४॥
मिच्छअसंते दरिसण-सेसछगस्स णियमा-ऽणिगअसंते ।
सेसअणतिगस्स भवे, णियमा दंसणतिगस्स सिआ ॥६७५॥
णियमा आहारदुगे, हवए सेसस्स दंसणछगस्स । (गीतिः)
दंसणतिगिगअसंते,-ऽणिगअसदि धुवाऽणतिण्ह तिण्ह सिआ।६७६।
सम्मदुगेगअसंते, थीअ सिआ पणरसण्ह उ असत्ता ।
मिच्छअसंते णियमा-ऽणाणऽण्णेगारसण्ह सिआ ॥६७७॥
तिअणाण धुवा अणिगअ-संते वा-ऽण्णाण उ णपुमअसंते ।
णियमा-ऽण्णेगअसंते, णपुमस्स सिआ धुवा-ऽण्णेसिं ।।६७८॥
थिव्व पुमे सव्वह उ व, थीअ धुवा सोलसण्ह थीअसइ ।(गीतिः)
हस्सछगस्स वि एवं, मयंतरे थिव्व अणपुमं णपुमे ॥६७९॥
दरिसणिगअसंते गय-वेए णियमा-ऽण्णदंसणाण सिआ ।
सेसाण संजलणपुम-हस्सछगाणऽत्थि ओघव्व ॥६८०॥
सेसेगअसंते खलु, चउसंजलणपुमहस्सछक्काणं ।
एगारसण्ह तु सिआ, णियमा सेसाण पयडीणं ॥६८१॥
ओघव्व तिकोहाइसु, णवरि कमा अचउतिदुगसंजलणा ।
अकसाए अहखाए-ऽण्णदंसणाणेगदंसणासंते ॥६८२॥ (गीतिः)
णियमा सेसाण सिआ, णियमा सेसाण सेसिगअसंते ।
चउणाणसंजमावहि-सम्मेसुं होअइ असत्ता ॥६८३॥

चउअणमिच्छाइतिगअ-संते तिचउअणपणछदंसाणं । (गीतिः)
णियमा कममोऽत्थि सिआ, सेसाणोघव्व एगवीसाए ॥६८४॥
विण चरमलोहमेवं, समइअछेएसु णियमओ छण्हं ।
सम्मअसइ परिहारे, देसे एमेव मीसस्स ॥६८५॥
णवरं सम्मम्म सिआ, मिच्छअसंते दुदंसणाण सिआ ।(गीतिः)
णियमा-ऽणाण अणेगअ-संते तिण्ह णियमा सिआ तिण्हं ॥६८६॥
अकसायव्व उ सुहमे, सप्पाउग्गाण मोहपयडीणं ।
सट्ठाणसणियामो, जाणेयव्वो असत्ताए ॥६८७॥
खइए विण दरिसणसग-मोघव्व उ उवसमे-ऽणिगासंते । (गीतिः)
णियमा तिअणाण भवे, देसव्व उ वेअगे विणा सम्मं ॥६८८॥
मिस्से सम्मासइ णो, अणाण सम्मस्स ण अणिगासंते ।
तदितरतिगस्स णियमा, मयन्तरेणऽत्थि विण सम्मं ॥६८९॥
व जिणस्सा-ऽहारसगा, णिरयतिपढमाइणिरयदेवेसु ।
मोहम्माइछवीसा-सुरविउवदुगेसु विब्भंगे ॥६९०॥
परिहारे तह देसे, तेउपउमुवसमवेअगेसु च ।
एगासंते छण्ह धुवाऽऽहारसगस्स वा जिणअसंते ॥६९१॥(गीतिः)
सेसेसु णिरयेसु, भवणातिगे मीससासणेसु च ।
आहारसगा एगअ-संते णियमाऽण्णाछण्हऽत्थि ॥६९२॥
सव्वतिरियएगिंदिय-विगलिंदियपंचकायभेएसु ।
असमत्तपणिंदितसअ-मणेसु णिरयदुगिगासंते ॥६९३॥

णियमियरेगाहारग-सगाण वा-ऽणाण सुरदुगस्सेवं ।
मणुयदुगेगअसंते, णियमा सेसूणवीसाए ॥६९४॥
विउवसगेगअसंते, सिआ णरदुगस्स णियमओऽण्णेसिं । (गीतिः)
आहारसगा एगअ-संते छण्ह णियमा सिआ-ऽण्णेसिं ॥६९५॥
एवमपज्जणरे णर-दुगं विणा-ऽऽहारसगमभव्वम्मि । (गीतिः)
तिणरेसु णिरयदुगिगअ-संतेऽणस्स णियमा सिआ-ऽण्णेसिं ॥६९६॥
तिरियेगारसगेगअ-संते णिरयदुगदसियराण धुवा । (गीतिः)
वा-ऽणाण धुवा-ऽण्णेगा-ऽऽहारसगाण सुरदुगइगअसंते ॥६९७॥
वा-ऽणाण विउवदसगा-ऽऽहारसगाणऽणविउवअसइ धुवा । (गीतिः)
वा-ऽणाणाहारसगिग-असइ उ छण्ह णियमा सिआऽण्णेसिं ॥६९८॥
तित्थअसंतम्मि सिआ, सेसऽखिलाणं सिआऽणिगासंते ।
तित्थस्स दुणवईअ ति-णवईए वा भवे णियमा ॥६९९॥
ओघव्व पणिंदियतस-तिगसुहगाइज्जजसविरहिआणं । (गीतिः)
दुपणिंदितसभवेसु, णवरि धुवाण सह ण णरदुगिगेहिं ॥७००॥
होइ पणमणतिवयचउ-णाणेहिसमइअछेअसुहमेसु ।
सुक्काअ णिरयदुगतिरि-येगादसगाउ बारसऽण्णेसिं ॥७०१॥(गीतिः)
धुविगासंते-ऽणाण व; आहारसगाउ छण्ह णियमाऽत्थि ।(गीतिः)
एगासंते-ऽणाण व, तित्थासंते सिआऽणवीसाए ॥७०२॥
दुवयेसु णिरयदुगिगा-संतेऽणस्स णियमा सिआ-ऽण्णेसिं ।
तिरियेगारसगेगअ-संते णिरयदुगदसियराण धुवा ॥७०३॥(गीतिः)

होइ ण देवदुगविउव-सगाण वाऽऽहारसत्तगजिणाणं ।
सुरदुगिगासंते-ऽणिगाग-आहारगसगजिणाण धुवा ॥७०४॥

तिरियेगारसगस्स ण, णिरयदुगविउवसगाण होइ सिआ । (गीतिः)
तित्थाहारसगविउव दसगाण णियमिगअसइ त्रिउवसगा ॥७०५॥

तिरियेगारसगस्स ण, आहारगसत्तगा इगासंते । (गीतिः)
छण्हऽत्थि तदियराणं, णियमाऽण्णेसिं सिआ जिणासंते ॥७०६॥

कायउरलदुगकम्मण-वेअतिगकसायचउगचक्खूसुं ।
अणयणसण्णीसु तहा, आहारे एवमेव परं ॥७०७॥

ण तिरियिगारसगे णर-दुगस्स वाऽण्णत्थ तस्सिगासंते ।
तिरियेगारसगस्स ण, हवेज्ज णियमाऽण्णवीसाए ॥७०८॥

आहारदुगे ण भवे अवेअअकसायसम्मखइएसुं ।
णियमियराण णिरयदुग तिरियेगारसगिगासंते ॥७०९॥

अवसेमाण सिआ णर-दुगस्स पंचिंदियव्व ओघव्व ।
आहारसगपणिंदिय-सुहगाइज्जजसतसतिगजिणाणं ॥७१०॥(गीतिः)
णरदुगपणिंदितसतिग-सुहगाइज्जजसतित्थणामाणं ।
सेसेगासंते वा, हवेज्ज णियमाऽण्णपयडीणं ॥७११॥

णामाण केवलदुगे, सठाणसण्णिगकरिसो अवेअव्व ।
णवईएऽत्थि णिरयदुग-तिरियेगारसगवज्जाणं ॥७१२॥

दुअणाणाजयतिअसुह-लेसामिच्छेसु होइ तिरियव्व ।
परमाहारसगअसइ, व जिणस्स भवेऽण्णअसइ धुवा ॥७१३॥

जिणअसइ व सेसाणं, वीसाए संजमे अहक्खाए ।
णियमियराण णिरयदुग-तिरियेगारसगिगासंते ॥७१४॥
सेसाण सिआ एगा-संते आहारसत्तगा णियमा ।
छण्हं सेसाण सिआ, सेसाण सिआ जिणासंते ।७१५॥
सेसेगअसत्ताए, सिआ जिणस्स णियमा-ऽत्थि सेसाणं ।
सट्ठाणसण्णियासो, सव्वाणोघव्वऽणाहारे ॥७१६॥
घाइछचत्तति आउग-तेरसणामाण णियमिगासंते ।
विग्घणवावरणाओ, होइ असत्ता सिआ-ऽण्णेसिं ॥७१७॥
एमेव दुणिद्दाणं, णवरि सिआ-ऽऽवरणणवगविग्घाणं ।
थीणद्धियतिगतिरिये-गारसगाओ इगासंते ॥७१८॥
णियमा-ऽण्णतेरदरिससगाउतिगणिरयदुगाण वा-ऽण्णेसिं ।(गीतिः)
सायियरेगासंते, सिइयरणरतिगपणिंदियजिणाणं ॥७१९॥
तसतिगसुहगाऽऽइज्जग-जसउच्चाण णियमाऽण्णेसिं ।
मोहेगासत्ताए, मोहसठाणव्व वाऽण्णेसिं ॥७२०॥ (उपगीतिः)
णवरि दरिसणसगूणअ-संते थीणद्धितिगतिआऊणं ।
तिरियेगारसगणिरय-दुगाण णियमा असत्ताऽत्थि ॥७२१॥
आऊणेगअसंते, वाऽण्णाऽखिलाणऽण्णणामिगासंते ।
णामसठाणव्व भवे, विउवेगारसगअस्संते ॥७२२।
सम्मत्तमीसणारग-सुराउगाण णियमा सिआऽण्णेसिं ।
सम्मत्तमीससुरणर-णिरयाउगउच्चगोआणं ॥७२३॥

होइ णरदुगासंते, णियमा-ऽण्णेसिं सिआऽण्णसव्वाणं ।
णियमा पणिंदितसतिग सुहगाइज्जजसिगासंते ॥७२४॥

वा-ऽण्णाणाहारगसग— तित्थअसंते-ऽण्णणामिगासंते ।
आ सायियरणगाउग-उच्चाणऽत्थि णियमाऽण्णेसिं ॥७२५॥

सम्मदुगतिआउविउवि—गारसगाहारसगजिणाण भवे ।
णियमा उच्चअसंते, तेत्तीसाहियसयस्स सिआ ॥७२६॥

णीअअसत्ताअ सिआ, दुविज्जणरतिगपणिंदियजिणाणं ।
तसतिगसुहगाऽऽइज्जग-जसउच्चाण णियमाऽण्णेसिं ॥७२७॥

सव्वणिरयदेवेसु स-जाईण सठाणगव्विगासंते ।
वाऽण्णाण णवरि मिच्छा-ऽसंते तिरियाउगस्स धुवा ॥७२८॥

तुरिआईसु इगमए, दुइआईसु णिरयेसु भवणतिगे ।
सम्मगमीसअसंते, आहारगसत्तगस्स धुवा ॥७२९॥

सट्ठाणव्व तिरिक्खे, पणिंदियतिरियतिगे सजाईणं ।
वा-ऽण्णाण णवरि णियमा-ऽऽउदुगस्स उ मिच्छगासंते ॥७३०॥

मिच्छाणासंते णो, विउवेगारसगणरदुगुच्चाणं ।
ण विउविगारसगणरदु-गुच्चासंतेऽणमिच्छाणं ॥७३१॥

सम्मत्तमीसणारग-सुराउगाण णियमा णराउस्स ।(गीतिः)
मणुयदुगुच्चासंते, णियमा उच्चस्स णरदुगासंते ॥७३२॥

णरदुगमुच्चासंते, विण णामाण णियमा णराउस्स ।
वेउव्वेगारसगा-ऽसंते दुपणिंदितिरियेसु ॥७३३॥

णिअमा होएज्ज तिरिय-जोणिमईए असत्ता उ ।
सम्मत्तमीसमोहअ-संते आहारगसगस्स ॥७३४॥ (उपगीतिः)
सट्ठाणव्व अपज्जग-पणिंदितिरिणरपणिंदियतसेसुं ।
सव्वेगविगलइंदिय—पणकायेसुं सजाईणं ॥७३५॥
ससजोग्गाणेगासइ, सेसाण सिआ परं भवे णियमा ।
आहारसत्तगस्स उ, सम्मत्तगमीसगासंते ॥७३६॥
तेरसणामासइ सम्मदुगस्स धुवा णराउउच्चाणं ।
णरजुगलासंते तह, उच्चासइ णरदुगूणाणं ॥७३७॥
तिरियाउअसंते णो, पणिंदियतसेसु णरदुगुच्चाणं ।
मणुयदुगुच्चासंते, तिरियाउस्स ण खलु असत्ता ॥७३८॥
ओघव्व सजोग्गाणं, तिमणुयदुपणिंदितसभवीसु परं ।
सायस्स असाएण वि-रोहो णीअस्स उच्चेण ॥७३९॥
णरिगदुगुच्चेहिं धुव-सत्तातिरियाउगाण उ विरोहो ।
सह पणसु णराउस्स य, मिच्छाणूणधुवसत्ताहिं ॥७४०॥
तिरियाउस्स विउविगा-रसगासंतेऽत्थि णरदुगे णियमा ।
ओघव्व सजोग्गाणं, मणतिगसच्चवयसुक्कासुं ॥७४१॥
णवरि णराउअसंते, णो चत्ताघाइतेरणामाणं ।
तह तस्स ण सिमसंते, थीणद्धिव्व णिरयदुगस्स ॥७४२॥
एवं दुमणवयेसु स-जोग्गाणोघव्व होइ दुवयेसुं । (गीतिः)
परमिगवण्णासंते, ण णराउस्स तह सिं ण तयसंते ॥७४३॥

धुवसत्तातिरियाउवि-रोहोऽत्थि सुरदुगविक्कियसगेहिं ।
सुरदुगविउव्वसगासइ, जिणस्स णियमा असत्ताऽत्थि ॥७४४॥

कायुरलाहारेसु स-जोग्गाणोघव्व णवरि विण्णेयो ।
सुरदुगविउव्वसगाणं, धुवसत्ताहिं सह विरोहो ॥७४५॥

मिच्छचउअणरहिअधुव-सत्ताण णराउणा सह विरोहो ।
णरदुगउच्चेहिं धुव-सत्तातिरियाउगाण भवे ॥७४६॥

सुरदुगविउव्वसगासइ, जिणस्स णियमा णराउगासइ वि ।
उरले जिणस्स णियमा, तह तिरियणराउगविरोहो ॥७४७॥

मिच्छाणासंते णर-सुरदुगवेउव्वसत्तगुच्चाणं ।
ण उरलमीसे कम्मे, मोहसठाणव्व वा-ऽण्णेसिं ॥७४८॥

वा-ऽण्णेसिं सम्मदुगअ-णराउआहारसगजिणासंते । (गीतिः)
णवरि कमा णरतिदुगा-णुच्चस्स य ण तिरियाउगासंते ॥७४९॥

चत्ताघाइतिरियिगा-रसगासइ ण णरतिगसुरदुगाणं । (गीतिः)
विउव्वसगुच्चाण सिआ-ऽऽहारसगजिणाण णियमओऽण्णेसिं॥७५०॥

मिच्छाणाणाउअधुव-सत्ताण सिआ णराउगासंते । (गीतिः)
आउसठाणव्व धुवा, जिणस्स मीसे ण एगवण्णाए ॥७५१॥

णिरयदुगासइ णियमा-ऽण्णिगसम्माउगदुगाण वाऽण्णेसिं ।
णरसुरदुगविउवसगअ-संते णामाण खलु सठाणव्व॥७५२(गीतिः)

धुवघाइपञ्चचत्ता-तिरियाऊणं ण णियमओऽण्णेसिं । (गीतिः)
व तिरिणराऊच्चाणं, णवगे उच्चस्स णरदुगव्व व से॥७५३॥

विउव्वाहारदुगेसुं, परिहारे देसतेउपउमासुं ।
उवसमवेअगसासण-मीसेसु भवे सठाणव्व ॥७५४॥
अण्णयरेगासंते, ससजाईणं सिआ-ऽण्णेसिं ।
णवरं मिच्छअसंते, तिरियाउस्स विउवे णियमा॥७५५॥(उपगीतिः)
देसे णराउगस्स ण, तिदंसणासइ णराउअसइ ण सिं । (गीतिः)
णियमा जिणस्स मीसे, आहारसगस्स सम्मअसइ धुवा ॥७५६॥
थीए थीणद्धियतिग-तिरियेगारसगओ इगासंते ।
मज्झट्ठकसायणपुम—तित्थाहारगसगाण सिआ ॥७५७॥
हवए णरतिगसुरदुग-विउवसगुच्चाण ण णियमा-ऽण्णेसिं ।
सेसाण सजाईणं, सट्ठाणव्व उ सिआ-ऽण्णेसिं ॥७५८॥
परमडकसायणपुमअ—संते थीणद्धियव्व सेसाणं ।
मिच्छाणासंते णो, णरसुरदुगविउवसत्तगुच्चाणं ॥७५९॥ (गीतिः)
मिच्छासइ ण णराउस्स णराउअसइ जिणस्स णियमा णो। (गीतिः)
थीणद्धितिगतिरियिगारसगअडकसायणपुममिच्छाणं ॥७६०॥
तिरियाउअसइ णरदुग-उच्चाण ण विउविगारसगअसइ ।(गीतिः)
सम्माउदुगाण धुवा, सुरदुगविउवसगअसइ ण धुवाणं ॥७६१॥
धुवसत्ताअडवीसा-तिरियाऊण णरदुगअसइ ण धुवा ।(गीतिः)
सम्मदुगाउच्चाणुच्चस्स णरदुगव्व णवरि तस्स सिआ ॥७६२॥
थिव्व पुरिसे णवरि ण अ सत्ता मणुयतिगसुरदुगासंते ।
विउवसगुच्चा संते, य थीअ वा-ऽत्थि इयरासंते ॥७६३॥

णरतिगदेवदुगविउव-सगुच्चगोआण थीअसंते णो ।
व जिणाहारसगाणं, णियमा सेसपणतीसाए ॥७६४॥
मणुयाउस्सऽणुणं, मिच्छेणं सह सिआ जिणस्स सिआ ।
मणुयाउअसत्ताए, एवं णपुमे विण णपुमथी ॥७६५॥
सोलसथीणद्धितिगाइअडकसायित्थिणपुमिगासंते ।
गयवेए णियमेयर-पणवीसदरिसणसगसुराऊणं ॥७६६(गीतिः)
वा-ऽणाण दरिसणसगा संते मोहाण खलु सठाणव्व ।
सेसाण सिआ णरतिग-उच्चाण पणिंदिजाइव्व ॥७६७॥
सायव्व सुरदुगविउव-सगाण ओघव्व अत्थि सेसाणं ।
कोहाईसु पुमव्व उ, णवरि व पुमहस्सछक्काणं ॥७६८॥
माणाईसु कमिगदुति-संजलणाण वि परं असत्ता सिं । (गीतिः)
णरतिगसुरदुगविउवस-गुच्चासइ ण सगअडणवदसण्हं॥७६९॥
चउकोहाईसु कमा, सगअट्ठणवदसमोहअस्संते ।
मोहाण सठाणव्व उ, सेसाणं णपुमपयडिव्व ॥७७०॥
सोलसगथीणगिद्धिय --तिगाइमोहेगवीसिगासंते । (गीतिः)
अकसाए णियमेयर-सुराउदरिसणसगाण वा-ऽणेसिं ॥७७१॥
सेसाण अवेअव्व उ, अहखाए एवमेव सव्वेसिं । (गीतिः)
णरतिगपणिंदितसतिग--सुहगाइज्जजसउच्चवज्जाणं ॥७७२॥
चउणाणोहीसु मण-व्व सजोग्गाण णवरं सठाणव्व ।
मोहाण सजोग्गाणं, केवलजुगले अवेअव्व ॥७७३॥

सम्मासंते तित्था-ऽऽहारसगाण दुअणाणमिच्छेसु । (गीतिः)
णियमा-ऽणाण सिएवं, मिस्सस्स परं धुवाऽत्थि सम्मस्स ॥७७४॥
आउअसंतेऽणाण व, तिरियाउअसइ ण णरदुगुच्चाणं ।
णामाण सठाणव्व उ, णामअसंते सिआऽण्णेसिं ॥७७५॥
णवरि असत्ता णियमा, विउव्वेगारसगणरदुगासंते ।
सम्माउदुगाण धुवा, णराउउच्च ण णरदुगासंते ॥७७६॥ (गीतिः)
तिरियाउगस्स णो णरदुगव्व उच्चस्स णवरि तस्स सिआ ।
मिस्साऊण विभंगे, सम्मासंते सिआ धुवाऽण्णेसिं ॥७७७॥ (गीतिः)
मिस्सस्सेवं णवरं, णियमा सम्मस्स सेसिगासंते ।
पयडीण सजाईणं, सट्ठाणव्व उ सिआऽण्णेसिं ॥७७८॥
सप्पाउग्गाणोघ-व्व संजमे णवरि वेअणीअस्स ।
अण्णयरवेअणीअअ-संते इयरस्स ण असत्ता ॥७७९॥
सम्मगमीसअसंते, मोहसठाणव्व थीणगिद्धिव्व ।
णिरयदुगस्स उ सुरदुग-विउव्वसगाण अहखायव्व ॥७८०॥
सोलसथीणद्धितिगाइइगासंते उ समइए छेए । (गीतिः)
पणरसियरदरिसणसग-तिआउगाण णियमा सिआऽण्णेसिं ॥७८१॥
मोहाण सठाणव्विग-मोहासंते सिआऽण्णेसिं । (उद्गीतिः)
णवरि दरिसणसगूणा-ऽसंते णियमा तिआउगाण तहा ॥७८२॥
सोलसथीणद्धितिगाईणं वाऽण्णाण सेसिगासंते ।
अकसायव्व उ सुहमे, सप्पाउग्गाण पयडीणं ॥७८३॥

अजया-ऽसुहलेसासु स-जाईण सठाणगव्व वा-ऽण्णेसिं ।
णवरि तिरियाउणा सह, णरदुगउच्चाण णेव भवे ॥७८४॥
अणमिच्छासंते णो, विउवेगारसगणरदुगुच्चाणं ।
ण विउविगारसगणरदु-गुच्चासंतेऽणमिच्छाणं ॥७८५॥
सम्माउदुगाण धुवा, णराउणो णरदुगुच्चअसइ धुवा । (गीतिः)
उच्चस्स णरदुगासइ, धुवुच्चअसइ गुणवीसणामाणं ॥७८६॥
णयणेयरसण्णीसुं, सजोग्गपयडीण होइ ओघव्व ।
णवरि तिरियाउणा सह, णरदुगउच्चाण उ विरोहो ॥७८७॥
धुवसत्ताहि विरोहो, णरसुरदुगविउवसत्तगुच्चाणं । (गीतिः)
सह अणमिच्छरहिअधुव-सत्ताहि णराउगस्स उ विरोहो ॥७८८॥
इगअसइ सजाईण अ-भव्वे सट्ठाणगव्व वाऽण्णेसिं ।
णवरि तिरियाउणा सह, णरदुगउच्चाण ण असत्ता ॥७८९॥
णियमा-ऽऽउदुगस्स विउवि-गारसगासइ तिआउउच्चाण । (गीतिः)
णरदुगअसइ धुवुच्चा-ऽसइ होइ तिआउविउविगारणहं ॥७९०॥
ओघव्व सजोग्गाणं, सम्मे खइए परं असत्ता-ऽत्थि ।
दरिसणछगस्स णियमा, सम्मासंते-ऽणमिच्छाणं ॥७९१॥
मीसासंते णियमा, णिरयदुगस्सऽत्थि थीणगिद्धिव्व ।
गयवेअव्व मणुयदुग-सुरदुगविउवसगउच्चाणं ॥७९२॥
अमणे सट्ठाणव्व स-जाईणऽण्णाण व णवरं णियमा ।
सम्मगमीसासंते, आहारगसत्तगस्स भवे ॥७९३॥

णियमा होइ विउव्वे-गारसगमणुस्सदुगअसंतम्मि ।
सम्मत्तमीसणारग-सुराउगाणं असत्ता उ ॥७९४॥
अत्थि णरदुगासंते, णियमा मणुयाउउच्चगोआणं ।
उच्चासंते णियमा, तेवीसाए विण णरदुगं ।७९५॥
चत्ताघाइतिरियिगा--रसगासंते धुवा अणाहारे । (गीतिः)
वण्णोयरदरिसणसग-तिआउगणिरयदुग ण वाऽण्णेसिं ॥७९६॥
सट्ठाणव्व हवेज्जा, ससजाईण खलु सेसिगासंते ।
ओघव्व सण्णियासो, हवेज्ज सेसअसजाईणं ॥७९७॥

(हे.चू. "पण०" इच्चाइ बोयालीसाहियतिसयगाहा सामिन्नादिविसेसेण सयमेव भणिदव्वा ॥४५६-७९७॥ अह भंगविचयद्दारं भणिज्जदि—

इति

आचार्यविजयश्रीवीरशेखरसूरिरचितं

सत्ताविहाणं

(सत्ताविधानं)

तत्थ

स्वोपज्ञ हेमन्तप्रभाचूर्णिसमालङ्कृता

पयडिसत्ता

(उत्तरप्रकृतिसत्ता)

पूर्वार्धः

समाप्तः

॥ अथ प्रथमं परिशिष्टम् ॥

॥ मूलगाथाद्यांशाः ॥

अकारादिक्रमेणोत्तरप्रकृतिसत्ताविधानप्रथमाधिकारसन्निकर्षद्वार-
पर्यन्तमूलगाथाद्यांशाः

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
अ	
अंतमुहुत्तं समयो,	३६४
अतमुहुत्तमणाणं,	४२८
अंतमुहुत्तमणू पण०	२७०
अंतिममायाईण,	४६१
अंतिमवज्जणिरयसग०	६५९
अकसायव्व उ सुहुमे,	६८७
अजए जेट्ठो साहिय०	३१९
अजयासुहलेसासुं,	६२५
अजयासुहलेसासुं,	२२६
अजयासुहलेसासु स०	७८४
अडवीसअधुवसत्ता०	३६२
अणचउगसम्ममीसदु०	२०८
अणचउगाउदुगाण,	३७३
अणतित्थाण उवसमे,	२२८
अणमिच्छतिपल्ला ऽण्णो,	३४३
अणमिच्छाउजिणाण अ०	३८७
अणमिच्छासते णो,	७८५
अणिगअसंते सेसति०	६६६
अण्णयरेगासंते	७५५
अण्णाणदुगव्व णिरय०	६१५
अण्णाणदुगे मिच्छे,	३२१
अत्थि णरदुगासते	७९५
अत्थि तिमणसच्चवयण०	२१४
अन्तिमवज्जणिरयसग०	६५९
अपमत्तंता-ऽणाण व,	२३१
अपमत्तंता तिरि०	२३५
अप्पज्जत्तपणिंदिय०	२८४
अप्पज्जत्तेसु चउसु,	६६८
अप्पज्जपणिंदितिरिय०	४२५
अब्भहिय पुव्वाणं,	४४२
अभवम्मि अणाइधुवा,	२५६
अभवियसासाणेसुं,	५१२
अमणे आऊण लहू,	३९९
अमणे सट्ठाणव्व स०	७९३
अवसेसाण सिआ णर०	७१०
असमत्तपणिंदितिरिय	२००
असमत्तपणिंदितिरिय०	२१०
असमत्तपणिंदितिरि व	५७३
असमत्तपणिंदितिरिव्व	२११
अस्सत्ताअ अणाणं,	२६८
अह विण्णेयाणि पयडि०	१९३
अह सच्चउरिविभूषण०	१९०
अहियपणवण्णपलिया,	३०६

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
अहिया समा अड णिरय०	२६४
आ	
आउअसंते-ऽणाण व,	७७५
आउतिगणिरयदुगतिरि०	६१९
आउ५ठाणव्व विउवि०	५७२
आउसठाणव्वा-ऽऽउग०	६२६
आऊणेगअसंते,	७२२
आणतपहुडीसु विण दु०	२०२
आहारदुगे ण भवे,	७०९
आहारदुगे णेया,	५३२
आहारदुगे णेया,	२१६
आहारदुगे सुहमे,	४८०
आहारमीसजोगे,	३६१
आहारमीसजोगे,	३०२
आहारसगस्स दुहा,	४५१
आहारसगस्स लहुं,	४४६
आहारसत्तगस्स उ,	४६६
आहारसत्तगस्स उ,	३३१
आहारसत्तगस्स ख०	३१४
इ	
इगअसइ सजाईण अ०	७८६
इगवीसाअ अवेए,	५०६
इगवेअणीअसते,	५४५
इगसंते एगारस०	५०३
इगसंतेऽण्णस्स तहा,	५७८
इत्थीणपुंससते	५०७
इह तहुवसमे मीसे	३६३
उ	
उच्चस्स णीअसते	४६१
उच्चस्सोघव्व तिणर०	४६०
उरले सव्वाण लहू	२६८
ऊ	
ऊणपणवण्णपलिया	३६५
ऊणपणवण्णपलिया	४१६
ऊणा गुरुकायठिई	३४५
ऊणा लहुकायठिई	३३६
ए	
एगस्स असंते चउ०	६३७
एगस्स असंते पण०	६३६
एगस्स असत्ताए,	६५६
एगस्स दसणतिगा,	४५९
एगस्सा-ऽऽउस्स विउव०	४८५
एमेव दुणिहाण,	७१८
एवं आहारदुगे,	५०१
एव दुमणवयेसुं	५८०
एव दुमणवयेसु स०	७४३
एवमपज्जणरे णर०	६९६
ओ	
ओघव्व अणाणदुगे,	४४७
ओघव्व अणाणदुगे,	४२०

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः	गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
ओघव्व अणाहारे,	६३५	कायुरलेसु जहण्णो,	३५६
ओघव्व अणाहारे,	६५२	कालो अणाइणंतो,	२६१
ओघव्व असत्ताए,	६५०	कोहाईसु पुमव्व स०	२२२
ओघव्व उरलमीसे,	६७३	ख	
ओघव्व कायुरालिय०	५२८	खइआणाहारेसु,	६५१
ओघव्व णिरयपढमति०	४६२	खइए विण दरिसणसग०	६८८
ओघव्वऽण्णासु णवरि,	४८६	ग	
ओघव्व तिकोहाइसु,	६८२	गयवेए अकसाए,	५०५
ओघव्व तिमणुएसु,	५२२	गयवेए अकसाए,	२२१
ओघव्व पणिंदियतस०	७००	गयवेए अकसाए,	४७२
ओघव्व माणुसीए,	४६६	गयवेए अकसाए,	५३३
ओघव्व सजोग्गाणं,	७३६	गुरुमूणगुरुठिई अण०	४३६
ओघव्व सजोग्गाणं,	७६१	घ	
ओघव्व सण्णियासो,	५७४	घाइअधुवसत्ताणं,	५५६
ओघव्व सण्णियासो,	४७१	घाइचउआउजाइणिरय०	२१५
ओघव्वाउजिणाण दु०	२९२	घाइचउआउसुरदुग०	५८३
ओघव्विगतीसाए,	४५०	घाइछचत्तिआउग०	७१७
ओरालमीसजोगे,	३५८	घाईणरयतिरिणरसुर०	२५६
क		घाइतिरियाउतेरस०	२४६
कम्मपयडयकाऊसु	४६३	घाइतिरियाउतेरस०	५७६
कम्मतिवेअकसाय०	११६	घाइदरिसणसगरहिअ०	१५६
कम्माणाहारेसु	३०३	घाइसुराउगतेरस०	३१३
कायउरलदुगकम्मण०	७०७	च	
कायुरललोहणयणियर०	६७०	चउअणमिच्छाइतिगअ.	६८४
कायुरलाहारेसु स०	७४५	चउआउतित्थदसण०	२१८

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
चउआलीसाहियसय०	३०७
चउकोहाईसु कमा,	७१०
चउणाणोहीसु मणव	७७३
चउबोआवरणाण व,	६३८
चउसजलणाण सिआ,	६४४
चत्ताघाइतिरियिगा०	७५०
चत्ताघाइतिरियिगा०	७९६
चरमणिरयअसमत्त०	४७९
छ	
छण्णदरिसणाण सिआ,	६७४
छोहसुहमभेएसुं,	२८९
ज	
जिणअसइ व सेसाणं,	७१४
जिणणिरयसुराऊ विण,	२०१
जिणतेरणामणरसुर०	५३१
जिणसंते णिरयज्जति०	५१६
जेट्ठं अंतमुहुत्तं,	४२६
जेट्ठो तिरियाउमणुय०	२६६
ण	
णऽण्णाण भवे जेट्ठं,	४५४
णऽण्णाणऽहियतिपल्ला,	४३६
ण तिरियिगारसगे णर०	७०८
णत्थि चउअणूणाणं,	४०४
णत्थि णिरयाउसंते,	६११
णपुमे थीए दुविहो,	३६८

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
णयणेयरसण्णीसुं,	७८७
णयणे सण्णिम्मि दुहा,	३८४
णरआउगइपणिदिय०	२१२
णरगइउच्चाण उ सग०	५५३
णरगइपणिदितसतिग०	५५१
णरगइपणिदितसतिग०	५५२
णरगइपणिदितसतिग०	६१०
णरतिगदेवदुगविउव०	७६४
णरदुगपणिदितसतिग०	७११
णरदुगपणिदितसतिग०	४६६
णरदुगमुच्चासंते,	७३३
णरदुगसइ वुच्चस्स उ,	५७०
णरदुगसतम्मि सिआ.	५९१
णरिगदुगुच्चेहिं धुव०	७४०
णवदरिसणावरणओ,	६५७
णवबोआवरणाणं,	४७३
णवर णेया बारस०	५११
णवरं भिन्नमुहुत्तं,	३०४
णवरं मिच्छस्स गुरू,	३८८
णवरं सम्मस्स सिआ,	६८६
णवरि अणाणं ऊणा,	३८९
णवरि असत्ता णियमा,	७७६
णवरि जहण्णो समयो,	३९८
णवरि जिणस्स जहण्णं,	४४६
णवरि ण जिणसते तिरि०	६०१

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः	गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
णवरि णरदुगस्स सिआ,	४६७	णियमा-ऽऽउदुगस्स विउवि०	७९०
णवरि णरदुगुच्चाणं,	४१४	णियमा णराउसते,	६३०
णवरि णराउअसंते,	७४२	णियमा ऽणचउदसण्ह०	६४२
णवरि तिरिये तिपल्ला,	२८३	णियमा ऽण्णतेरदरिस०	७१९
णवरि दरिसणसगुणअ०	७२१	णियमा-ऽण्णाण सुराउ०	६१२
णवरि दुतसचक्खुसुं,	४१२	णियमा-ऽऽण्णाणाहारग०	५२४
णवरि पणऽणुत्तरेसुं,	२७८	णियमा-ऽण्णेसिं एवं,	५६८
णवरि लहू तीसु खणो,	३१८	णियमाऽण्णेसिं तेरस०	५३०
णवरि व जिणस्स सव्वहु,	५३६	णियमा-ऽण्णेसिं मज्झिम०	४६०
णवरि विणा सयलागणि०	२११	णियमा ऽण्णेसिं सेसिग०	५१७
णाऽऽउदुगस्साऽऽउगतिग०	५६३	णियमा-ऽण्णेसिं सोलस०	६००
णाणतिगोहीसु दुहा,	३७२	णियमा सेसाण सिआ,	६८३
णामसठाणव्व अधुव०	५६१	णियमा-ऽऽहारगसगसइ,	५६०
णामसठाणव्व धुवा,	५६६	णियमा होइ विउव्वे०	७९४
णामाणं दुपणिंदिय०	५०५	णियमियरेणाहारग०	६९४
णामाण केवलदुगे,	६०९	णियमुच्चस्स उ सुरदुग०	६०२
णामाण केवलदुगे,	७१२	णिरयज्जतिणिरयतिरिय०	६६३
णामाण सठाणव्व उ,	५९०	णिरयतइअणिरयेसुं,	२७६
णारगदुगसंते खलु,	५१९	णिरयतिरिक्खाऊणं	२५०
णारगदेवदुगाणं,	५३९	णिरयतिरिक्खाऊणं	३३५
णारगदेवाऊओ,	४६३	णिरयतिरिक्खाऊ विण,	२०५
णारयतिरियाऊणं,	२४९	णिरयतिरिणराऊणं,	३०९
णिअमा होएज्ज तिरिय०	७३४	णिरयदुगस्स अभविये,	५३७
णिद्दादुगस्स दुविहो,	३७६	णिरयदुगासइ णियमा०	७५२
णियमा आहारदुगे०	६७६	णिरयदुगेगअसंते,	६४५

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
णिरयदुगे तस्स अउसु,	३४१
णिरयपढमणिरयेसुं,	२७५
णिरयपढमाइतिणिरय०	२०७
णिरयव्व णवरि णियमा०	४१५
णिरयसुराऊण लहू,	२६३
णिरयसुराऊण वि वा,	५१३
णिरयसुराऊण सिआ,	४८४
णिरयसुराऊहिन्तो,	६६१
णिरयाउगस्स अयरा,	३२२
णिरयाउजिणाण लहू,	३३०
णिरयाउस्स तिअयरा०	३३२
णिरयाउस्स सुहासुं,	३२६
णिरये पढमाइणिरय०	१६८
णीअअसत्ताअ सिआ,	७२७
णीअस्स उच्चसंते,	४८६
णूणा तेत्तीसुदही,	३९४
णेया अजोगिअंता,	२३४
णेया इहुत्तरपयडि०	१६१
णेया बासीईए,	२३६
णेयो गुरुकायठिई,	३६६
णेयो गुरुकायठिई,	३६७
त	
तइअस्सेगअसंते,	६३६
तसतिगसुहगाऽऽइज्जग०	७२०
तह आहारगसत्तग०	६०४
तह णिरयदुगस्स सिआ,	६४६
ताउ कमाऽहियऽहियअयर०	२३२
तिअणाण धुवा अणिगअ०	६७८
तिणरेसु मुहुत्तंतो,	३४७
तित्थअसंतम्मि सिआ,	६९६
तित्थस्स मुहुत्तंतो,	३२०
तित्थस्स लहुभवठिई,	३४०
तित्थस्स सुहासु खणो,	३४५
तित्थाहारगसत्तग०	२३७
तिदरिसणमोहचउअण०	२५७
तिदरिसणाण तिरितिगे,	२५२
तिपणिंदियतिरियेसुं,	४३१
तिपणिंदियतिरियेसुं,	४०८
तिमणुयदुपणिंदियतस०	४७६
तिरिचउगे देसजई	२४५
तिरिणिरयाऊण लहू,	३०५
तिरितिपणिंदतिरियणर०	६६०
तिरिमणुयाऊण सयल०	२७३
तिरियणराउगसंते	४६४
तिरियव्व सजोग्गाणं,	३५०
तिरियाउअसइ णरदुग०	७६१
तिरियाउअसंते णो,	७३८
तिरियाउगस्स णो णर०	७७७
तिरियाउतेरणाम०	५७८
तिरियाउस्स अयरसय०	३७०

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
तिरियाउस्स विउविगा०	७४१
तिरिये अंतमुहुत्तं,	४०७
तिरियेगारसगस्स ण,	७०६
तिरियेगारसगस्स ण,	७०५
तिरियेगारसगेगअ०	६९७
तिरिये पणिंदियतिरिय०	१६६
तिरिये मिच्छस्स अहिय०	३४२
तिरिये लहुकायठिई,	२८१
तीसु वि थीणद्धितिगति०	२००
तीसोघव्व लहुं विण,	४१५
तुरिआईसु इगमए,	७२६
तेउअणिलेसु तेसिं,	२६०
तेत्तीसघाइआउग.	२१५
तेत्तीसघाइआउग०	२२७
तेत्तीसा मिच्छस्स अयर.	३५४
तेरसणाममणुयसुर०	४७०
तेरसणामासइ सम्म०	७३७
तेरसणामिगसंते,	५२७
तेवीसा-ऽण्णाण मिश्रा,	६४१
तेसु पयडिआईसुं,	१६२
थ	
थिव्व पुमे सव्वह उ व,	६७९
थिव्व पुरिसे णवरि ण अ.	७६३
थीअ जहण्णो सोलस०	३६३
थीअ णपु सगसंते,	५०२
थीए थीणद्धियतिग०	७५७
थीणद्धितिगतिरियदुग०	५४३
थीणद्धितिगतिरियदुग०	५४८
थीणद्धितिगसुराउग०	२३०
थीणद्धितिगस्स तहा,	३७५
थीणद्धितिगाईण,	६०६
द	
दंसणआउगदुगजिण०	३४६
दंसणआहारगसग०	३७१
दंसणविउवाहारग०	२०६
दंसणसगतित्थाण व,	५९७
दंसणसगस्स चउणाण०	५०९
दंसणसत्तगसंते,	५९६
दरिसणआवरणाणं,	६५३
दरिसणिगअसंते गय०	६८०
दुअणाणव्व हवेज्जा,	३२६
दुअणाणाजयतिअसुह०	७१३
दुदरिसणमोहचउअण०	५४६
दुपणिदितसभवीसु ति०	२१३
दुपणिदितसेसु णर०	३५२
दुपणिदितसेसु दुहा,	४३५
दुमणवयणचउणाणति०	६५५
दुवयेसु णिरयदुगिगा०	७०३
दुविहं देवाउस्स कमा०	५१६
दुविहो पणणिद्दाण,	३८५

गाथाद्यांशा:	गाथाङ्का:	गाथाद्यांशा:	गाथाङ्का:
दुविहो समयो णेयो,	३६२	पणमणवयकायउरल०	४१३
दुहिगक्खे काये लहु०	४३४	पण विग्घणावावरणिगा०	६०३
देवाउगस्स ऊणति०	३६७	परमडकसायणपुमग्र०	७५९
देवाउजिणाहारग०	३१५	परमत्थि साइसंतो,	३७८
देवाउस्स जहण्ण	४४४	परमाउतिगस्स गुरू,	३५३
देसंता तह सिद्धा,	२३९	परमाहारसगजिणाण	३६५
देसूणद्धपरट्टो,	२६२	परमूणिगतीसुदही	४२२
देसे णराउगस्स ण,	७५६	परिहारे तह देसे	६६१
दोसु वि गुरुकायठिई,	३५७	परिहारे व सुराउजिणा०	६२०
ध		पल्लासंखंसो सुर०	४५२
धुवघाइपचचत्ता०	७५३	पल्लासंखियभागो,	४४५
धुवसत्ताअडवीसा,	७६२	पल्लासंखियभागो,	२७४
धुवसत्ताणोघअणव०	३१७	पल्लासंखियभागो,	४३७
धुवसत्तातिरियाउवि०	७४४	पुरिसे अडतीसाए	५०४
धुवसत्ताहि विरोहो,	७८८	ब	
धुविगासंते-ऽण्णाण व,	७०२	बारकसायतिदंसण०	६४३
धुवियरणरदुगविउवस०	५८८	बीआवरणऽण्णछगा,	४७४
न		भ	
नियमाऽत्थि इयरसंते,	४८१	भंगविचयो उ भागो,	१९४
प		भवणतिगम्मि विणा जिण०	२८३
पंचक्खऽवाहारे,	४००	भविये अंतमुहुत्त,	३६१
पज्जणरव्वऽखिलाण,	६१६	भिन्नमुहुत्तं णयो,	३१०
पणणाणावरणाओ,	४५६	भिन्नमुहुत्तं दुविहो,	३००
पणऽणुत्तरेसु सम्मअ०	६७१	भिन्नमुहुत्त दोसु अ०	३२८
पणमणवयकायउरल०	२४१	भिन्नमुहुत्तमणाणं,	२७१

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः	गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
म		मिच्छासइ ण णराउस्स	७६०
मज्झिमकसायअट्ठग०	५४६	मिच्छे सण्णिम्मि तहा,	१६७
मणुयव्व केवलदुगे,	५३४	मिस्सस्स सिआ ऽण्णाण ण,	६६७
मणुयाउगसते वा,	५८६	मिस्सस्स सिआ सम्मअ०	६६९
मणुयाउस्सऽण्णुण्णं,	७६५	मिस्सस्सेवं णवरं,	७७८
मणुयाउस्स तिणाणोहि०	४४३	मिस्से सम्मासइ णो,	६८९
मणुयाउस्स तिणाणोहि.	४१८	मीसं सम्मं तित्थं,	२०६
मणुयाउस्स धुवा मण०	५८१	मीसासंते णियमा,	७९२
मणुयाउस्स पुहुत्तं,	३११	मीसे तह सासाणे,	५५०
माणाईसु कमिगदुति०	७६६	मीसे सव्वाण भवे,	५१५
मिच्छअसंतम्मि सिआ,	६६५	मोहस्सोघव्व भवे,	४९८
मिच्छअसंते दरिसण०	६७५	मोहाण उरलमीसे	५८५
मिच्छचउअणरहिअधुव०	७४६	मोहाणं विउवदुगे,	५६४
मिच्छव्वऽण्णाण णवरि,	६३३	मोहाण मोहसंते	५५७
मिच्छस्सऽणव्व दोसुं,	३४८	मोहाण सठाणव्व उ	५९९
मिच्छस्स मिस्ससंते,	४६४	मोहाण सठाणव्व०	५६२
मिच्छस्स मुहुत्तंतो,	३८६	मोहाण सठाणव्विग०	७८२
मिच्छस्स वि तीसु सिआ,	५६४	मोहाणोघव्व भवे,	५०८
मिच्छस्स सहस्ससमा,	३३८	मोहिगसंतम्मि सिआ,	६०५
मिच्छाउतिगाहारग०	४२९	मोहिगसंते देसे	६२१
मिच्छाणाउजिणाणं,	३६०	ल	
मिच्छाणाणाउअधुव०	७५१	लहुजेट्ठो धुवसत्ता	[illegible]५८
मिच्छाणासंते णर०	७४८	लहुमणसम्मणिरयदुग०	४३८
मिच्छाणासते णो,	७३१	लहुमोघव्व णपुंसे	४४०
मिच्छा तह सम्माई,	२३८	लहुमोघव्व णारतिगे	४३२

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः	गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
लहुमोघव्व सुराउ०	४४८	विउवेगारसगस्स व,	२८८
लहुमोघव्वाहारे	४५३	विउवेगारसगस्स वि,	२९४
लेसासु लहू समयो,	३२४	विउवेगारस्स दुहा,	३४४
व		विक्रियमीसे अजए,	६६४
व अवेए अकसाए	६६२	विक्रियमीसे विण णर०	२०४
व जिणस्साहारसगा,	६६०	विक्कियमीसे सासण०	२४८
व जिणाहारसगाणं	५३५	विक्कियसगसंते सुर०	५२०
व दरिसणाहारसगजिणा०	५५४	विग्घणवावरणाओ,	५४१
वा-ऽऽउगघाईण अधुव०	५८२	विग्घणवावरणाणं,	२२९
वाऽऽउणिरयणरसुरदुग०	५८६	विण चरमलोहमेवं,	६८५
वा-ऽण्णाण जिणअसंते,	६४९	विण्णेयो देसूणा,	३७४
वा-ऽण्णाण दरिसणसगा०	७६७	विब्भंगम्मि दुदंसण०	२२४
वा-ऽण्णाण विउवदसगा०	६९८	वीसापज्जत्तेसु स०	३४६
वाऽण्णाणाहारगसग०	७२५	वेअतिगकसायचउग०	४८८
वा-ऽण्णेसिं सम्मदुगअ०	७४६	वेअतिगकसायचउग०	६५८
विउवव्व तिग्राउ विण,	२२५	स	
विउवसगिगासइ धुवा०	६४८	संजमअहखाएसुं,	३८०
विउवसगेगअसते,	६९५	संजमअहखायसुइल०	६५४
विउवाहारगसत्तग०	२९७	संजलणव्वऽण्णेसिं,	६६२
विउवाहारगसत्तग०	५२१	संते एगस्स भवे,	४५८
विउवाहारगसत्तग०	५२६	संते एगाउस्स अ०	४८३
विउवाहारदुगेसुं,	७५४	संतेऽण्णतिण्ह णियमा,	४५७
विउवेगारसगस्स उ,	४३३	संते साउस्स चरम०	४७८
विउवेगारसगस्स उ,	४३०	सगचत्तघाइआउग०	२१६
विउवेगारसगस्स य,	२६७	सगवीसाए णियमा,	५००

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः	गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
सट्ठाणव्व अपज्जग०	७३५	समइअछेएसु दुहा,	३८१
सट्ठाणव्व अमविये,	६२८	समयो अणमिच्छअधुव०	४०२
सट्ठाणव्व उवसमे,	६३२	समयो अणसेसअधुव०	३०८
सट्ठाणव्व तिरिक्खे,	७३०	समयो लहुं णरतिगे,	४०९
सट्ठाणव्व विभंगे,	६१४	समयो लहू विभंगे,	३७९
सट्ठाणव्व हवेज्जा,	७९७	सम्मखइअसण्णीसुं,	२४२
सट्ठाणव्वाऊणं,	५५०	सम्मगमीसअसंते,	७८०
सत्तरसु सण्णियासो,	४७७	सम्मत्तखाइएसुं,	३१३
सत्तसु वि मग्गणासुं,	२८२	सम्मत्तमीसणारग०	७३२
सत्ताअ अणरहिअधुव०	४०३	सम्मत्तमीसणारग०	७२३
सत्ता ओघव्व भवे,	२५५	सम्मत्तमीसमोहग०	४११
सत्ता णिरयामरदुग०	५३८	सम्मत्तमीससंते,	५६१
सत्ताऽत्थि अपज्जत्तग०	४९६	सम्मदुगतिआउविउवि०	७२६
सत्ताऽत्थि साउसंते,	४८२	सम्मदुगेगअसंते,	६७७
सत्ता व णिरयणरसुर०	४६५	सम्मम्मीसाहारग०	३०१
सत्ताऽसत्ता-ऽत्थि पयडि०	१९५	सम्मस्स असत्ताए,	६४०
सत्ता सव्वेसु तिरिय०	४८७	सम्मस्स सिआ मिच्छअ०	६७२
सत्तासामी तिमणुय०	२४०	सम्माउदुगाण धुवा,	७८६
सत्ता सिआ हवेज्जा,	५४४	सम्मासंते तित्था०	७७४
सपरपहाणे सव्वह,	५७७	सम्मे व णराउस्मा०	६१८
सपरपहाणे सव्वह,	६१७	सम्मे होइ तिहा चउ०	२५८
सपरप्पहाणदंसण०	६३१	सव्वणिरयअणणुत्तर०	४२७
सप्पाउग्गाणंतर०	४५०	सव्वणिरयअणणुत्तर०	४०५
सप्पाउग्गाणंतर०	४५५	सव्वणिरयदेवेसु अ०	३३७
सप्पाउग्गाणोघव्व	७७१	सव्वणिरयदेवेसु स०	७२८

गाथाद्यांशाः	गाथाङ्काः
सव्वणिरयेसु तिरियति०	२४४
सव्वतिरियएगिंदिय०	६६३
सव्वतिरियएगिंदिय०	५१८
सव्वप्पयडीण णयण०	६२७
सव्वह् असंतसामी,	२५१
सव्वाण अणाहारे,	४०१
सव्वाण केवलदुगे,	३७७
सव्वाण णत्थि अण्णह्	४२४
सव्वाणऽण्णह् लहुगुरु०	३३३
सव्वाण लहू पणमण०	३५५
सव्वाण लहू समयो,	३१६
सव्वाण वेअगे-ऽणू,	३६६
सव्वाणाहारे लहु०	४२३
सव्वाणोघव्व णपुम०	४१७
सव्वाणोघव्वऽत्थि ति०	५७१
सव्वाणोघव्व भवे,	४२१
सव्वे वि अत्थि अण्णह्,	३२४
सव्वेसिं णवरि सिआ,	५७५
सव्वेसुं एगिंदिय०	५६७
ससजोग्गाणेगासइ,	७३६
साइअणंतो-ऽण्णेसिं,	२६६
साइअणंतो तह् जिण०	२७२
साइअणाइधुवियरा,	२५३
साइधुवा ऽत्थि असत्ता,	२५४
साउअगरहिअधुवसत्ताण	२८०
सायव्व सुरदुगविउव०	७६८
सासणसजोगिरहिआ,	२४७
सासाणे इगसंते	६३४
साहारणस्स य सिआ,	५४२
सियराउगआहारग०	५५१
सियराउतिगस्स लहू	२७६
सुरदुगविउवसगाणं,	६०८
सुरदुगविउवसगासइ,	७४७
सुरदुगविउवाहारग०	५५५
सुरदुगसंते तेरस०	४६८
सुरदुगिगअसंते णियमा	६४७
सुहअसुहासुं कमसो,	३२७
सुहमंता विण्णेया,	२३३
सुहमाविहिसुक्कासुं,	५२६
सुहमे अंतमुहुत्तं,	३८२
सुहमे दंसणासंते,	५१२
सुहमे मोहिगसते,	६२३
सेसअधुवसत्ताणं	३१२
सेसछसोईओ इग०	५७६
सेससुरेसु विउवदुग०	५२३
सेसाऊण जह्ण्णो,	२८६
सेसाण अंतरं णो,	४०६
सेसाण अपज्जतसव्व	६१३
सेसाण अवेअव्व उ,	७७२
सेसाणं जेट्ठठिई	३२३

गाथाद्यंशाः	गाथाङ्काः
सेसाणं जेट्ठठिई,	२९९
सेसाण णरदुगव्व उ,	६२९
सेसाण पचसु वि साइ०	२६०
सेसाण पुमव्व णवरि,	५६५
सेसाण पुमव्व णवरि,	५५८
सेसाण पुमव्व णवरि,	५६०
सेसाण मुहुत्तंतो,	२६६
सेसाण मुहुत्तंतो,	३६०
सेसाण मुहुत्तंतो,	२६५
सेसाण लहुठिई पर०	२६३
सेसाण लहू समयो,	२८७
सेसाण लहू समयो,	३५१
सेसाण लहू समयो,	३२१
सेसाण सम्मसंते	४६७
सेसाण सिआ एगा०	७१५
सेसाणमेव परम०	५८४
सेसाणोघव्व णवरि,	६०७
सेसाणोघव्व भवे	५१४
सेसाणोघव्व भवे,	५१०
सेसासु मग्गणासुं,	४७५
सेसिगसंतम्मि सिआ	५६८
सेसिगसंतम्मि सिआ	५९२

गाथाद्यंशाः	गाथाङ्काः
सेसेगअसत्ताए,	७१६
सेसेगअसंते खलु	६८१
सेसेगमोहसंते,	५४७
सेसेसुं णिरयेसुं	६९२
सोलसगथोणगिद्धिय०	७७१
सोलसथीणद्धितिगाइ०	७६६
सोलसथीणद्धितिगाइ.	७८१
सोलसथीणद्धितिगा०	७८३
सोलसथीणद्धियतिग०	६२४

ह

गाथाद्यंशाः	गाथाङ्काः
हवए कायउरलदुग०	२१७
हवए णरतिगसुरदुग०	७५८
हस्सछगदुवेआणं,	४६२
हस्सछगस्स दुहा खलु,	३६६
होइ असंखपरट्ठा,	२७१
होइ जहण्णो समयो,	३३४
होइ ण देवदुगविउव०	७०४
होइ णरदुगासंते,	७२४
होइ दुहा परिहारे	३८३
होइ पणमणतिवयचउ०	७०१
होइ लहुं णरसुरदुग०	४५१

॥ अथ द्वितीयं परिशिष्टम् ॥

॥ श्रीशंङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री आतम-कमल-वीर-दान-प्रेम-रामचन्द्र-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः

आचार्यश्रीविजयवीरशेखरसूरिरचितम्

उदयस्वामित्वं

णमिअ अणुदयणुदीरग-सिरिवीरं उदयुदीरणासामिं ।
ओहाएसेहि कहिमु, पयडीसु जहसुयं गुरुपसाया ॥१॥
उदओ विवागवेअण-मुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं ।
सतरसयं मिच्छे मीससम्मआहारजिणणुदया ॥२॥
सुहमतिगायवमिच्छं, मिच्छंतं सासणे इगारसयं ।
णिरयाणुपुव्विणुदया, अणथावरइगविगलंते ॥३॥
मीसे सयमणुपुव्वी-ऽणुदया मीसोदएण मीसंतो ।
चउसयमजए सम्मा-ऽणुपुव्विखेवा बिअकसाया ॥४॥
मणुतिरिणुपुव्विविउवड-दुहगअणाइज्जदुगसतरछेओ ।
सगसीइ देसि तिरिगइ-आउनिउज्जोअतिकसाया ॥५॥
अट्ठच्छेओ इगसी, पमत्ति आहारजुअलपक्खेवा ।
थीणतिगाहारगदुग-छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥६॥
सम्मत्तंतिमसंघयणतिगच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे ।
हासाइछक्कअंतो, छसट्ठि अनिअट्टि वेअतिगं ॥७॥
संजलणतिगं छच्छेअ सट्ठि सुहुमंमि तुरिअलोभंतो ।
उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनारायदुगअंतो ॥८॥

सगअन्न खीणदुचरिमि, निद्दुगंतो अचरिमि पणवन्ना ।
नाणंतरायदंसण-चउछेअ सजोगि बायाला ॥९॥
तित्थुदया उरलाथिर-खगइदुगपरित्ततिगछसंठाणा ।
अगुरुलहुवन्नचउनिमिणतेअकम्माइसंघयणं ॥१०॥
दूसरसुस्सरसाया साएगयरं च तीसवुच्छेओ ।
बारस अजोगि सुभगा-इज्जजसऽन्नयरवेअणिअं ॥११॥
तसतिगपणिंदिमणुआउगइजिणुच्चं ति चरिमसमयंतो ।
उदयव्वुदीरणा पर-मपमत्ताई सगगुणेसु ॥१२॥
एसा पयडितिगूणा, वेयणियाहारजुअलथीणतिगं ।
मणुयाउ पमत्तंता, अजोगिअणुदीरगो भयवं ॥१३॥
इय उदयुदीरणाणं, देविंदायरिअरइअकम्मथवा ।
उद्धरिओ खलु ओहो, अह भणिमो मग्गणासु तु ॥१४॥
णिरयेसुदयछसयरी, थीणद्धितिगपुमथी विणा घाई ।
सायेयरणिरयाऊ, णीअं णामस्स तीसाओ ॥१५॥
णिरयुदयारिहणामा, णिरयविउवदुगपणिंदिहुंडधुवा ।
परघूसासुवघाया, कुखगइतसदुहगचउगाणि ॥१६॥
सम्मत्तमीसऽणुदया, मिच्छे चउसत्तरी उ मिच्छंतो ।
णिरयाणुपुव्विणुदया, दुसयरिपयडीअ सासाणे ॥१७॥
चउअणछेओ मीसे, गुणसयरी मीससजुआ णेया ।
मीसच्छेओ सम्मे, सयरी णिरयाणुसम्मजुओ ॥१८॥

णवरं पंकाईसु, सासाणो च्च णिरयाणुपुव्विखओ ।
बीअतइअणिरयेसु वि, एवं इच्छंति अण्णे उ ॥१९॥
सिद्धंतमएऽज्जणिरय-छगे ससम्मो वि जाइ तेणुदओ ।
छज्जणिरयेसु तुरिए गुणम्मि णिरयाणुपुव्वीए ॥२०॥
तिरिये विउवट्ठगणर-तिगआहारदुगतित्थउच्चूणा ।
सत्तसयं मिच्छत्ते, पंचसयं सम्ममीसूणा ॥२१॥
सासाणे मिच्छायव-सुहमतिगंता सयं मीसे । (उपगीतिः)
अणजाइचउगथावर-तिरियाणु विण समीसा य ॥२२॥
एगणवई दुणवई, सम्मे तिरियाणुपुव्विसंजुत्ता ।
देसे विणा णरतिगं, ओघव्व हवेज्ज चुलसीई ॥२३॥
पज्जपणिंदितिरिक्खे, थावरजाइचउगायवेहि विणा ।
तिरियोहो अडणवई, मिच्छे विण दोहि छण्णवई ॥२४॥
मिच्छत्तमोहवज्जा, पयडी सासायणम्मि पणणवई ।
तिरियव्व अत्थि तीसु, मीसाईसु गुणठाणेसु ॥२५॥
तदपज्जे घाई विण, थीणद्धितिगपुमीससम्मित्थी ।
सायेयरतिरियाऊ, णीअं णामस्स सगवीसा ॥२६॥
तिरिउरलदुगपणिंदिय-धुवहुंडछिवट्ठबायरुवघाया ।
तसपत्तेअअपज्जा, दुहगाणादेयअजसाणि ॥२७॥
विउवऽट्ठगतिरितिगचउ-जाइपणगथावरायवदुगूणा ।
मणुए दुसयं मिच्छे, पंच विणा सत्तणवईओ ॥२८॥

मिच्छा पज्जूणा पण णवई सासणे तिरिक्ख मीसतिगे ।
णवरि णियाऽत्थि तहुच्चं, णुज्जोअं णीअमवि देसे ॥२९॥

सत्त पमत्ताईसु, ओघव्व अपज्जतिरिपणिंदिव्व ।
असमत्तनरे णवरं, मणुयतिगं तिरितिगट्ठाणे ॥३०॥

देवेसु उदयसई, थीणद्धितिगणपुमा विणा घाई ।
सायेयरदेवाऊ उच्चं णामस्स तेत्तीसा ॥३१॥

सुरविउव्वदुगपणिंदिय-ऽणादेयदुहगसुहागिई अजसं ।
परघूसासुवघाया, सुखगइतससुहगचउगधुवणामा । ३२॥(गीतिः)

सम्मत्तमीसमोहा, वज्जेउं अट्ठसत्तरी मिच्छे ।
मिच्छत्तमोहवज्जा, सासाणे सत्तसयरीओ ॥३३॥

विण अणसुराणुपुव्वी, मिस्से मिस्सोदयेण य तिसयरी ।
मीसूणा चउसयरी, सम्मे सम्माणुपुव्विजुआ ॥३४॥

णवरं सिद्धंतमए, भवणतिगे एवमेव कम्ममए ।
देवाणुपुव्विवज्जा, विणणेया तिसयरी सम्मे ॥३५॥

तइआईसु सुरेसु, गेविज्जंतेसु इत्थिवेऊणा ।
पणऽणुत्तरेसु तुरिअं, च गुणं तहि तिसयरी त्थिण थिं ॥३६॥

एगिंदिये असीई, घाई थीपुरिससम्ममीसूणा ।
मायेयरतिरियाऊ, णीअं णामस्स तेत्तीसा ॥३७॥

तिरिदुगएगिंदियुरल-धुवथावरचउगबायरतिगाणि ।
दुहगाणादेयअजस-जसहुंडगपंचपत्तेआ ॥३८॥

मिच्छे असीइपयडी, सासाणम्मि गुणसत्तरी मोत्तुं ।
थीणद्धिसुहमतिगमिच्छआयवदुगपरघायऊसासा ॥३९॥(गीतिः)
विगलेसु इगिंदियथावरदुगसाहारणायवूणा ता ।
ससजाइउरलुवंगकु-खगइछिवट्ठतसदुसरजुआ ॥४०॥
मिच्छे बासीई इग-सयरी साणे अथीणगिद्धितिगं ।
मिच्छकुखगइपराघू-सासुज्जोअसरदुगअपज्जविणा ॥४१॥(गीतिः)
अत्थि चउजाइआयव-साहारणथावरदुगूणा ।(उपगीतिः)
चउदसयं पंचक्खे, पण विण मिच्छे णवजुअसयं ॥४२॥
सासाणे छसयं विण, मिच्छ पज्जणिरयाणुपुव्वीहिं ।
ओघव्व जाणियव्वा, मिस्साईसु गुणठाणेसुं ॥४३॥
एगिंदियव्व पुढवी-दगहरिएसु परमत्थि पुढवीए ।
साहारणं विण वणे, विणायवं दोण्णि त्ति विण दगे ॥४४॥
साहारायवदुगजस-वज्जो एगिंदियोहभंगो उ ।
तेउअणिलकायेसुं, ओहे मिच्छे य णायव्वो ॥४५॥
एगिंदियसाहारण-थावरसुहमायवं विणाऽत्थि तसे ।
सत्तरससयं ओहे, मिच्छे पंच विण बारसयं ॥४६॥
सासाणम्मि णवसयं, मिच्छापज्जणिरयाणुपुव्विविणा ।
ओघव्व जाणियव्वा, मिस्साईसु गुणठाणेसुं ॥४७॥
मणवयणेसुं आयव-थावरजाइअणुपुव्विचउगूणा ।
मिच्छम्मि विणा पणगं, मिच्छूणा सासणे तिसयं ॥४८॥

ओघव्व जाव सगुणं, परमणुपुव्विं विणा सयं सम्मे ।
ववहारवये कुज्जा, ओहे मिच्छे य विगलजुआ ॥४९॥

ओघव्व कायजोगे, पढमा तेरस गुणा अणाणदुगे ।
अज्जा दो तिण्णि व णव, तिणाणओहीसु अजयाई ॥५०॥

सत्त खलु पमत्ताई, चउत्थणाणम्मि केवलदुगम्मि ।
दो चरमगुणा समइअ-छेएसु चउपमत्ताई ॥५१॥

सट्ठाणं खलु देसे, सुहमे सासाणमीसमिच्छेसु ।
चत्तारि अहक्खाये, चरमा-ऽज्जा य चउरो अजए ॥५२॥

बार अचक्खुदंसिणे, पढमा भवियम्मि सव्वगुणठाणा ।
पढममभविये चउरो, अजयाई वेअगे णेया ॥५३॥

ओराले विउव्वऽट्ठग-आहारऽणुपुव्विदुगअपज्जूणा ।
णवजुत्तसयं मिच्छे, छसयं सम्माइ तगहीणो ॥५४॥

मिच्छचउजाइआयव-साहारणथावरदुगूणा ।
माणे सगणवई चउ-णवई मीसे समीसअणहीणा ॥५५॥(उद्गीतिः)

मीसं विणा ससम्मा, सम्मे ओघव्व सेसगुणणवगे ।
णवरि पमत्ते आहारदुगाभावाउ गुणसयरी ॥५६॥

थीणद्धितिविउव्वट्ठग-सरायवाहारखगइआणुदुगं ।
परघूमासा मीसं, विणऽट्ठणवई उरलमीसे ॥५७॥

सम्मजिणूणा मिच्छे, मिच्छापज्जत्तसुहुमसाहारं ।
विण सासणे दुणवई, सम्मजुआ सम्मगे गुणासीई ॥५८॥(गीतिः)

चउअणजाइणपुमथी-थावरऽणादेयदुहगअजसूणा ।
परघूमासखगइसर दुगवज्जोहो सजोगिम्मि ॥५९॥
विउवे णिरयाउगगइ-हुंडणपुमणीअकुसरखगइजुओ ।
देवाणुपुव्विविजुओ, देवोहो पयडिछासीई ॥६०॥
मीसदुगूणा मिच्छे, चुलसीई सासणम्मि मिच्छूणा ।(गीतिः)
मीसे सम्मेऽसीई, अणं विण कमेण मीससम्मजुआ ॥६१॥
तम्मिस्से विउवोहो, परघूसासमरखगइदुगमीसा ।
विण गुणसीई मिच्छे, सम्मूणा अट्ठसयरीओ ।६२॥
सासाणम्मि दुसयरी, णिरयाउगआइपणगमिच्छूणा । (गीतिः)
सम्मे थीअणवज्जा, णिरयाउगआइपणगसम्मजुआ ॥६३॥
थीणद्धितिगउरलदुग-थीआगिइपणगसंघयणछक्कं ।
अपमत्था सरखगई, वज्जिअ छट्ठगुणठाणोहो ।६४॥
आहारकायजोगे, बासट्ठी तस्स मीसजोगम्मि ।
परघाऊसासखगइ-सरहीणा अट्ठवण्णाओ ॥६५॥
थीणद्धितिगं मीसं विउवुरलाहारदुगछसंघयणा ।
छागिइखगइसरायव-दुगपरघूमासउवघाया ॥६६॥
साहारणपत्तेआ, विण गुणणवई उ कम्मणे मिच्छे ।
सम्मजिणूणा मत्ता-सीई साणे इगासीई ॥६७॥
मिच्छणिरयतिगसुहमअ-पज्जूणा सम्मणिरयतिगजुत्ता ।
अणजाइचउगथावर-थी विण पंचसयरी सम्मे ॥६८॥

ओहो उरलदुगवइर-आगिइखगइसरणामपत्तेआ ।
परघूसासुवघाया, विण पणवीसा सजोगिम्मि ॥६९॥
वेअजुगलणारयतिग-थावरजाइचउगायवजिणूणा ।
सत्तजुअसयं पुरिसे, मिच्छे सम्माइचउवज्जा ॥७०॥
मिच्छत्तमोहवज्जा, दुसयं सासायणम्मि अणुपुव्वी ।
पढमकसाया य विणा, मीसजुआ छणवई मीसे ॥७१॥
मीसूणा णवणवई, सम्मम्मि तिआणुपुव्विसम्मजुआ ।
ओघव्व दुवेऊणा, देसाईसु गुणठाणेसुं ॥७२॥
थीअ पुमव्व णवरि विण, आहारदुगं कमोहछट्ठेसुं । (गीतिः)
पंचसयं सगसयरी, विणाऽणुपुव्वी य छणवई सम्मे ॥७३॥
सोलसजुअसयपयडी, णपुमे थीपुरिससुरतिगजिणूणा ।
मिच्छे दुवालससयं, सम्माहारदुगमीसूणा ॥७४॥
छजुअसयं मिच्छायव-नारयअणुपुव्विसुहमतिगवज्जा । (गीतिः)
बीए मीसे चउअण-जाइदुअणपुव्विथावरूणाऽत्थि ॥७५॥
मीससहिया छणवई, ससम्मणिरयाणुपुव्विमीसूणा ।
सम्मम्मि सत्तणवई, पणदेसाईसु पुरिसव्व ॥७६॥
कोहाईसुं चउसुं, ओघव्व दुदुइगचउगुणेसु कमा । (गीतिः)
बार णव छ ति कसाया, विण ओघव्व दसमे गुणे लोहे ॥७७॥
मणजोगव्व विभंगे, दोण्णि व तिण्णि व गुणा णवरि मिच्छे ।
णिरयसुरऽणुपुव्विजुआ, सासाणे सुरऽणुपुव्विजुआ ॥७८॥

परिहारे छट्ठे विण, थीआहारदुगपंचसंघयणा ।
छट्ठोहो अपमत्ते, सयरी थीणद्धितिगवज्जा ॥७९॥
चक्खुम्मि तिजाइसुहम-थावरसाहारणायवजिणूणा ।
चउदससयं दससयं, मिच्छे सम्माइचउवज्जं ॥८०॥
सासायणम्मि वज्जिअ, मिच्छापज्जणिरयाणुपुव्वीओ ।
सत्तजुअसयं दससु, मिस्साइगुणेसु ओघव्व ॥८१॥
ओघव्व कुलेसासु, सिद्धंतेऽण्णह ण किण्हणीलासु ।
दो अणुपुव्वी सम्मे, सुराणुपुव्वी ण काऊए ॥८२॥
एगारसयं आयव-तित्थविगलणिरयसुहमतिगहीणा ।
तेऊए सत्तसयं, मिच्छे सम्माइचउवज्जा ।८३॥
मिच्छूणा सासाणे, छजुअसयं मीसमोहसंजुत्ता ।
मीसे अडणवई विण, अणिगिंदियथावराणुपुव्वीहिं ॥८४॥(गीतिः)
सम्मम्मि मीसहीणा, सम्मतिरियणरसुराणुपुव्विजुआ ।
एगजुअसयं तीसु, देसाइगुणेसु ओघव्व ॥८५॥
पम्हाए णारगतिग-थावरजाइचउगायवजिणूणा ।
णवजुअसयं पणसयं, मिच्छे सम्माइचउवज्जं ॥८६॥
मिच्छूणा सासाणे, मीसाइगुणेसु पणसु तेउव्व ।
णवरि भवे सयमेगं, सम्मे तिरियाणुपुव्वी णो ॥८७॥
सुक्काए तुरिअगुणं, जा पम्हव्वऽत्थि णवरि होइ णवा ।
तिरियाणुपुव्विउदओ, ओघव्वेत्तो सजोगिं जा ॥८८॥

सम्माईसु असम्मं, ओघव्व ण वा पणंतसंघयणा ।
खइए देसे विण तिरि-गइआउज्जोअणीआणि ॥८९॥
ओघव्व उवसमे अड, अजयाई णवरि चउसु सम्मूणा ।
अजए ण तिअणुपुव्वी, आहारदुगं वि ण य छट्ठे ॥९०॥
सण्णिम्मि विण जिणायव-थावरसुहमचउजाइसाहारं ।
तेरससयं णवसयं, मिच्छे सम्माइचउवज्जं ॥९१॥
सासाणे छसयं विण, मिच्छापज्जणिरयाणुपुव्वीहिं ।
ओघव्व अत्थि दससुं, मिस्साईसु गुणठाणेसुं ॥९२॥
असणे जिणुच्चविउव्वदुगआहारदुगसम्ममीसूणा ।
अट्ठुत्तरसयमोहे, मिच्छे वि ण णरतिगं पणसयं वा ॥९३॥
सासाणे णवई विण, थीणद्धिणरतिगमिच्छमोहाणि ।
परघाऊसासायवसरखगइदुगसुहमतिगाणि ॥९४॥
ओघव्व आणुपुव्वी, विण आहारे भवे अणाहारे । (गीतिः)
कम्मव्व णवरि ओघव्व अजोगिम्मित्ति उदयसामित्तं ॥९५॥
उदयव्वुदीरणाए, सव्वह ओघव्व उण विसेसो वि ।
मुणिवीरसेहरथुअं, णमह णुदयुदीरणं वीरं ॥९६॥
सिरिपेमसूरिगुरुवर-रज्जे भूवा गहिंदुणह (२०१९) वासे ।
वीरां-ऽकमयजिणद्दे (२४८९), जावालपुरे समत्तमिमं ॥९७॥

इति

आचार्यश्रीविजयवीरशेखरसूरिरचितम्

उदयस्वामित्वं

समाप्तम्

॥ अथ तृतीयं परिशिष्टम् ॥

॥ श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्रीआतम-कमल-वीर-दान-प्रम-रामचन्द्र-हीरसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः

आचार्यश्रीविजयवीरशेखरसूरिरचितं

सत्तास्वामित्वम्

हयनिखिलकम्मसत्तं, सिरिवीरं वीरसेहरं सरिउं ।
कहिमु गुरुणिओगा जह सुत्तं पयडीसु सत्तसामित्तं ॥१॥(गीतिः)

सत्ता कम्माण ठिई, बंधाईलद्धअत्तलाभाणं ।
संते अडयालसयं, जा उवसमु विजिणु बिअतइए ॥२॥

अप्पुव्वाइचउक्के, अणतिरिनिरयाउ विणु बियालसयं ।
सम्माइचउसु सत्तग-खयम्मि इगचत्तसयमहवा ॥३॥

खवगं तु पप्प चउसु वि, पणयालं निरयतिरिसुराउविणा ।
सत्तग विणु अडतीसं जा अनियट्टीपढमभागो ॥४॥

थावरतिरिनिरियायव-दुगथीणतिगेगविगलसाहारं ।
सोलखय दुवीससयं, बीअंसि बिअतिकसायंतो ॥५॥

तइआइसु चउदसतेर बारछपणचउतिहियसयकमसो ।
नपुइत्थिहासछगपुंसतुरिअकोहमयमायखओ ॥६॥

सुहुमि दुसय लोहंतो, खीणदुचरिमेगसयदुनिद्दखओ ।
नवनवइ चरमसमये, चउदंसणनाणविग्घंतो ॥७॥

पणसीइ सजोगिअजोगिदुचरिमे देवखगइगंधदुगं ।
फासट्ठवन्नरसतणु-बंधणसंघायपणनिमिणं ॥८॥

संघयणअथिरसंठाणछक्कअगुरुलहुचउअपज्जत्तं ।
सायं व असायं वा, परित्तुवंगतिगसुसरनिअं ॥९॥
बिसयरिखओ अचरिमे, तेरस मणुअतसतिगजसाइज्जं ।
सुभगजिणुच्चपणिंदिय-सायासायेगयरछेओ ॥१०॥
नरअणुपुव्वि विणा वा, बारस चरिमसमयम्मि जो खविउं ।
पत्तो सिद्धिं देविंदवंदिअं नमह तं वीरं ॥११॥
इय उद्धरिओ ओहो, देविंदायरिअरइअकम्मथवा ।
अह भणिमु मग्गणासुं, पयडीणं संतसामित्तं ॥१२॥
णिरयेसु विण सुराउं, सगचत्तसयं तहाऽज्जतुरिएसुं ।
बीए बायालसयं, आहारचउक्कतित्थूणा ॥१३॥
आहारचउक्कजुआ, हवेज्ज मीसे छचत्तसयमेवं ।
पढमचउत्थगुणेसु वि, तीसुं तुरिआइणिरयेसुं ॥१४॥
जिणणरदेवाऊ विण, पणचत्तअहियसयं तमतमाए ।
एवं गुणेसु चउसु वि, परमाहारचउगं विणा बीए ॥१५॥
तिरिये पणिंदितिरिये, जिणं विणा सत्तचत्तसयमेवं ।
पंचसु वि गुणेसु परं, बीए आहारचउगूणा ॥१६॥
असमत्तपणिंदितिरिय-णरेसु विण तित्थणारगसुराऊ ।
पणयालीसजुअसयं, देवेसु विणा-ऽत्थि णिरयाऊ ॥१७॥
सगयालीसहियसयं, एवं तुरिए गुणम्मि तित्थूणा ।
छायालब्भहियसयं, आइमदुइअतइअगुणेसुं ॥१८॥

णिरयाउतित्थरहियं, छचत्तअहियसयमत्थि भवणतिगे। (गीतिः)
तह चउगुणेसु वि णवरि, सयमाहारचउगस्स बीअगुणे ॥१९॥
णिरयतिरियाउगूणा, गेविज्जं तेसु आणयाईसुं ।
छायालसयं एवं, तुरिए पढमाइतिगुणेसुं ॥२०॥
पणयालीसजुअसयं, तित्थूणाऽणुत्तरेसु तुरिअगुणे ।
आहारदुगे छट्ठे, तिरिणिरयाऊ विणा छचत्तसयं ॥२१॥
ओघव्व णरपणिंदिय-तसभवियेसु सयला गुणा तेर ।
दुमणवयणकायउरल-सुक्काहारेसु पढमा-ऽत्थि ॥२२॥
दुमणवयणयणअणयण-सण्णीसु हवेज्ज बारसगुणाऽज्ञा ।
दस लोहे चउ विउवा-ऽजएसु चउ छ व कुलेसासुं ॥२३।
बारसयं तेरसयं, जा पुमथीसु नवमे कमाऽज्ञाई ।
पणचउतिजुअसयं जा, कोहाइतिगे कमा णवमे ॥२४॥
णाणतिगे ओहिम्मि य, नव अजयाई उ वेअगे चउरो ।
केवलदुगे दुवेऽता-ऽज्ञा दो तिण्णि व अणाणतिगे ॥२५॥
होइ सठाणं देसे, सुहमे सासाणमीसमिच्छेसुं ।
अहखाए चरमचऊ, सत्तऽज्जा तेउपउमासुं ॥२६॥
णवरं तित्थयरं विण, सगचत्तालीससंजुयसयं तु ।
गुणठाणम्मि य पढमे, तीसु पसत्थासु लेसासुं ॥२७॥
एगिंदिविगलभूदग-वणेसु विण तित्थणारगसुराऊ ।
पणयालसयं बीए, णराउआहारचउगूणा ॥२८।

चउआलीससयं जिण-तिआउहीणाऽत्थि तेउवाऊसुं ।
णिरयामराउगूणा, छायालसयं उरलमीसे ॥२९॥
एमेव चउत्थे विण, तित्थं पढमतइएसु सासाणे ।
तित्थाहारचउक्कं, विणा सजोगिम्मि ओघव्व ॥३०॥
छायालसयं विक्किय-मीसे विण तिरिणराउगं एवं ।
पढमचउत्थे बीए, चउचत्तसयं अतित्थणिरयाऊ ॥३१॥ (गीतिः)
कम्मे सव्वा एवं, पढमचउत्थेसु तित्थणिरयाऊ ।
विण छायालहियसयं, बीए ओघव्व तेरसमे ॥३२॥
णपुमे अडतीससयं, जा ओघव्व गुणठाणणवगम्मि ।
ताउ खवगसेढीए, गुणठाणे अट्ठमे णवमे ॥३३॥
णेया सगतीससयं, विण तित्थयरं तओऽत्थि णवमगुणे ।
ओघव्विगवीससयं, तेरसयं च विण तित्थयरं ॥३४॥
ओघव्व पमत्ताई, सत्त उ मणपज्जवम्मि अत्थि परं ।
अडयालसयट्ठाणे, तिरिणिरयाऊ विणा छचत्तसयं ॥३५॥(गीतिः)
ओहव्व उपमत्ताई, समइअछेएसु तुरिअणाणव्व ।
दो परिहारे अभवे, तित्थाहारचउसम्ममीसूणा ॥३६॥
खइए इगचत्तसयं, विण दंसणसत्तगं चउसु एवं ।
तुरियाईसुं केइ उ, देसाइतिगे विणाउदुगं ॥३७॥
गुणचत्तसयं अट्ठम-गुणाइचउगेऽट्ठमे गुणे णवमे ।
अडतीससया इत्तो, जाव अजोगिगुणमोघव्व ॥३८॥

अजयाईसु अट्ठसु, गुणेसु खलु उवसमम्मि ओघव्व ।
णवरिं णवमदसमेसु, बावीससयाइवज्जाओ ॥३९॥

अमणे सगचत्तसयं, विणा जिणं एवमेव मिच्छगुणे ।
साणे चत्तहियसयं, तिआउआहारचउगूणा ॥४०॥

कम्मव्व अणाहारे, ओघव्व चउदसमेऽत्थि वीरपहुं ।
मुणिवीरसेहरथुअं, णमह हयासेसकम्मरयसत्तं ॥४१॥(गीतिः)

सिरिपेमसूरिगुरुवर-रज्जे भूवा गहिंदुनह (२०१९) वासे ।
वीरां-ऽकमयजिणद्दे (२४८९), जावालपुरे समत्तमिणं ॥४२॥

इति

आचार्यश्रीविजयवीरशेखरसूरिरचितं

सत्तास्वामित्वं

समाप्तम्

अर्वाचीन कर्मसाहित्य

				राजसं.	राजाधिराजसं.
बंधविहाणं	प्रथमखण्डे भा.	१	मूलपयडिबंधो	रु० ३०	रु० ४०
,, ,,	,, ,, ,,	२	उत्तर ,, ,, (१)	,, २५	,, ३०
,, ,,	,, ,, ,,	३	,, ,, ,, (२)	,, —	,, ४०
,, ,,	,, ,, ,,	४	,, ,, ,, (३)	,, ३०	,, ४०
,, ,,	द्वितीय ,, ,,	१	मूल ,, ठिईबंधो	,, २१	,, —
,, ,,	,, ,, ,,	२	उत्तर ,, ,, (१)	,, २५	,, ३०
,, ,,	,, ,, ,,	३	,, ,, ,, (२)	,, ८०	,, १००
,, ,,	तृतीय ,, ,,	१	मूल ,, रस ,,	,, २५	,, ३०
,, ,,	,, ,, ,,	२	उत्तर ,, ,, ,, (१)	,, २५	,, ३०
,, ,,	,, ,, ,,	३	,, ,, ,, ,, (२)	,, ३५	,, ४०
,, ,,	चतुर्थ ,, ,,	१	मूल ,, पएस ,,	,, ३५	,, ४०
,, ,,	,, ,, ,,	२	उत्तर ,, ,, ,, (१)	,, ३०	,, ४०
,, ,,	,, ,, ,,	३	,, ,, ,, ,, (२)	,, ३०	,, ४०
,, ,,	,, ,, ,,	४	पसत्थो (पूर्वार्धः)	,, ३०	,, ४०
,, ,,	,, ,, ,,	५	,, (उत्तरार्धः)	,, ३०	,, ४०
सत्ता ,,	प्रथम ,, ,,	१	मूलपयडिसत्ता (सम्पूर्णा)	,, १५०	,, १९०
,, ,,	,, ,, ,,	१	,, ,, ,, (पूर्वार्धः)	,, ७०	,, ९०
,, ,,	,, ,, ,,	१	,, ,, ,, (उत्तरार्धः)	,, ९५	,, १२०
,, ,,	,, ,, ,,	१	,, ,, ,, (आद्यतृतीयांशः)	,, ६०	,, ८०
,, ,,	,, ,, ,,	२	उत्तर ,, ,, (पूर्वार्धः)	,, १६०	,, २००